अंक 05

ज्योतिष की राष्ट्रीय मासिक पत्रिका | सम्पादक : के. एम. सिन्हा (ज्योतिषाचार्य)

Kundali expert For Better Future

ज्योतिष विज्ञान

जनवरी 2021

वर्षफल 2021

मूल्य 35 रूपये

कैसा होगा 2021 का भारत

- मकर संक्रान्ति का ज्योतिषीय महत्व
- मृगशिरा नक्षत्र
- मीन लग्न और लक्ष्मी योग
- करण और उसके प्रकार
- वृश्चिक राशि
- अनुराधा नक्षत्र
- अंक ज्योतिषी भाग 2

happy sakranti

- नवग्रहों का कारकत्व
- गृह मुहूर्त विचार
- विशाखा नक्षत्र
- ज्येष्ठा नक्षत्र

ज्योतिषाचार्य
के.एम.सिन्हा

"जीवन की लड़ाईयाँ सदैव मजबूत और परिश्रमी लोग नहीं जीता करतें जीतता आज नही तो कल वहीं है, जिसे यकीन है की "वो जितेगा

पंचम्
संस्करण
Jan 2021

Publisher
KM ASTROGURU PVT. LTD,
B-1, 101, Block-E, Classic
Residency Apartment, Raj
Nagar Extenion, Ghazibad

Printed & Designed By
LB Web & Graphic Designer
Medical College, Gorakhpur

For ADS & Marketing
Please Contact
krishna@Kundaliexpert.com
info@Kundaliexpert.com
Mobile : 9818318303
Landline No:. 0120-4732013

रासायनिक प्रवक्ता के रूप में करियर शुरू करने वाले, आज श्री के. एम. सिन्हा न केवल भारत में बल्कि दुनिया के कई अन्य हिस्सों में एक प्रसिद्ध वैदिक ज्योतिषी और कुंडली विशेषज्ञ है। वह कुछ राजनीतिक घटनाओं के बारे मे सटीक भविष्यवाणियाँ करने के लिए भी जाने जाते हैं। कुंडली एक्सपर्ट की अपनी मुख्य शाखा गाजियाबाद में स्थित है। उनकी भविष्यवाणी वैदिक ज्योतिष पर आधारित है जहां वे कुंडली या उसके द्वारा प्रदान किए गए समय, स्थान और तिथि के आधार पर विभिन्न ग्रहों की स्थिति का अध्ययन करते है। वह लोगों को उनकी समस्याओं को दूर करने और रोकने के उपाय भी बताते है।

ज्योतिषीय नियमों को गणितीय मॉडल मे अनुवाद करके उनके द्वारा ज्योतिषीय भविष्यवाणियाँ भी की गई है। एक ज्योतिषी बनने के अपने सपने को पूरा करने और आगे बढ़ने के लिए श्री के. एम. सिन्हा ने रसायन विज्ञान कोचिंग कक्षाएं प्रदान करना शुरू किया। ज्योतिष को आगे बढ़ाने के लिए अपने जीवन के 15 वर्षो को समर्पित किया और ज्योतिषीय सिद्धांतों का अध्ययन, विश्लेषण और समझना शुरू किया। ज्ञान प्राप्त करने की इस यात्रा ने अब उन्हें एक ज्योतिषी में बदल दिया है और पिछले 5-6 वर्षो से वह पेशेवर रूप से ज्योतिष का कार्य कर रहे हैं।

उनके अनुसार ज्योतिष एक विज्ञान है , जो विभिन्न ग्रहों की स्थिति के सिद्धांतों पर काम करता है। अलग-अलग घरों में विभिन्न ग्रहों की स्थिति लोगों के जीवन में बहुत प्रभावशाली भूमिका निभाती है। सटीक पूर्वानुमान प्राप्त करने के लिए जन्म समय, जन्म स्थान और जन्म तिथि के बारे में सही जानकारी होना बहुत महत्वपूर्ण है।

के.एम.सिन्हा, के अनुसार जन्म का समय, जन्म का तारीख और जन्म का स्थान प्रदान करके बनाई गई कुंडली बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि कुंडली किसी भी ज्योतिषीय भविष्यवाणियों को बनाने का आधार है। जन्म कुंडली में 12 घर होते हैं, जो जीवन के विभिन्न पहलुओं को नियंत्रित करते हैं। तारों की स्थिति, ग्रहों की स्थिति जन्म तारीख, स्थान और समय के अनुसार इन घरों में बदलते रहती है जो लोगो के जीवन में विभिन्न प्रभाव डालती है।

ज्योतिषीय भविष्यवाणियों से जो लाभ प्राप्त हो सकता है, वह यह है कि लोगो के उनके जीवन के कठिन समय से अवगत कराया जा सकता है , उनके समस्याओं का समाधान और उपायों को बताया जा सकता है। इसके अलावा, कोई कैसे अच्छे समय का पूरा उपयोग कर सकता है और इसे अपने पक्ष में कर सकता है इस बात पर भी जोर दिया जाता है।

मुख्य रूप से गाजियाबाद में स्थित, दिल्ली में सर्वश्रेष्ठ ज्योतिषी के.एम.सिन्हा एक प्रसिद्ध कुंडली विशेषज्ञ है और उन्होने कई व्यक्तिगत और राजनीतिक भविष्यवाणियां सटीक रूप से किया है । व्यक्तिगत जीवन, पेशा, करियर से सम्बंधित या स्वास्थ्य आदि से सम्बंधित कोई भी समस्या हो, परामर्श कर सकता है। और विशेषज्ञ से सलाह ले सकता है। वह हस्तरेखा विज्ञान और अंक शास्त्र के माध्यम से भी भविष्यवाणियाँ करते है। एक कुडली चार्ट तैयार कर कुंडली का विश्लेषण कर भविष्यवाणी तथा उपायों को कुंडली विशेषज्ञ द्वारा नाममात्र राशि पर प्रदान की जाती है। यह नाममात्र शुल्क एक वर्ष के लिए वैध है और कोई भी वर्ष के दौरान कभी भी ज्योतिषीय सलाह ले सकता है ।

ज्योतिष विज्ञान के इस तृतीय संस्करण में पूरी कोशिश की गई है कोई कमी ना रहें फिर भी यदि कोई त्रुटि पाठक के जानकारी में आती है तो अपने सुझाव info@kundaliexpert.com पर भेज सकते है । आप सभी का बहुत आभार ।

विषय सूची

मकर संक्रान्ति का ज्योतिषीय महत्व .....(4-5)

मृगशिरा नक्षत्र.....(5-12)

अंक ज्योतिष भाग 2.....(12)

मीन लग्न और लक्ष्मी योग .....(13-31)

नवग्रहों का कारकत्व.....(31-33)

करण और उसके प्रकार .....(34-36)

गृह मुहूर्त विचार .....(37-43)

वृश्चिक राशि.....(44)

विशाखा नक्षत्र.....(44)

अनुराधा नक्षत्र .....(45)

ज्येष्ठा नक्षत्र .....(46-47)

कैसा होगा 2021 का भारत .....(48-53)

© All Right Reserved to KM ASTROGURU PVT. LTD.

All rights reserved. Full or No part of this book may be reproduced in any form by an electronic or mechanical means, including any information storage and retrieval systems, without the permission in writing from the publisher.

WHY SHOULD YOU MUST CONSULT WITH

ASTROLOGER KM SINHA

ASTROLOGER
KM SINHA

CONSULTATION TYPE

IT'S
KM ASTROGURU
PVT.LTD.

1 or 2 Questions Fee = 3100 + S.T.	Full Analysis Fee = 5100 + S.T.
KUNDALI PDF ✓	KUNDALI PDF ✓
3 FOLLOWUP ✓	3 FOLLOWUP ✓
CUSTOMIZED LIFE REPORT ✓	CUSTOMIZED LIFE REPORT ✓
JYOTISH VIGYAN ✓	JYOTISH VIGYAN ✓
CUSTOMIZED DAILY HOROSCOPE ✓	CUSTOMIZED DAILY HOROSCOPE ✓
CUSTOMIZED WEEKLY HOROSCOPE ✗	CUSTOMIZED WEEKLY HOROSCOPE ✓
CUSTOMIZED MONTHLY HOROSCOPE ✗	CUSTOMIZED MONTHLY HOROSCOPE ✓
CUSTOMIZED RASHI PARIVARTAN ✗	CUSTOMIZED RASHI PARIVARTAN ✓
FULL MOBILE ACCESS ✗	FULL MOBILE ACCESS ✓

मकर संक्रान्ति का ज्योतिषीय महत्व

मकर संक्रान्ति

जैसा की हम सभी जानतें है। की मकर संक्रान्ति का त्योहार हर वर्ष जनवरी के महीने में आता है। अत: लोहड़ी और मकर संक्रान्ति का पर्व अक्सर लगातार 13 और 14 जनवरी को पड़ता है। लेकिन इस बार यह तारीख बदलकर 13 जनवरी को लोहड़ी और 15 जनवरी को पड़ गई है। ऐसा इसलिए हुआ है । क्योंकि ज्योतिषी गणना के अनुसार इस बार सूर्य का मकर राशि में प्रवेश 14 जनवरी की रात 02:07 बजे हुआ है, इसलिए ज्योतिष शास्त्र के अनुसार मकर संक्रान्ति 15 जनवरी को मनाई जाएगी। अत: अब आपको यह समझ आ गया होगा की संक्रान्ति का पर्व 15 जनवरी को किस कारण से पड़ा।

मकर संक्रन्ति का ज्योतिषीय महत्व

ज्योतिषीय मान्याताओं के अनुसार यह माना जाता है कि इस मकर संक्रान्ति के दिन सूर्यदेव अपने पुत्र शनिदेव से नाराजगी भूलाकर उनके घर मिलने गए थे। और धार्मिक मान्याताओं के अनुसार हम देखे तो इस दिन पवित्र नदी में स्नान करने, दान करनें, और पूजा–पाठ करने से व्यक्ति का पुण्य किया हुआ प्रभाव हजार गुना बढ़ जाता है। इस दिन से मलमास खत्म होने के साथ शुभ माह प्रारम्भ हो जाता है। मकर संक्रान्ति के इस खास दिन को सुख और समृद्धि का दिन माना जाता है। मकर संक्रान्ति फसल और त्योहार का न केवल धार्मिक महत्व रखता है। बल्कि कुछ दृष्टि से वैज्ञानिक महत्व भी रखता है। सकारात्मक विकास के लिए इस धरती पर बहुत ही सकारात्मक प्रभाव है। मकर संक्रान्ति वह दिन है जब सूर्य मकर राशि के उष्णकटिबंधीय और उत्तरी गोलार्द्ध की और बढ़ता है। शेष बचे हुए 6 महीनों को दक्षिणायन कहा जाता है। जिसका अर्थ है। सूर्य ग्रह का दक्षिण दिशा में जाना। इस दिन हर किसी के निजी जीवन पर एक महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। संक्रान्ति के सभी अनुष्ठान उसी दिन सूर्योदय के बाद किया जाना चाहिए और दोपहर होनें से पहले उसे पूरा किया जाना चाहिए। शास्त्रों के अनुसार इस दिन स्नान करनें, सूर्य देवता को जल चढ़ानें, अकेले बैठने और पिछले 6 महीने से आपके दिमाग और शरीर को परेशान करने के बारे में ध्यान देने का यह सबसे अच्छा समय कहलाता है। तथा शांतिपूर्ण जगह बिताने और गायत्री मंत्र को चुप्पी में पढ़ने का यह सबसे अच्छा समय भी है।

क्या है मकर संक्रान्ति

मकर संक्रान्ति में 'मकर' शब्द देखा जाए तो मकर राशि को इंगित करता है।, जबकि संक्रन्ति का अर्थ संक्रमण अर्थात् प्रवेश करना है। मकर संक्रन्ति के दिन सूर्य धनु राशि से मकर राशि में प्रवेश करता है। अर्थात् एक राशि को छोड़कर दूसरे राशि में प्रवेश करने की इस विस्थापना क्रिया को संक्रान्ति कहा जाता है। और ज्योतिषीय गणना के अनुसार ही मकर संक्रान्ति से ही सूर्य उत्तरायण होने शुरू करतें है। इसी दिन लोग प्रात: नदी में स्नान करने के बाद

अग्निदेव व सूर्यदेव की पूजा करतें है।, उसके बाद तिल के लड्डू, खिचड़ी और पकवानों की मिठास के साथ मकर संक्रान्ति का पर्व मनातें हे। सबसे बड़ी मान्यता इस दिन पतंगबाजी करने की भी है। और इस दिन गुजरात और दिल्ली समेत कई जगहों पर लोग पतंगबाजी भी करतें हे। वहीं अगर बात करें दक्षिण भारत की तो दक्षिण भारत के तमिलनाडु एवं केरल में इसे पोंगल के रूप में मनातें है। ओर बता दे पोंगल 2021 का पर्व 15 जनवरी को शुरू होगा जो कि 18 जनवरी तक चलेगा। पोंगल का पर्व विशेष रूप से नई फसल आनें की खुशी में मनाया जाता है।

मकर संक्रान्ति का इतिहास

पौराणिक कथाओं के अनुसार मकर संक्रान्ति को लेकर बहुत सारी मान्यताएँ है। जिनमें से एक मान्यता यह है। कि कहा जाता है। की मकर संक्रान्ति के दिन गंगा जी भागीरथी के पीछे–पीछे चलकर कपिल मुनि के आश्रम से होते हुए सागर में जा मिली थी इसीलिए आज के दिन गंगा स्नान का विशेष महत्व होता है। मकर संक्रान्ति को एक तरह से मौसम के बदलाव का सूचक भी माना जाता है। इसी दिन से वातावरण में कुछ गर्मी आने लगती है। और फिर बसंत ऋतु के बाद ही ग्रीष्म ऋतु का आगमन होता है। और दूसरी मान्यता यह है कि इस दिन भगवान भास्कर अपने पुत्र शनि से मिलने स्वयं उसके घर जातें है। चूंकि शनि देव मकर राशि के स्वामी है।, अत: इस दिन को मकर संक्रान्ति के नाम से जाना जाता है। शास्त्रों के अनुसार, देवताओं के दिन की गणना इस दिन से ही प्रारम्भ होती है। सूर्य जब दक्षिणायन में रहतें है। तो उस अवधि को देवतओं की रात्रि व उत्तरायण के छ: माह को दिन कहा जाता है। दक्षिणायन को नकारात्मकता का प्रतीक तथा उत्तरायण को सकारात्मकता का प्रतीक माना जाता है। अत: भगवद् गीता के अध्याय 8 में भगवान कृष्ण कहतें है। कि उत्तरायण के छ: महीने में देह व्याग करनें वाले ब्रह्म गति को प्राप्त होतें है। जबकि दक्षिणायन के छ: माह में देह त्याग करने वालें संसार में वापिस आकर जन्म और मृत्यु को प्राप्त होते है। यही कारण था कि भीष्म पितामह महाभारत युद्ध समाप्ति के बाद मकर संक्रान्ति की प्रतीक्षा में अपने प्राणों को रोक कर अपार वेदना सह कर अपने इतिहास का प्रचीन समय से ही काफी ज्यादा महत्व देखने को मिलता है।

मकर संक्रान्ति का शुभ मुहूर्त

मकर संक्रान्ति– 15 जनवरी 2021
संक्रान्ति काल– 07:19 बजे (15 जनवरी) पुण्यकाल– 07:19 से 12:31 बजे तक महापुण्य काल– 07:19 से 09:03 बजे तक संक्रान्ति स्नान– प्रात काल, 15 जनवरी 2021

मृगशिरा नक्षत्र

(मृगशिरा,हिरण का मुख) (23°20' वृषभ राशि से 6°40' मिथुन राशि तक)

मृगशिरा नक्षत्र के ऊपर अधिकार स्थापित करने वाला ग्रह मंगल ग्रह को माना जाता है। मृगशिरा नक्षत्र के पहले दो चरण वृषभ राशि में स्थित होतें है।, और शेष बचे हुए दितीय चरण मिथुन राशि में स्थित होतें है। इस पाँचवें राशिचक्र में 53.20 डिग्री से 66.44 डिग्री के विस्तार का कक्षा क्षेत्र मार्गशीर्ष नक्षत्र है जिसके कारण इस मृगशिरा नक्षत्र पर वृषभ राशि तथा इसके स्वामी ग्रह शुक्र एवं मिथुन राशि तथा इसके स्वामी ग्रह बुध का प्रभाव भी रहता शुक्र का प्रभाव जीवन भर बना रहता है। मृगशिरा को अंग्रेजी में ओरियन भी कहतें है, अत: यह मृग के सिर के आकार का होता है। तथा तीन तारों का यह समूह भी है। 'मृगशिरा' का तात्पर्य 'हिरण के सिर' से है और यह नारियल की आंख के समान भी दिखता है।

मृगशिरा नक्षत्र में जन्मे पुरूष जातकों का सामान्य परिणाम

पुरूष जातक

मृगशिरा नक्षत्र में जन्म लेने वाले जातक अत्यधिक सुन्दर, लम्बा कद मध्य श्रेणी का रंग रूप, पतली टाँगे व लम्बी भुजाओं वाला होता है। इस नक्षत्र का व्यक्ति अत्यधिक शक्की स्वभाव का होता है। ऐसा व्याक्ति हर चीज पर श करता है। यह ऐसे व्यक्ति होते है। जो दूसरों से सद्भाव पूर्ण व्यवहार निभातें है। और जो व्यवहार वह दूसरों से निभातें है। वही व्यवहार वह खुद के लिए भी चाहतें है। परन्तु ऐसा होता नहीं है। इनका स्वभाव ऐसा है कि यह दूसरों पर आँख मूंद कर विश्वास कर लेते है। और बाद में धोखा खाने से इनको पछतावा होता है। यदि कोई व्यक्ति इनसे बुरा बर्ताव करता है तो उससे निपटने का ढ़ंग उन्हे आता है। ऐसा व्यक्ति अत्यधिक सीधा–साधा व्यक्ति होता है। वह अपनी इच्छानुसार ही जीवनयापन करता है। इस नक्षत्र का व्यक्ति बहुत साहसी होता हे। तथा किसी भी साहसिक कार्य को करने को प्रकट करता है। जबकि ऐसा व्यक्ति जन्म से ही कायर होता है। मृगशिरा नक्षत्र के व्यक्ति को मानसिक शान्ति नहीं मिलती है। वह छोटी–छोटी बातों पर हमेशा क्रोधित हो जाता है। ऐसे नक्षत्र वालें व्यक्ति 32 वर्ष की आयु तक इनका जीवन गलतियों और चुनौतियों से भरा होता है। तथा इनका मन तुफान में फँसी हुई नौका की भाँति उसका मन भटकता

रहेगा। 32 वर्ष की अवस्था के बाद, यदि दूसरी ग्रह की स्थिति अनुकूल हों तो, उसके जीवन में स्थिरता व संतोष की स्थिति आ जायेगी। मृगशिरा नक्षत्र के लोगों की शिक्षा की बात करें तो इनकी शिक्षा काफी अच्छी रहेगी। वह दूसरों को मितव्ययता की सलाह देगा लेकिन स्वयं अपने खर्चो पर नियन्त्रण नहीं रख पायेगा। ऐसे व्यक्ति को 32 वर्ष की आयु तक उतार–चढ़ाव का सामना करना पड़ेगा तथा संघर्ष कर लेने के बाद उसे उनके व्यवसाय/रोजगार तथा जीवन में सफलता मिलेगी। वह जिस कार्य को लम्बे समय से कर रहा है। उसे कार्यो को बीच में ही छोड़कर प्राय: नये कार्यो को शुरू कर देता है। कुछ–कुछ मामलों में यह देखा गया है। कि जातक किसी कार्य को करने में सक्षम तो होता है।, परन्तु ईश्वर कि कुछ और ही इच्छा होने के कारण वह व्यक्ति असफलता की ओर चला जाता है। और यह सब केवल उसके नक्षत्रों में उत्पन्न दोष होते है। 33 से 50 वर्ष की आयु का समय उसके लिए शुभ होगा। वह किसी भी कार्यो को सफलतापूर्वक करेगा। जिस काम में उसे लाभ ही मिलेगा। लेकिन इस समय में वह जो कुछ भी अर्जित करेगा। वह सब अपनी किसी भूल के कारण गँवा देगा।

पारिवारिक जीवन

इस नक्षत्र वाले जातक अपने परिवार वालों के लिए केवल परेशानी या विपत्ति उत्पन्न नहीं करतें हे। बल्कि यह ऐसे लोगों को हानि पहुँचातें है। जिससे इनको कोई दुश्मनी होती है। अत: उसका निश्चित प्रेम व स्नेह उसके परिवारजनों पर कोई प्रभाव नही डालता है। इस जातक के जीवन साथी का स्वास्थ्य उतना अच्छा नहीं होगा। इससे अधिक उसका वैवाहिक जीवन सौन्दर्य नहीं होगा। उनमें छोटी–छोटी बातों पर तथा जातक के कड़े स्वभाव के कारण ऐसा व्यक्ति स्नेह तथा सौहार्द से दूर होगा। कभी–कभी ऐसा भी देखा गया है। कि दम्पत्ति में इस मन मुटाव का कारण उनकी श्रेष्ठता या वरियता प्राप्त करने से भी उत्पन्न हुआ है। इस झगड़े तथा मनमुटाव को दूर करनें के लिए जातक की पति या पत्नी को मंगलवार का व्रत रखना चाहिए और इन लोगों को शिव जी की पूजा भी करनी चाहिए। (जातक अगर पुरूष हो तो उसको अपनी पत्नी के लिए अगर स्त्री हो तो उसको अपने पति के लिए व्रत रखना चाहिए।

स्वास्थ्य

इस नक्षत्र वाले लोगों का बचपन में स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा। यह बार–बार की कब्ज से परेशान तथा पेट की बिमारी, से परेशान रहेगा तथा चोट–चपेट, और गले की हड्डी के पास कन्धों में दर्द का संकट भी रहेगा।

स्त्री जातक

इस नक्षत्र वाले स्त्री जातक की बात करे तों उनका शरीर लम्बा–छरहरा, तीक्ष्ण नाक–नक्शा व बहुत ही सुन्दर शरीर की होगी। वह अत्यन्त ही बुद्धिमान होगी तथा सामाजिक कार्यों में रूचि लेने वाली होगी। एसी स्त्रियां अपनी तेज तीखी जुबान के कारण उसे दूसरों से बहस करते हुए अथवा लड़ते हुए अपशब्द कहते समय यह ध्यान रखना चाहिए। कि उसके कहे गये शब्द दूसरों के लिए नुकसान देह ना हों। अर्थात क्रोध में की गयी बात या श्राप इस स्त्री जातक का लग जाता है। इस नक्षत्र की स्त्रियां शिक्षित तथा कला की पुजारिन होगी। उसके संतान होगी तथा वह पति को समर्पित होगी। ऐसी स्त्रियाँ बहुत धनवान होंगी तथा इनका रहन–सहन काफी अच्छा रहेगा, ऐसी स्त्रियाँ वस्त्राभूषण व खान–पान के मामले में भाग्यशाली होगी। तथा वह धन के प्रति लालची प्रवृति की होगी। इन नक्षत्र की स्त्रियाँ मैकेनिकल या इलैक्ट्रीकल या इंजीनियरींग, टेलीफोन, बिजली के उपकरणों आदि कार्यों में अच्छा ज्ञान प्राप्त करेंगी। अत: यह एक तरह से अचरज वाली बात होती है। कि स्त्री होतें हुए भी वह पुरूषों वाले कार्य अथवा व्यवसाय में रूचि लेगी। एसी स्त्रियाँ विवाह के बाद भी वह विभिन्न कार्यों में व्यस्त रहेगी। पति उसके नियंत्रण में होगा। इनके जीवन में अगर कोई प्रेम प्रसंग होगें तो यह विवाह तक नहीं पहुँच पायेंगे। लेकिन विवाह के बाद वह पूरी तरह से अपने पति को ही समर्पित होंगी। इनके जीवन में हुए पूर्व घटनाओं का उस स्त्री पर कोई असर नहीं होगा। इस नक्षत्र वाली स्त्रियों को पूर्व फाल्गुनी नक्षत्र में उत्पन्न जातक से विवाह नहीं करना चाहिए। यदि ऐसा कभी होता है। तो उस स्त्री के पति की जल्दी मृत्यु का खतरा होता है।

स्वास्थ्य

समय–समय पर स्वास्थ्य समस्याएं ऐसी स्त्रियों को उत्पन्न होती रहती है। इस नक्षत्र की स्त्रियों कों गलण्ड, फुसिंयाँ, यौन, रोग, मासिक ऋतुश्राव के लक्षण प्रकट हों तो ऐसी स्त्री धर्मात्मा, पतिभक्ता या पतिव्रता होगी।

मार्गशीर्ष नक्षत्र में ग्रहों की स्थिति के परिणाम

इस नक्षत्र में स्थित सूर्य पर चन्द्रमा की दृष्टि हो तो जातक के सम्पर्क में कई स्त्रियाँ होगी। ऐसी जातक हर प्रकार के जलीय उद्योग या व्यवसायों द्वारा आमदनी करतें हे। यदि इस नक्षत्र वाले जातक पर मंगल ग्रह की दृष्टि हो तो ऐसा जातक वीर होगा तथा अपनी वीरता से ही सम्पत्ति अर्जित करने वाला होगा। यदि इन पर बुध की दृष्टि पड़ती है। तो ऐसा जातक अच्छे ,

शारीरिक गठन का होगा तथा लेखक होगा। यदि इनकी कुण्डली में वृहस्पति की दृष्टि हो तो जातक शासक वर्ग के सम्पर्क में होगा तथा उससे वह काफी धन प्राप्त करने वाला होगा। यदि इनके ऊपर शुक्र की दृष्टि हो तो इनको राजनीतिक कार्यों में उच्च पद पर दर्जा मिलेगा। तथा ऐसा जातक पत्नीसंतान तथा धन दौलत से सम्पन्न होगा। इस नक्षत्र पर यदि सूर्य पर शनि की दृष्टि हो तो जातक अत्यधिक नीच प्रवृत्ति का होता है तथा ऐसे जातकों को अपने से बड़ी आयु की स्त्रियों से यौन सम्बन्ध रखतें होंगे।

प्रथम भाग (53.20 डिग्री से 56.40 डिग्री)

मृगशिरा नक्षत्र के प्रथम भाग में जन्म लेने वाले जातक को सुगन्धित पुष्पों का शौक होगा। ऐसा जातक बुद्धिमान होता है। यह एक तरह से आकर्षक व्यक्तित्व का तथा भाग्यवान होता है। ऐसे व्यक्तियों के कुछ ही पुत्र होंगे। तथा उसे मुख चेहरे तथा आँखों की बीमारियों का संकेत होता है।

द्वितीय भाग (56.40 डिग्री से 60.00 डिग्री)

इस नक्षत्र में जन्म लेने वालें व्यक्ति अच्छे पहनावे वाले, अच्छे चेहरे वाले तेजस्वी व्यक्तित्व वालें और गाने–बजाने के शौकीन होते है।

ऐसे व्यक्ति पानी से डरने वाले होतें है। 27 वर्ष की आयु में ऐसे जातकों का विवाह होने के योग बनतें है। तथा इनके आँखों में भी कई सारी दिक्कतों परेशानियाँ रहती है।

तृतीय भाग (60.00 डिग्री से 63.20 डिग्री)

इस नक्षत्र में जन्म लेने वालें व्यक्ति आर्थिक तथा वित्तीय सलाहकार के रूप में एक योग्य एवं अच्छी स्थिति प्राप्त करेगा। लोगों के सम्पर्क से कार्यो के लिए निपुण उसका एक पुत्र किसी वैज्ञानिक शोध के क्षेत्र में अच्छी श्रेष्ठता प्राप्त करेगा। तथा इस चरण वाले व्यक्ति नाक की बीमारी से हमेशा परेशान रहेंगे।

चतुर्थ भाग (63.20 डिग्री से 66.40 डिग्री)

इस नक्षत्र के चतुर्थ भाग में जन्म लेने वालें जातक जन सेवा करने पर अत्यधिक ध्यान देगा। यदि इस खण्ड में बुध गृह स्थित हो और चन्द्रमा प्रथम भाग में हो तो ऐसा व्यक्ति विद्वान, मृदुभाषी, सम्मानित तथा निपुण ज्योतिषी होगां उसे टॉन्सिल अथवा गले की बीमारियों से भी ऐसे जातक को परेशान रहना पड़ेगा।

चन्द्रमा

मृगशिरा नक्षत्र में स्थित चन्द्रमा पर यदि सूर्य की दृष्टि हो तो ऐसा जातक कृषि पर निर्भर होगा तथा यह अत्यधिक धनी होते है। और यह साहूकार होतें हे। यदि चन्द्रमा पर मंगल की दृष्टि हो तो अन्या स्त्रियों के कारण पहली पत्नी से इनका सम्बन्ध विच्छेद होता रहता है। तथा यह विच्छेद माता के लिए खतरे का कारण होगा। यदि चन्द्रमा पर बुध की दृष्टि हो तो जातक अति शिक्षित तथा सर्वप्रिय होगा। इस नक्षत्र पर यदि चन्द्रमा पर वृहस्पति की दृष्टि हो तो वह पत्नी, संतान तथा धन सम्पत्ति के साथ अपनें जीवन का सुख भोगेगा तथा यह बहुत ही प्रसिद्ध होगा। यदि इस चन्द्रमा पर शुक्र की दृष्टि हो तो माता से ऐसा व्यक्ति विरासत में सम्पत्ति प्राप्त होगी तथा यह सुखीपूर्वक अपना दिन बितायेगा। यदि चन्द्रमा पर शनि की दृष्टि हो तो ऐसा जातक धनहीन होगा, अपनी माता की लम्बी आयु के लिए यह बाधन होगा तथा उसकी आज्ञाकारी संतान भी होगी।

प्रथम भाग (53.20 डिग्री से 56.40 डिग्री)

इस नक्षत्र के प्रथम भाग में जन्म लेने वाले जातक अत्यधिक बुद्धिमान और प्रसिद्ध होगा। उसके पुत्रियाँ अधिक होंगी। ऐसे जातक की पत्नीयाँ सुन्दर एवं पतिव्रता होंगी जिससें की धन तथा राजनीति में प्रसिद्धि की प्राप्ति होगी। ऐसे जातको को जोड़ों के दर्द तथा दुखती आँखों की पीड़ा का संकेत होगा।

द्वितीय भाग (56.40 डिग्री से 60.00 डिग्री)

चन्द्रंमा के द्वितीय भाग में जन्म लेने वालें जातक धनाड्डय तथा विशिष्ठ परिवार में होगा। ऐसा व्यक्ति छोटी आयु में विवाह करेगा तथा इनका जीवन सुखी होगा। तथा ऐसे जातकों को फेफड़ों तथा दिल की समस्याओं का संकेत होगा।

तृतीय भाग (60.00 डिग्री से 63.20 डिग्री)

चन्द्रमा के तृतीय भाग में जन्म लेने वालें जातक हमेशा प्रसिद्धि को प्राप्त करतें है परन्तु इनकी आमदनी कम होती है। वह बचपन से ही विभिन्न समस्याओं का सामना करनें वाला होता है। इन जातकों को माता से स्नेह और प्यार नहीं मिलता है। इनका गला खराब हो सकता है। पर कुछ मामलों में इनमें मुख का कैंसर भी पाया जाता है।

चतुर्थ भाग (63.20 डिग्री से 66.40 डिग्री)

चन्द्रमा के चतुर्थ भाग में जन्म लेने वाले जातक मजबूत शरीर वाले तथा इनके शरीर में पीठ अथवा बगल में जन्म से ही पहचान चिन्ह होगा। ऐसा व्यक्ति दवाईयां, कैमिकल या किसी प्रसाधन सामग्री का व्यवसाय करेगा।, इनके फेफड़े में पानी अथवा स्त्री जातक को ऋतुचक्र की परेशानी हो सकती है।

मंगल

मृगशिरा नक्षत्र में स्थित मंगल ग्रह पर सूर्य की दृष्टि हो तो ऐसा जातक वन स्थान में रहेगा। इस नक्षत्र के जातक स्त्री जाति से हमेशा घृणा करने वाला होगा, साहसी होगा। ऐसे जातकों के मंगल पर यदि चन्द्रमा की दृष्टि हो तो ऐसा जातक अपनी माता का मान गिराने वाला होता है। यह वेश्यगामी, होगा तथा अन्त में उन्हीं के हाथों बरबाद होगा। यदि मंगल पर बुध की दृष्टि हो तो ऐसा जातक पुत्र तथा धन प्राप्त करेगां यदि मंगल पर बुध की दृष्टि होगी तो ऐसा जातक संगीत तथा संगीत बाधों में निपूर्ण होगा तथा यह अपने प्रियजनों का प्रिय होगा। मंगल पर यदि शुक्र की दृष्टि हो तो ऐसा जातक विशिष्ट राजनीतिक दर्जा प्राप्त करेगा। अत: वह सुरक्षा या पुलिस विभाग में अच्छे पद पर होगा। इनपर यदि शनि की दृष्टि हो तो ऐसा व्यक्ति अपने गाँव या कस्बें का प्रमुख होगा।

प्रथम भाग (53.20 डिग्री से 56.40 डिग्री)

मंगल के प्रथम भाग में जन्म लेने वाले जातक कटु(तीखा) बोलने वाले होतें है, ऐसा व्यक्ति धन के अभाव से पीड़ित रहता हे। तथा उस पर बड़े परिवार के पालन का उत्तरदायित्व होगा। ऐसे जातकों के पत्नी की जल्दी मृत्यु होने के योग होगें, तथा उसकी खुद की भी लम्बी आयु संदिग्ध होगी। यदि विशाखा नक्षत्र में लग्न हों तो ऐसा जातक निसंतान होगा। इस भाग में जन्में जातकों को टॉसिल, तेज या प्रोस्टेट ग्रन्थियों के कष्ट का संकेत होगा।

द्वितीय भाग (56.40 डिग्री से 60.00 डिग्री)

मंगल के द्वितीय भाग में जन्म लेने वाला जातक अपने परिवार का विरोधी होगा तथा यही जातक अपने परिवार की बदनामी का कारण भी होगा। ओर यदि यहाँ पर शनि की उपस्थिती हो तो ऐसे जातक को कारावास होने के भी योग होतें है। ऐसे जातक को यौनिक अल्सर, गर्दन में और मांसपेशियों में इनकों गठिया रोग हो सकता है।

तृतीय भाग (60.00 डिग्री से 63.20 डिग्री)

यदि मंगल के तृतीय भाग में अंश में लग्न भी हों तो ऐसा जातक चेचक से ग्रस्त होता है। वह बहुत ज्यादा धनी नहीं होता है। अथवा वह हमेशा निर्धन व दुखी होता है। यदि इनका जन्म दूसरें लग्न में हुआ हो तो ऐसा जातक अच्छी आय अर्जित करने वाला होगां ऐसा जातक गर्दन में मांसपेशियों की गठिया अथवा प्रोस्टेट ग्रंथियों से पीड़ित होगा।

चतुर्थ भाग (63.20 डिग्री से 66.40 डिग्री)

मंगल ग्रह के चतुर्थ भाग में जन्म लेने वाले जातक को अपने पिता का मृत्यु का कष्ट होगा, इनका वैवाहिक जीवन तो सुखी होगां हमेशा लेकिन इनकी पत्नी प्राय: बीमार रहेगी। ऐसे जातक को कंठशूल, डिप्थेरिया तथा गले की परेशानी होगा।

बुध

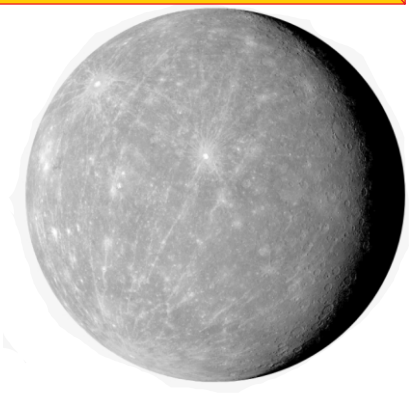

मृगशिरा नक्षत्र में स्थित बुध पर यदि चन्द्रमा की दृष्टि हो तो ऐसा धर्मनिष्ठ होगा। तथा अपने परिवार को अत्यधिक प्यार करने वाला होगा। यदि बुध पर वृहस्पति ग्रह की दृष्टि हो तो ऐसा व्यक्ति अति विद्वान होगा तथा वह जो बोलेगा वह करके रहेगा। ऐसा व्यक्ति अपने वचन का पक्का होगा, तथा समाज या नगर में शीर्ष पद पर होगा। यदि बुध पर शुक्र की दृष्टि हो तो वह जीवन के सभी क्षेत्रों में सुखी होगा, ऐसा व्यक्ति भाग्यवान तथा धनी व्यक्ति होगां यदि शनि की दृष्टि हो तो ऐसा व्यक्ति कई समस्याओं का सामना करेगा। जिनमें से अधिकतर उसके परिजनों द्वारा उत्पन्न की जायेगी तथा वह निर्धन भी होगा।

प्रथम भाग (53.20 डिग्री से 56.40 डिग्री)

बुध के द्वितीय भाग में जन्म लेने वाले जातक बहुत ही तुच्छ तरीकों से धन जमा करने का अभिलाषी होगा। ऐसा व्यक्ति दूसरों की उन्नति से ईष्या करने वाला होगां यदि बुध पर किसी अन्य ग्रह की दृष्टि न हो तो उसके चार पुत्र तथा एक पुत्री होगी। इन व्यक्ति को गले के संक्रमण अथवा हकलाहट का योग होगा।

द्वितीय भाग (56.40 डिग्री से 60.00 डिग्री)

बुध के द्वितीय भाग में जन्म लेने वाले जातक बहुत ही तुच्छ तरीकों से धन जमा करने में अभिलाषी होगा। ऐसा व्यक्ति दूसरों की उन्नति से ईष्या करने वाला होगा। यदि बुध पर किसी अन्य ग्रह की दृष्टि न हो तो उसके चार पुत्र तथा एक पुत्री होगी। इन व्यक्ति को गले के संक्रमण अथवा हकलाहट का योग होगा।

तृतीय भाग (60.00 डिग्री से 63.20 डिग्री)

बुध के तृतीय भाग में जन्म लेने वाले जातक हमेशा बुद्धिमान, वीर तथा प्रफुल्ल और हसमुख स्वभाव का होगा। फिर भी उस व्यक्ति का एक ही विवाह होगा और वह अपनी पत्नी से प्रेम भी करेगा और यह अपने सभी उत्तरदायित्वों को अच्छी तरह निभायेगा। तथा ऐसे व्यक्ति को सम्भावी स्वास्थ्य समस्याएं हकलापन अथवा क्षय रोग होगा।

चतुर्थ भाग (63.20 डिग्री से 66.40 डिग्री)

बुध के चतुर्थ भाग में जन्म लेने वाले व्यक्ति भगवान के प्रति परिपूर्ण भक्ति रखने वाले होतें है। ऐसे व्यक्तियों की माध्यमिक शिक्षा होगी मगर अपने ईमान और मेहनत से ऐसे व्यक्ति अपने शिखर पर पहुचतें है। ऐसे व्यक्ति लेखा अथवा वित्तीय विभाग के अध्यक्ष होते । ऐसे व्यक्ति को दिमागी असन्तुलन, होने, पागलपन अथवा लकवा होने का योग होता है।

वृहस्पति

मृगशिरा नक्षत्र में स्थित वृहस्पति पर सूर्य की दृष्टि हो तो ऐसा जातक अपने शासक का निकटवर्ती होता है, तथा ऐसे व्यक्ति के पास सेवक, धन–दौलत, भवन इत्यादि बहुत

सारी चीजें होती है। यदि वृहस्पति पर चन्द्रमा की दृष्टि होती है तो ऐसा जातक करोड़पति होता है ऐसा जातक अवैध यौन संबंधों में लिप्त होने के कारण वह लोक–निन्दा तथा अपयश के संकट में फंस जायेगा। वृहस्पति पर यदि मंगल की दृष्टि हो तो ऐसे व्यक्ति अत्याधिक विद्वान होते है और साहसी होतें है। तथा यह धन के मामलें में यह भाग्यशाली होतें है। लेकिन इसके पारिवारिक जीवन में छोटी–मोटी समस्याएं हमेशा आती रहती है। वृहस्पति पर अगर बुध की दृष्टि हो तो ऐसा जातक विद्वान सदाचारी और धन दौलत से सम्पन्न होता है। यदि वृहस्पति पर शुक्र की दृष्टि हो तो उसका गौरवपूर्ण भव्य व्यक्तित्व होता है। तथा ऐसा व्यक्ति सुन्दर स्त्रीयों को देखकर उसको आनन्द लेता हे। वृहस्पति पर यदि शनि की दृष्टि होने पर वह अपनी बुद्धि तथा विभिन्न विषयों में प्रवीणता के लिए प्रशंसा का पात्र होगां लेकिन सही मायनें में कहा जाए तो ऐसा व्यक्ति अच्छी पत्नी के सुख को तरसेगा।

प्रथम भाग (53.20 डिग्री से 56.40 डिग्री)

वृहस्पति के प्रथम भाग में जन्म लेने वाले जातकों की मनोस्थिति डावांडोल वाली होगी यह व्यक्ति लिखनें पढ़ने के अत्यधिक शौकिन होतें हे। यह छोटे कद वाला व्यक्ति होता है। वह नाम, यश तथा दौलत अर्जित करने वाला होगां यदि यह भाग जातक के लग्न का भी हो तो ऐसा जातुक गोरा होगा तथा यह बड़ी आंखों का तथा महाप्रतापी शरीरवाला होगा, ऐसे व्यक्ति के हाथ या कन्धें पर गठियां रोग होने के योग भी होतें है।

द्वितीय भाग (56.40 डिग्री से 60.00 डिग्री)

वृहस्पति के द्वितीय भाग में जन्म लेने वाले जातकों की शासकों तथा राजनीतिज्ञों तक सहज पहुँच होगी। ऐसे व्यक्ति को तेज सिरदर्द तथा गले की छोटी–छोटी समस्याओं का योग बनता हे। यदि यह भाग लग्न में भी हों तो ऐसा जातक अति विद्वान् , बुद्धिमान तथा आकर्षक व्यक्तित्व का होता है।

तृतीय भाग (60.00 डिग्री से 63.20 डिग्री)

वृहस्पति के तृतीय भाग में जन्म लेने वाले व्यक्ति कंजूस, कृतघ्न तथा पत्नी वह संतान के सुख से वंचित होगा। ऐसा व्यक्ति अपने पास से किसी को भी, यहां तक की अपनी पत्नी व बच्चों तक को भी एक कानी–कौनी तक नहीं देगा। ऐसा व्यक्ति शुरू से ही मतलबी टाइप का होगा। ऐसा व्यक्ति रक्त संबंधी दिल की बीमारियों से ग्रस्त होतें है।

चतुर्थ भाग (63.20 डिग्री से 66.40 डिग्री)

वृहस्पति के चतुर्थ चरण में जन्म लेने वाले जातकों के पास पर्याप्त धन होता है। ऐसे लोगों को सरकार से मान व पदक मिलेगें। ऐसे व्यक्ति दूसरों के विचारों को पढ़ने में एकदम माहिर होतें हे। ओर स्वास्थ्य की बात करें इनके पेट की खराबी के योग बनतें नजर आ रहें तथा आँखों में इनके

कमजोर दृष्टि होने का भी संकेत होता है।

शुक्र

मृगशिरा नक्षत्र में स्थित यदि शुक्र पर सूर्य ग्रह की दृष्टि हो तसे ऐसे जातक की पत्नी अति सुन्दर होगी तथा ऐसे जातक भूमि व भवनों का मालिक होगा। यदि शुक्र पर चन्द्रमा की दृष्टि हो तो उसकी माता, समाज, में उच्चात् स्थिति में होगी जिसके कारण ऐसा जातक जनजीवन में प्रसिद्धि प्राप्त करने वाला होगा। यदि शुक्र ग्रह पर मंगल ग्रह ही दृष्टि हो तो उसका वैवाहिक जीवन पूरी तरह से तहस–नहस हो जायेगा। तथा इनके जीवन में किसी स्त्री के आने से इनकी धन सम्पत्ति भी नष्ट हो जायेगी। यदि शुक्र ग्रह पर बुध की दृष्टि हो तो वह अत्यधिक प्रसन्नचित तथा भाग्यवान होता है। शुक्र पर यदि वृहस्पति की दृष्टि हो तो उन्हें अच्छी पत्नी, संतान तथा धन–दौलत की प्राप्ति होती हे। शुक्र पर यदि शनि की दृष्टि पड़ रही हो तो उनके सुख शान्ति में कमी आने लगेगीं इनका अभाव होगा तथा प्राय: अपनी पत्नी के कारण पीड़ित रहेगा और यह जातक हमेशा पत्नी के मायके वालों की धमकियाँ सहता रहेगा।

प्रथम भाग (53.20 डिग्री से 56.40 डिग्री)

शुक्र के प्रथम भाग में जन्म लेने वाले जातक संगीत व ललित कलाओं में परंपरागत होते। इस चरण वालें व्यक्ति एक अभिनेता के रूप में सम्पत्ति अर्जित करने वालें होतें है। यह व्यक्ति अपनी काम क्रीड़ाओं में लिप्त रहने वालें व्यक्ति होतें है। ऐसे व्यक्ति अपनी ललित कलाओं में विशिष्ट योगदान देने के कारण शासन द्वारा सम्मानित होते है। इनके स्वास्थ्य की बात करें तो इन्हें सांस के रोग तथा कनफेड का संकेत होता है।

द्वितीय भाग (56.40 डिग्री से 60.00 डिग्री)

शुक्र के द्वितीय भाग में जन्म लेने वाले व्यक्तियों का स्त्रियों से काफी ज्यादा सम्पर्क होता है। ऐसे व्यक्तियों के पास जितना धन सम्पत्ति होता है तथा जितना धनी और ईमानदारी होतें है। वह उससे ज्यादा दूसरें जरूरतमन्दों की सहायता करतें है। अधिकतर यह स्वास्थ रहेगें लेकिन फिर भी यह यौन रोगों, पेशाब की बिमारियों सिर में जख्म, गले में गाँठ या गरदन में फोड़े (क्षय रूप धारण करने वाले) जैसी बीमारियों से पीड़ित रहतें है।

तृतीय भाग (60.00 डिग्री से 63.20 डिग्री)

शुक्र के तृतीय भाग में जन्म लेने वाले जातक कई शास्त्रों और विभिन्न विज्ञानों में अपने ज्ञान के कारण प्रसिद्ध होगा। ऐसा व्यक्ति अपने गुणों अर्थात् संगीत और नृत्य के द्वारा धन सम्पत्ति अर्जित करेगा। यदि किसी कारणवश इस भाग में स्थित शुक्र ग्रह के ऊपर किसी अशुभ ग्रह की दृष्टि पड़ रही हो तो ऐसे जातक का दूसरा विवाह होगा। इस चरण के व्यक्ति के ऊपर यदि शुक्र की दशा चल रही हो तो ऐसे जातक 13 वर्ष तक लाभदायक परिणाम पायेगा। उसके बाद शेष समय में इनके लिए मिला जुला परिणाम होगां इस चरण के जातक या स्त्री जातक सिरदर्द की परेशानी तथा गर्भाशय की परेशानियों से हमेशा परेशान रहेगा।

चतुर्थ भाग (63.20 डिग्री से 66.40 डिग्री)

शुक्र ग्रह के चतुर्थ चरण में जन्म लेने वालें जातक छोटे से लेकर मध्यम कद तक आदर्श और चरित्रवान होतें है। ऐसे जातक कवि या लेखक बन सकतें हे। ऐसे जातक के चेहरे पर तिल होगें। यदि पौष नक्षत्र में इनके लग्न पड़ता हो तो उसके कमाऊ (रोजगार में लगी हुई) पत्नी मिलेगी। और यदि स्वाति या विशाखा नक्षत्रों में लग्न हो तो ऐसे व्यक्ति के दो विवाह होंगे और उसकी पहली पत्नी के जीवित होने के बाद भी इस व्यक्ति का अन्य स्त्री से अवैध संबंध होंगे। इस चरण के व्यक्ति के स्वास्थ्य की बात करें तो इन्हें यौन रोग, कनफेड़ या टांसिल्स होने के योग होते है।

शनि

मृगशिरा नक्षत्र में स्थित शनि ग्रह

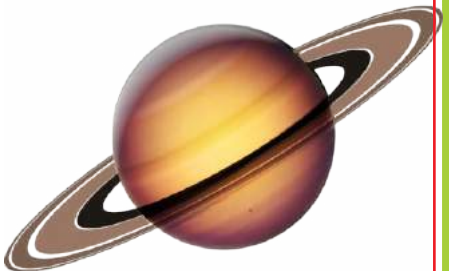

पर यदि सूर्य की दृष्टि हो तो ऐसा जातक अत्यधिक विद्वान होगा और वेद शास्त्रों में ऐसा व्यक्ति आचार्य होगा। लेकिन ऐसा व्यक्ति प्राय: जीवन भर अपनी

दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए दूसरों पर निर्भर होता हे। यदि शनि पर चन्द्रमा की दृष्टि रही हो तो वह राजनीतिक क्षेत्र में उच्चतम स्थान पर होगा। अथवा किसी विभाग या संस्था का अध्यक्ष होता है। शनि पर यदि मंगल की दृष्टि पड़ रही है तो ऐसा व्यक्ति सुरक्षा अथवा पुलिस विभाग में कार्य करने वाला होता है और उसका पारिवारिक जीवन काफी अच्छा होता है। शनि ग्रह पर यदि बुध की दृष्टि पड़ रही हो तो ऐसा जातक स्त्रियों के अनुसार काम करने वाला होगा, वह अपने अनैतिक क्रियाकलापों में लिप्त होने की आलोचनाओं को सहन करने वाला होगा। शनि पर यदि वृहस्पति की दृष्टि हो तो वह दूसरों के सुख–दुख का भागीदार होगा तथा जरूरतमंद और असहाय व्यक्तियों की सहायता करने वाला होगा। शनि पर यदि शुक्र ग्रह की दृष्टि पर रही हो तो ऐसा व्यक्ति दोष के शासक के निकट या उनके सम्पर्क में रहेगा। तथा यह सुर–सुन्दरी का आनन्द लेगा।

प्रथम भाग (53.20 डिग्री से 56.40 डिग्री)

शनि के प्रथम भाग में जन्म लेने वालें जातक लम्बे कद काठी का होगा, इनके अकृतितीर्ण सीने तथा छल्लेदार बाल, गर्म राज्य में काला रंग तथा ठंडी राज्य में लाल रंग का होगा। यह धन विहीन होगा। फिर भी यदि शुक्र या वृहस्पति इस भाग में शनि पर दृष्टि कारक होंगे तो ऐसे जातक प्रचुर धनी, और नामी तथा प्रसिद्ध होगा। उसके अपनी आयु से बड़ी तथा समाज से परिष्कृत स्त्रियों के साथ काम–सम्बन्ध होंगे। ऐसे व्यक्तियों का बचपन में स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा। उसे दाँत दर्द अथवा अन्य ऐसी समस्याओं से भी पीड़ित होने के योग बनेगे।

द्वितीय भाग (56.40 डिग्री से 60.00 डिग्री)

शनि के द्वितीय भाग में जन्म लेने वालें जातक के खर्चे अधिक होंगें तथा बुरी संगत में पड़ने वाले व्यक्ति अपना सब कुछ गँवा देंगे। ऐसे व्यक्ति विभिन्न उच्च पदों पर कार्यरत रहतें। फिर भी ऐसे व्यक्ति इनकी आयु प्रायः लम्बी होती है तथा आनन्द की अपेक्षा बात की जाए तो इनके लिए स्त्रियों के प्रति झुकाव ज्यादा होता है इनकी आँख की दृष्टि कमजोर होने के योग होते है।

तृतीय भाग (60.00 डिग्री से 63.20 डिग्री)

शनि के तृतीय भाग में जन्म लेने वाले जातक का यदि उत्तरभाद्रपद में लग्न होगा तो इस चरण की स्त्री जातक विवाह के पूर्व ही गर्भधारण करेगी। ऐसा जताक जेलर पुलिस अथवा सुरक्षा विभाग के कार्य में नियुक्त होगा, इस व्यक्ति का ज्यादा से ज्यादा एक पुत्र होगा। इनके स्वास्थ्य की बात करें तो इसे दिमागी असंतुलन या किसी इसी प्रकार की व्याधि का संकेत होगा।

चतुर्थ भाग (63.20 डिग्री से 66.40 डिग्री)

शनि के चतुर्थ भाग में जन्म लेने वाले जातक जन्म के समय अथवा बाद में भी उसके शरीर में विकलांगता होती है ऐसा व्यक्ति पुजारी का काम करेगा। तथा यह अपने जन्म स्थान से दूर रहेगां अतः कुछ मामलों में यह भी देखा गया है कि जातक बुरा काम या पाप कर्म करने के बाद कुछ समय के लिए अज्ञात स्थान पर छीपा रहेगा। इनके स्वास्थ्य के बात करे तो यह अस्थमा या फेफड़ों की बीमारी का योग है।

राहु

प्रथम भाग (53.20 डिग्री से 56.40 डिग्री)

राहु के प्रथम चरण में जन्म लेने वाले जातक प्रचुर धनवान होतें है। ऐसे व्यक्ति का सब सम्मान करतें है। तथा वह गौरव और प्रतिष्ठा अर्जित करने वालें होतें है। इनके स्वास्थ्य की बात करे तो इन्हें लकवा, आंत की बीमारी तथा पेट दर्द होने के योग होतें है।

द्वितीय भाग (56.40 डिग्री से 60.00 डिग्री)

राहु के द्वितीय चरण में जन्म लेने वालें जातक बुद्धिमान, चिड़चिड़े तथा कुटिल स्वभाव के होतें है। फिर भी वह अपने प्रबल भाग्य कारण काफी ज्यादा धन कमायेगा।

तृतीय भाग (60.00 डिग्री से 63.20 डिग्री)

राहु के तृतीय चरण में जन्म लेने वालें जातक लालची, भ्रष्ट, तथा अप्रसन्न स्वभाव के होते है। ऐसा व्यक्ति दूसरों की उन्नति या प्रगति से खुश नहीं होगा। इन्हें सदैव शत्रुओं से भय लगा रहेगा। ऐसा व्यक्ति अपनी बेवकूफियों से धन गँवायेगा तथा नास्तिक होगा। ऐसा व्यक्ति पोलियों तथा रीढ़ की हड्डीयों से ग्रस्त रहेगा।

चतुर्थ भाग (63.20 डिग्री से 66.40 डिग्री)

राहु के चतुर्थ चरण में जन्म लेने वालें जातक महान विद्वान होते हे। उसे शासन द्वारा सम्मान प्राप्त होगा, ऐसा व्यक्ति आज्ञाकारी संतान तथा दूसरों की स्त्रियों के प्रति आसक्त रहेगा।

केतु

प्रथम भाग (53.20 डिग्री से 56.40 डिग्री)

केतु के प्रथम चरण में जन्म लेने वालें जातक जीवन चिन्ताओं से भरा होगा वह अत्यधिक प्रयत्न करनें पर भी अपना धन एकत्रित नहीं कर सकेगा। फिर भी उसकी वृद्धावस्था अपनें बच्चों की आर्थिक समृद्धता तथा सम्पन्नता के कारण शान्तिपूर्ण तथा सुखी से बीतेगा। ऐसे जातक की उनके जीवन के मध्यावस्था में मोतियाबिन्द हो सकता है अथवा वह अन्धा भी हो सकता है।

द्वितीय भाग (56.40 डिग्री से 60.00 डिग्री)

केतु के द्वितीय चरण में जन्म लेने वाले जातक को अंगता का योग होता है। ऐसा व्यक्ति अत्याधिक विद्वान होता है। वह अपना जीवन मानसिक रूप से विकलांग तथा अपंग व्यक्तियों की सेवा में गुजरेगा तथा ऐसा व्यक्ति जिहवा के योग से पीड़ित होगा।

तृतीय भाग (60.00 डिग्री से 63.20 डिग्री)

केतु के तृतीय भाग में जन्म लेने वाले जातक ईष्यालू स्वभाव के होंगे ऐसे व्यक्ति गठिया अथवा, चकतों अथवा दाद से पीड़ित होगा।

चतुर्थ भाग (63.20 डिग्री से 66.40 डिग्री)

केतु के चतुर्थ चरण में जन्म लेने वाले जातक पापकर्मो में लिप्त रहतें है, झगडालू होते हे। यह भ्रष्ट तथा कई रोगों से प्रभावित होतें है। लेकिन ऐसा व्यक्ति धनवान तथा सफल व्यक्ति होते है।

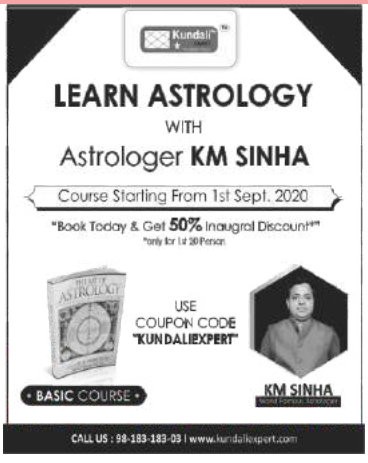

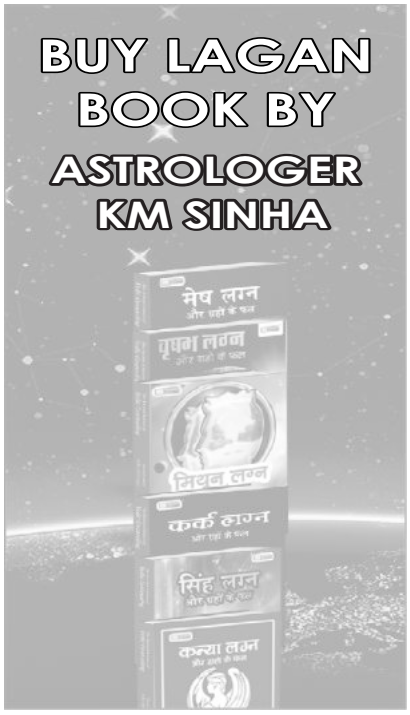

Kundali expert

How to Join
"ASTROLOGY COURSE "

Get Information
Broucher
WEEKEND CLASSES
Only Through Mobile APP

Download KUNDALI EXPERT Mobile APP

Google Play App Store

अंक ज्योतिष भाग -2

यदि आपका लकी नम्बर दो है तो सचमुच ही आपके भाग्य से ईर्ष्या होती हे। और उन व्यक्तियों पर चन्द्र ग्रह का विशेष प्रभाव रहता हे। ऐसे व्यक्तियों का मन व दिमाग शांत रहता है। ये अपने कार्य को लेकर संवेदनशील तो होते है, परन्तु बहुत दिनों तक इनका किसी भी कार्य में मन नहीं लगता है। इसके फलस्वरूप ऐसे व्यक्ति भावुक व संवेदनशील, जागरूक कल्पना जगत में विचरण करने वालें, दयालु, सहदयी, विपत्ति में लोगों के काम आने वालें, मधुर प्रिय, यात्रा–प्रेमी, शीतल, विनम्र, शान्तिमय तथा जीवन–यापन करने वाले व्यक्ति होतें है। इन सभी छोटी–बड़ी नकारात्मकता के कारण इन्हे कई बार अपना व्यवसाय बदलना पड़ता है। आपकों बता दे कि इंक दो भाग्यांक वाले जातक का स्वभाव उधार लेना होता है। और यह सत्य रूप से देखा गया है। कि ऐसे जातक बहुत उधार भी लेते है। परन्तु जब उधार देने की बात आती है तो यह काफी ढ़ीले हो जातें है। 2 अंक वाले व्यक्ति शारीरिक शक्ति की अपेक्षा यह मानसिक कार्यों में बाजी मार जातें हे। तथा आजीवन इनके विचार क्षण–भंगुर होतें है। और यह इधन–उधर घूमतें रहतें है। ऐसे व्यक्ति को एक जगह बैठना रास नहीं आता इस प्रकार यह जीवन में एक ही कार्य से संतुष्ट न रहकर बदल–बदलकर जीवन यापन के साधन अपनातें रहतें है। और यह अपने विचारों में भी आप सतत् परिवर्तन करतें रहतें है। ऐसे लोग विशेष रूप से बहुत कंजूस होतें है। परन्तु अच्छे मौकों पर यह दिल खोलकर खर्च भी करतें है। यह जब भी किसी नए कार्य का शुभारम्भ करतें है तो यह बड़े उत्साह और जोश के साथ करतें है और यदि किसी शुभ कार्य में इनके रूकावट या अड़चने आनी शुरू होती है। तो यह वह काम छोड़कर दूसरे कामों में लग जातें है। और इसी कारण से यह अपनी उन्नति में पीछे रह जातें है।

मीन लग्न और लक्ष्मी योग

लग्न

देखा जाए तो मीन लग्न की कुण्डली में चन्द्रमा पंचम भाव के स्वामी माने जातें है, इस लग्न के व्यक्ति बहुत धनी–मानी, यशस्वी ओर हमेशा शुभ कार्यों को करने वाला अर्थात धार्मिक प्रवृत्ति का होता है।, तथा किसी कारण वश पापयुक्त हो अथवा गुरू पापदृष्ट हो तो वह राज्य की ओर से अपमानित तथा राज्यविरोधी होता है। अत: उसके पाँव में चोट अथवा रोग होता है। और पेट में भी किसी प्रकार का कष्ट होता है।

द्वितीय भाव

यदि कुण्डली के द्वितीय भाव में मेष राशि हो तो धनाधिपति नवमेश भी हो जाता है। यदि इस भाव में मंगल बलवान हो तो ऐसे व्यक्ति को अशांति धन की प्राप्ति होती है। इसके विपरीत भाव में यदि मंगल निर्बल पापयुक्त अथवा पापदृष्ट हो तो इस व्यक्ति को धन के विषय में देव की ओर से मार पड़ती है। और उसका धन अचानक से नष्ट भी हो जाता है। यदि उस स्त्री का छोटा भाई हो तो वह उसके धन को नष्ट करनें वाला होता है। यदि मंगल इस भाग में नीच का होता है। माता के बड़े भाई की आयु कम होती ह। ऐसा इसलिए होता है। क्योकिं द्वितीय स्थान माता के बड़े भाई का होता है।

पंचम भाव

पंचम भाव में चन्द्रमा पंचमेश का होता है। पंचम भाव का बुद्धि से सम्बन्ध होने के कारण विद्या से सम्बन्धित जितनी भी समस्याएं होती है। इनका विवेचन पंचम भाव, उसके स्वामी तथा विद्या का कारक वृहस्पति द्वारा ही किया जाता है। इन तीनों में से जितने भी अंग अत्यधिक बलवान होंगे तथा शुभ दृष्ट होंगे उतनी ही अधिक विद्या जातक को प्राप्त होती जायेगी और ऐसे जातक में योगयता के विस्तार भी होंगे।

नवम् भाव

यदि कुण्डली के नवम् भाव में वृश्चिक राशि हो तो मंगल नवमेश तथा धनेश बनता है। यदि नवम् भाव बलवान् हो तो वह बहुत शुभ फल करता है। और उनके भाग्य में भी अत्याधिक धन लाभ लिखा होता है। नवम् भाव में यदि वृश्चिक राशि हो तो ऐसा व्यक्ति धार्मिक वाणी बोलता है। इनके छोटे साले होतें है। इसमें मंगल तथा गुरू का संबंध चतुष्टय हो तो विशेष धार्मिक होता है।

दशम् भाव

लिखा के दशम् भाव में धनु राशि होने पर गुरू केन्द्र त्रिकोण का स्वामी होने से अति शुभ फलदाता होता है। इन सब में यदि गुरू बलवान हो तो बहुत यशस्वी, राज्यमानी, परोपकारी, धनी आदि होता हे। और अपने कृत्यों से यश की प्राप्ति करने वाला होता है।

एकादश भाव

कुण्डली के एकादश भाव में मकर राशि होने पर शनि एकादेश तथा द्वादशेश बनता हे। इनका बड़ा भाई वाणी का प्राय: कर्कश होता है, यदि शनि इस कुण्डली में बलवान हो तो व्यक्ति बड़ी बहनें अत्यधिक होती है। अत: इन्हें भूमि से लाभ भी होता है। यदि शनि निर्बल हो तो बड़े भाई अथवा बहन द्वारा धन का नाश होने की संभावना रहती है।

मंगल

लक्ष्मीपति बनाने वालें प्रमुख द्वितीय भाव व नवम भाव मीन लग्न में धनेश और भाग्येश होता है। मंगल

धनवान बनें रहना केवल धन लाभ तक ही सीमित नहीं है। बल्कि धन संचय भी आवश्यक हैं। और यदि धन लाभ बहुत हो और व्यय उससे भी अधिक हो तो इस स्थिति में भी व्यक्ति धनवान नहीं होता है। तथा यह बात आपको पता होगी की व्यक्ति द्वारा किए गए कर्मो का प्रतिफल भाग्य ही होता है। और किसी व्यक्ति का धनवान् बननें का कारण 90 प्रतिशत उसका कर्म का योगदान होता है, और केवल 10 प्रतिशत उसके भाग्य का योगदान होता है। परन्तु कभी–कभी उस व्यक्ति का भाग्य उसके कर्म पर हावी रहता है। मीन लग्न की कुण्डली में द्वितीय भाव तथा नवम् भाव का स्वामी मंगल होता है और मंगल प्रत्येक भाव में स्थित होकर व्यक्ति को क्या फल देता है। आइए समझतें है।

मंगल लग्न भाव में होने पर

मीन लग्न में मंगल लग्न भाव में मित्र गुरू की मीन राशि पर स्थित होने से जातक के मान सम्मान में वृद्धि होती है। ऐसे जातकों के शारीरिक सौन्दर्य की वृद्धि होती है। तथा इनके अन्दर दूसरों को आकर्षित करने की क्षमता भी कही ज्यादा विकसित होती है। ऐसे जातक को परिवार का सुख भी मिलता है। ओर उनके भाग्य की उन्नति भी होती है। कुण्डली में मंगल की चतुर्थ दृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने के कारण ऐसे जातक को भूमि और भवन का उत्तम सुख मिलता है। तथा माता के सुख में भी वृद्धि होती है। और इन्हें स्त्री का सुख भी प्राप्त होता है। कुण्डली में मंगल की अष्टम दृष्टि से अष्टम भाव को देखने के कारण इनको पुरानी संपत्ति तथा आयु का लाभ मिलता है तथा ऐसे जातक का जीवन भी उच्च कोटि का होता है।

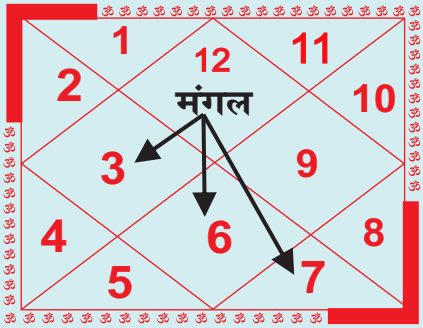

मीन लग्न में मंगल की महांदशा

मीन लग्न में मंगल द्वितीय भाव में भाग्य भाव का स्वामी होता है। और यह जन्मकुण्डली में किस भाव में स्थित है उसका भी अपना एक विशेष महत्व है। जब भी जन्म कुण्डली में मंगल की दशा आएगी धन योग का फल मिलेगा लेकिन किसी भी स्थिती में दशा के अनुसार ही शुभ और अशुभ फल प्राप्त होगा।

दशाफल

मीन लग्न में मंगल लग्न भाव में होने पर मंगल की महादशा में जातक के अनेक मंगल कार्य होते हे। तथा इन्हें संतान की उत्पत्ति का सुख और साहस प्राप्त होगा है। ऐसे जातक को अग्नि तथा शत्रुओं से भय रहता है।

मंगल द्वितीय भाव में होनें पर

मीन लग्न में मंगल द्वितीय भाव में अपनी ही मेष राशि पर स्थित होने से जातक को पारिवारिक सुख में विशेष रूप से वृद्धि होती है। मंगल की चतुर्थ नीच दृष्टि से पंचम भाव को देखने से संतान के विषय में मानसिक तौर पर परेशानी धनी रहती है। ऐसे जातक कि विद्या में कमी और कठिनाइयाँ आती है। तथा यह बहुत ही कटु वाणी बोलने वाले होते हे। ऐसे जातक की वाणी पर कण्ट्रोल नहीं होता है। अत: मंगल की सप्तम दृष्टि से अष्टम भाव को देखने के कारण जातक को पुरानी संपत्ति व जायदाद में वृद्धि होती है। तथा जातक को आयु की शक्ति प्राप्त होती हे। मंगल की अष्टम दृष्टि से नवम् भाव को देखने के कारण धर्म का विशेष पालन होता है। तथा इनके भाग्य में विशेष रूप से वृद्धि होती है।

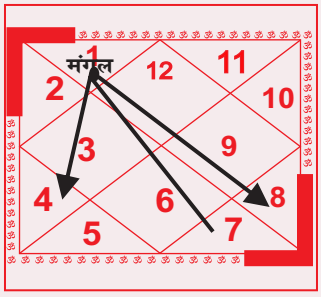

दशाफल

मीन लग्न में मंगल द्वितीय भाव में होने पर मंगल की महादशा जातक को बड़े आनन्द की प्राप्ति होती हे। वह बड़ा वाचाल होता है। ऐसे जातक का ईश्वर में गहरा लगाव होता है। तथा ऐसा जातक दूसरे लोगों का उपकार करता है।

मंगल तृतीय भाव में होनें पर

मीन लग्न में मंगल तृतीय भाव में शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित होने से जातक को भाई–बहनों का अत्यधिक सुख मिलता है। इनका पारिवारिक सुख प्रचुर मात्रा में मिलता है। तथा इन्हें धन का अत्यधिक लाभ होता है। मंगल की चतुर्थ दृष्टि से षष्ठम भाव को देखने के कारण जातक का अपने शत्रुओं पर विशेष प्रभाव होता है। अत: मंगल की सप्तम् दृष्टि से नवम् भाव को देखने के कारण ऐसे जातको की धार्मिक कार्यो में रूचि बनी रहती है। तथा ऐसे में भाग्य की विशेष वृद्धि व उन्नति होती है। मंगल की अष्टम दृष्टि से दशम भाव को देखने के

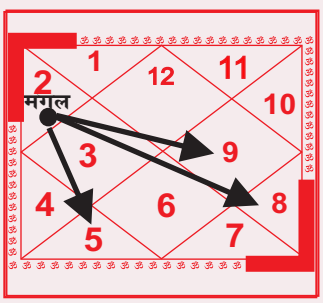

कारण व्यवसाय में प्रगति होती है। तथा राज्य से मान–सम्मान की प्राप्ति होती है। साथ ही साथ उन्हें पिता का सुख भी मिलता है। ऐसा जातक हर प्रकार से सुखी होकर यशस्वी जीवन बिताता है।

दशाफल

मीन लग्न में मंगल तृतीय भाव में होने पर मंगल की महादशा में जातक परदेश यात्रा करता है। इनके खर्च में अधिकता रहती है। मित्रों से विरोध होता है। व इनके कला में प्रवीणता आती हे। ऐसा जातक बहुत विद्वान तथा देश–विदेश की बातों को जानने–समझनें का ज्ञाता और वात–पित्त रोग से पीड़ित होता है।

मंगल चतुर्थ भाव में होने पर

मीन लग्न में चतुर्थ भाव में बुध की मिथुन राशि पर स्थित होने से जातक को भूमि भवन व जायदाय का लाभ होता है इन्हे माता से लाभ मिलता है तथा धन की विशेष वृद्धि होती है।

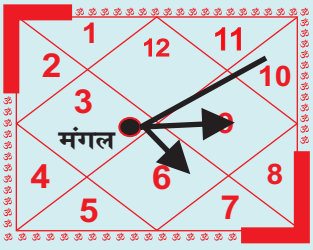

मंगल की चतुर्थ दृष्टि से सप्तम भाव का देखने के कारण ऐसे जातक को उत्तम गुणों से युक्त भाग्यशाली पत्नी की प्राप्ति होती है। तथा जातक को अपने व्यवसाय में भी जबरदस्त सफलता मिलती है

मंगल की सप्तम दृष्टि से दशम् भाव को देखने के कारण राज्य तथा इनके व्यवसाय के क्षेत्र में मान–सम्मान तथा लाभ मिलता है। मंगल की अष्टम दृष्टि से एकादश भाव को देखने के कारण ऐसे जातक को घर बैठे आमदनी होती है। तथा जातक धनी तथा भाग्यशाली होता है।

दशाफल

मीन लग्न में मंगल चतुर्थ भाव में होने से मंगल की महादशा में जातक की कीर्ति का विस्तार होता हे। तथा जातक गुणों से सम्पन्न होता है। मंगल यदि कर्क के नीच अंश में हो तो जातक को जंगल के पदार्थो से तथा अग्नि की क्रिया द्वारा धन का लाभ होता है तथा व्यक्ति स्त्री–पुत्रों से दूर रहने के कारण हमेशा दुःखी रहता है।

मंगल पंचम भाव में होने पर

मीन लग्न में मंगल पंचम भाव में चन्द्रमा की कर्क राशि पर नीच का स्थित होता है। और मंगल के प्रभाव से जातक की विद्या–बुद्धि में कमी आती हे। ऐसे व्यक्तियों को संतान का सुख न मिल पाने के कारण इनके पारिवारिक सुख में कमजोरी आती हे इनके धन का पक्ष कमजोर रहता है तथा इनका भाग्य कमजोर होने के कारण भाग्य

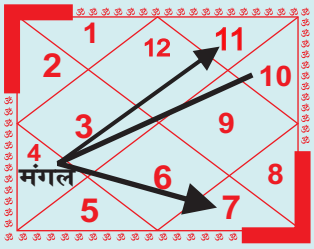

इनका साथ नहीं देता हे। मंगल की चतुर्थ दृष्टि से अष्टम भाव को देखने के कारण पुरानी जायदाद व संपत्ति का लाभ मिलता है। अतः मंगल की अष्टम दृष्टि से द्वादश भाव को देखने कारण ऐसे जातक को अपने बाहरी संसाधनों से त्रुटिपूर्ण लाभ मिलता है ऐसे जातको को खर्च की अधिकता रहती हे। तथा जातक का जीवन संघर्षों से भरा रहता है। तथा इनका हर दिन चुनौतियों से भरा रहता है।

दशाफल

मीन लग्न में मंगल पंचम भाव में होने पर मंगल की महादशा में जातक जनसमूह का नायक होता है, लीडर होता है। लेकिन स्त्री–पुत्र से वियोग होने की संभावना होती है। तथा इनके शत्रु और अग्नि से भी बाधा होती है।

मंगल षष्ठम भाव में होन पर

मीन लग्न में मंगल यदि षष्ठम भाव में

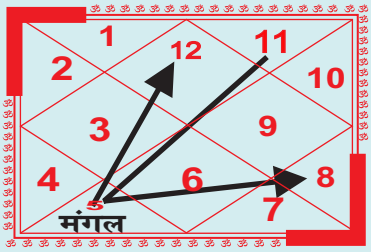

सूर्य कि सिंह राशि में स्थित होता है तो वह जातक को ऐश्वर्यपूर्ण जीवन प्रदान करता हे। तथा ऐसा जातक शत्रुओं पर अपना प्रभाव स्थापित करने की अद्भूत शक्ति प्रदान करता है। मंगल की चतुथ दृष्टि से नवम भाव को देखने के कारण ऐसे जातक द्वारा धर्म का विशेष रूप से पालन होता है। तथा थोड़ी बहुत कुछ कठिनाईयों के साथ इनके भाग्य कि उन्नति भी होती है। कुण्डली में मंगल की सप्तम् दृष्टि से द्वादश भाव को देखने के कारण बाहरी स्थानों व संसाधनों से तनाव रहता है। तथा खर्च की अधिकता इनकी बनी रहती है।

मंगल की अष्टम दृष्टि से प्रथम भाव को देखने के कारण उस जातक के प्रभाव में तथा मान–सम्मान की भी वृद्धि होती है। मंगल के पंचम भाव में स्थित होने के कारण जातक शत्रुओं के आपसी झमेलों से इनको लाभ प्राप्त होता है।

दशाफल

मीन लग्न में मंगल षष्ठम भाव में होने पर मंगल की महादशा में जातक आचार–विचारशील होता हे। यह धार्मिक व यज्ञादि कार्यो में उसकी प्रवृत्ति होती हे। एवं स्त्री, पुत्र, भूमि और धन–धान्य से व्यक्ति सुखी जीवन यापन करता है।

मंगल सप्तम भाव में होने पर

मीन लग्न में मंगल सप्तम भाव में बुध की कन्या राशि पर स्थित होने से जातक को व्यवसाय में पर्याप्त लाभ मिलता है तथा ऐसे जातक की पत्नी बहुत ही भाग्यशाली होती है। मंगल की चतुर्थ दृष्टि से दशम् भाव को देखने के कारण ऐसे जातक को अपने व्यवसाय से अत्यधिक लाभ मिलता है तथा व्यक्ति की आय में निरंतरता बनी रहती है, राज्य में इनके मान सम्मान का पद ऊँचा रहता है तथा इनको इनके पिता का सुख भी प्राप्त होता है। मंगल की सप्तम दृष्टि से प्रथम भाव को देखने के कारण इनको परिवार का सुख मिलता रहता है तथा ऐसा व्यक्ति अपने परिश्रम से धन इकट्ठा करता है।

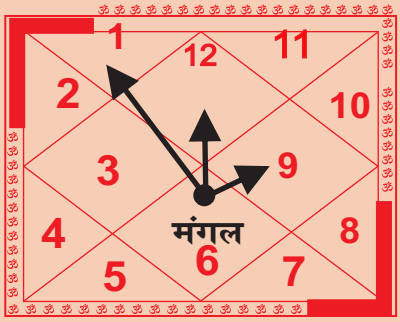

दशाफल

मीन लग्न में मंगल सप्तम भाव में होने पर मंगल की महादशा में जातक धन व स्त्री से रहित होता है। लड़ाई–झगड़े से व्याकुल होता है। शरीर से विकल्प होता है। चतुष्पदों का अभाव होता है।

मंगल अष्टम भाव में होने पर

मीन लग्न में मंगल अष्टम भाव में शुक्र की तुला राशि पर स्थित होने से ऐसे

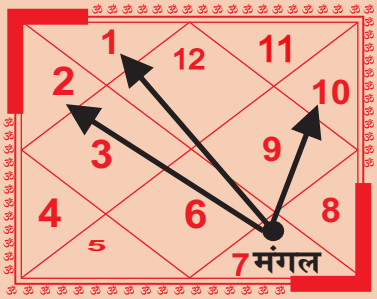

जातक को पुरानी जायदाद या संपत्ति वगैरह का लाभ मिलता है मंगल की चतुर्थ उच्च दृष्टि से एकादश भाव को देखने के कारण जातक की आमदनी अच्छी रहती है तथा आय में इनके निरन्तरता बनी रहती हैं मंगल की सप्तम दृष्टि से द्वितीय भाव को देखने के कारण ऐसे जातकों को पारिवारिक सुख का लाभ अत्यधिक मिलता है। मंगल की अष्टम दृष्टि से तृतीय भाव को देखने के कारण जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है। अत: भाई–बहनों के सुख में थोड़ी कमी आती है।

दशाफल

मीन लग्न में मंगल अष्टम भाव में होने पर मंगल की महादशा में जातक धन को इकट्ठा करने वाला होता है। ऐसा जातक अगर कृषि का शौकिन व वाचाल होता है।

मंगल नवम् भाव में होने पर

मीन लग्न में मंगल नवम् भाव में

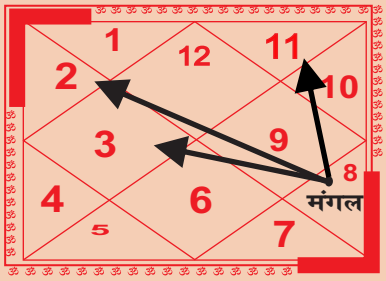

अपनी ही वृश्चिक राशि पर स्थित होने पर जातक भाग्यशाली होता है। तथा ऐसे जातकों की भाग्य में वृद्धि होती है। मंगल की चतुर्थ दृष्टि से द्वादश भाव को देखने के कारण जातक बाहरी सम्पर्को व साधनों के मामले संबंध त्रुटिपूर्ण रहतें है। मंगल की अष्टम दृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने के कारण ऐसे जातक को भूमि भवन को श्रेष्ठ सुख मिलता है तथा इन्हें माता का उत्तम सुख प्राप्त होता है।

दशाफल

मीन लग्न में मंगल नवम् भाव में होने पर मंगल की महादशा में जातक के मनोरथ पूर्ण होते हे। वह राज्य के लिए कोई कार्य करने में लाभ पाता है। तथा ऐसा व्यक्ति ईश्वर में आस्था रखने वाला होता है। लेकिन किसी कारणवश कलह के कारण जातक के मन में हमेशा उदासीनता बनी रहती है।

मंगल दशम भाव में होने पर

मीन लग्न में मंगल दशम् भाव में गुरू की गुरू की धनु राशि पर स्थित होने से जातक को व्यवसाय से लाभ प्राप्त होता है। मंगल की चतुर्थ दृष्टि से प्रथम भाव को देखने के कारण ऐसे जातक के शारीरिक गठन में वृद्धि होती है।, ऐसा

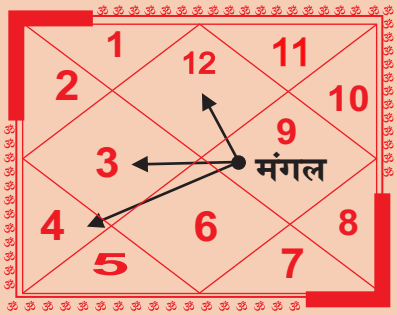

जातक स्वाभिमानी होता है, मंगल की सप्तम दृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने के कारण ऐसे जातक को गृहस्थ सुख प्राप्त होता हे। मंगल की अष्टम नीच दृष्टि से पंचम भाव को देखने के कारण उनके वाणी में कड़वाहट उत्पन्न होती है। मानसिक तौर पर इनमें अशांति छायी रहती हे। और साथी ही साथ संतान तथा विद्या के संबंध में कुछ कमी का सामना भी करना पड़ता है।

दशाफल

मीन लग्न में मंगल दशम् भाव में होने पर पर मंगल की महादशा में जातक के कुलानुसार धन की भी वृद्धि होती है। ऐसा जातक वाद–विवादों में हमेशा विजय प्राप्त करता है। यह आभूषण तथा घोड़ों से हमेशा सुखी रहता है। यदि किसी कारणवश मंगल उच्चांश से आगे बढ़ गया हो तो बहुत ही प्रयत्नों द्वारा कार्य की सिद्धि होती हे। ऐसे जातक को परिश्रम अधिक करना पड़ता हे। ऐसे जातक को असंतोष व शस्त्र एवं व्याधदि से भय रहता है।

मंगल एकादश भाव में होने पर

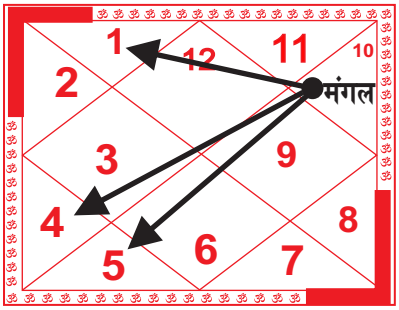

मीन लग्न में एकादश भाव में शनि की मकर राशि में स्थित होने से ऐसे जातक की भाग्योन्नति होती है। तथा वह बहुत ही भाग्यशाली होते हे। मंगल की चतुर्थ दृष्टि से द्वितीय भाव को देखने के कारण पारिवारीक जीवन में उनको अत्यधिक उन्नति मिलती है। ऐसे व्यक्ति के धन में हमेशा वृद्धि होती है। और ऐसे व्यक्तियों के आय में निरंतरता हमेशा बनी रहती है। मंगल की सप्तम् नीच दृष्टि से पंचम् भाव को देखने के कारण ऐसे जातक को विद्या तथा संतान के पक्ष में कुछ रूकावटें आती है। मंगल की अष्टम दृष्टि से षष्ठम भाव को देखने के कारण जातक बहुत ही हिम्मती होती है। ऐसे जातक को शत्रुओं के साथ झगड़े–झंझटों में ही सफलता मिलती है।

दशाफल

मीन लग्न में मंगल एकादश भाव में होने पर मंगल की महादशा में जातक आचार और विचारहीन होता है। तथा ऐसा जातक हमेशा धन–व्यय से व्यथित होता है। तथा ऐसा जातक अपने पुत्र के विषय में चिंतित रहता है। और उद्विग्न चित्त वाला होता है।

मंगल द्वादश भाव में होने पर

मीन लग्न में मंगल द्वादश भाव में शनि की कुंभ राशि पर स्थित होने से ऐसे जातक को बाहरी संसाधनों से व्यक्ति को लाभ भी मिलता है। लेकिन ऐसे व्यक्ति को खर्च की अधिकता हमेशा

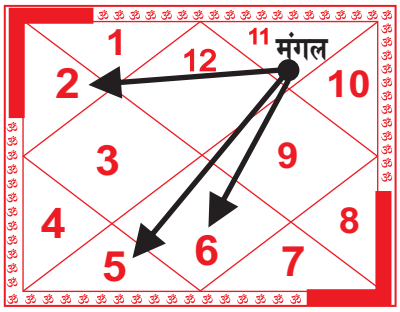

होती है। मंगल की चतुर्थ दृष्टि से तृतीय भाव को देखने के कारण उनमें पराक्रम की दृद्धि होती है। तथा उनके अपने भाई–बहनों ये त्रुटिपूर्ण सुख की प्राप्ति होती है। मंगल की अष्टम दृष्टि से षष्टम भाव को देखने के कारण ही ऐसा जातक अपने प्रभाव से शत्रु पर विजय हासिल करता है। ओर विजय हासिल करके उन पर अपना प्रभाव जमाता है। अत: मंगल की अष्टम् दृष्टि से सप्तम भाव को देखने के कारण व्यक्ति के दैनिक कामकाज और व्यवसाय में लाभ होता है। तथा जातक को स्त्री के सुख में वृद्धि होती है।

दशाफल

मीन लग्न में मंगल द्वादश भाव में होने पर मंगल की महादशा में जातक बहुव्ययी व ऋणी होता है। द्वादश भाव में होने वाले जातक परदेश के निवासी होतें है। और अपने पुत्र की स्वस्थ्य को लेकर हमेशा चिंतित रहतें है। यदि इनका भाव वर्गोत्तम् हो तो उसकी दशा में लड़ाई में विजयी गुण से सम्पन्न, बल से युक्त और नाना प्रकार की वस्तुओं का लाभ करने वाला होता है।

चन्द्रमा

लक्ष्मीपति बनानें वाले प्रमुख भाव

मीन लग्न में पंचमेश होता है चन्द्रमा

धनवान बनने हेतु पूर्व जन्म कृत शुभ संचित कर्म आवश्यक है और कुण्डली के पंचम भाग से कर्म, भाग व लाभ तय होतें हैं। मीन लग्न की कुण्डली में पंचम

भाव का अधिपति चन्द्रमा होता है। और प्रत्येक भाव में चन्द्रमा की स्थिति से क्या परिणाम मिलतें है, आइए जानते है।

चन्द्रमा लग्न भाव में होने पर

मीन लग्न में चन्द्रमा लग्न भाव में गुरू की मीन राशि गुरू की मीन राशि पर

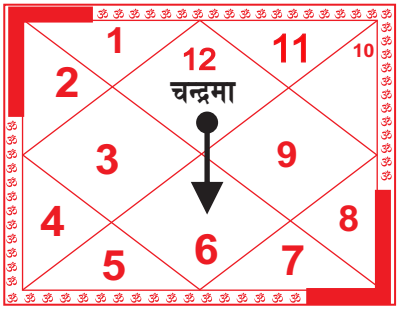

स्थित होने से ऐसे जातक स्वाभाव से विनम्र तथा श्रेष्ठ गुणों वाला होता हे। तथा ऐसे जातकों के शारीरिक–सौन्दर्य में वृद्धि होती हे। ऐसे जातको के यश व सम्मान में भी वृद्धि होती है। यह अत्यधिक विद्वान होने के साथ–साथ सभी लोगों का चहेता होता है तथा मीठा बोलने वाला भी होता है। चन्द्रमा की सप्तम दृष्टि से मित्र बुध की कन्या राशि राशि वाले सप्तम भाव युक्त सुन्दर स्त्री भी मिलती है। व्यवसाय के क्षेत्र में ऐसा जातक अत्यधिक सफलता अर्जित करने वाला होता है।

मीन लग्न में चन्द्रमा की दशा

मीन लग्न में देखा जाए तो चन्द्रमा पंचमेश होता है ओर चन्द्रमा जन्मकुण्डली के किस भाव में स्थित है उसका भी विशेष महत्व होता है।

अर्थात् जब भी चन्द्रमा की दशा आएगी तब धन योग का फल मिलेगा लेकिन दशा के अनुसार ही इन्हें शुभ–अशुभ फल प्राप्त होगा

दशाफल

मीन लग्न में चन्द्रमा लग्न भाव में होने पर ऐसा जातक चन्द्रमा की महादशा में अपने परिवार तथा स्त्री व पुत्रों से सुख पाने वाला तथा विदेश के कार्यो से अत्यधिक प्रेम करने वाला होता है। ऐसा व्यक्ति अपने स्वभाव से क्रूर, खर्चीला तथा सिर दर्द की पीड़ा से हमेशा ग्रस्त रहता है। तथा अपने भाई और शत्रुओं से झगड़ा करने वाला होता है।

चन्द्रमा द्वितीय भाव होने पर

मीन लग्न में चन्द्रमा द्वितीय भाव में मंगल की मेष राशि पर स्थित होने से

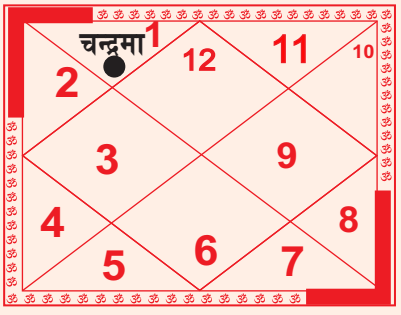

ऐसे जातक को अपने परिवार विशेष का हमेशा सुख मिलता है। तथा उनके धन में हमेशा वृद्धि होती है। अत: चन्द्रमा की सप्तम दृष्टि से शुक्र की तुला राशि वाले अष्टम भाव को देखने के कारण ऐसे जातकों का उनका सामान्य जीवन बहुत ही उल्लासपूर्ण व आनन्दमय बना रहता हे। तथा इनकी पुरानी जमीन–जायदाद या संपत्ति में वृद्धि होती है तथा इनकों आयु का लाभ मिलने के कारण इनको हर प्रकार की छोटी–बड़ी सुखों की प्राप्ति होती है।

दशाफल

मीन लग्न में चन्द्रमा द्वितीय भाव में होने पर चंद्रमा की महादशा में ऐसे जातक को कुल की अवस्था के अनुसार ही धन की प्राप्ति के योग बनतें है। यदि जातक किसी कारणवश साधारण कुल में पैदा हुआ हो तो भी इन्हें विशेष धन लाभ होता है तथा परिवार का सुख भी इन्हें प्राप्त होता है। यदि चन्द्रमा पापग्रह से युक्त हो तो पिता की मृत्यु हो जाती है और जातक की माता को अत्यधिक कष्ट झेलना पड़ता है।

चन्द्रमा तृतीय भाव में होने पर

मीन लग्न में चन्द्रमा तृतीय भाव में शुक्र की वृष राशि पर स्थित उच्च का स्थित होने से जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है। तथा इन्हें भाई–बहनों का स्थित होने

सुख मिलता है। विशेष रूप से ऐसे जातक बोलने में बहुत ही चतुर होते है। तथा उनका चतुर स्वभाव देखते बनता है अत: चन्द्रमा की सप्तम् नीच दृष्टि से मंगल की वृश्चिक राशि वाले भाग्य भाव को देखने से जातक को धर्म के मार्ग में रूकावटों का सामना करना पड़ता है, ऐसे व्यक्ति मिलनसार स्वभाव न होने के कारण यश में भी कमी आती है। तथा उनके भाग्य की उन्नति में विलंब होता है।

दशाफल

मीन लग्न में चन्द्रमा तृतीय भाव में होने पर चन्द्रमा की महादशा में जातक बाह्मण और देवताओं का पूजक भी होता है। ऐसा व्यक्ति धन को भोगने वाला देश–विदेश में पूरा भ्रमण करने वाला होता है तथा इनके भाग्य की उन्नति में हमेशा विलंब होता है।

दशाफल

मीन लग्न में चन्द्रमा तृतीय भाव में होने पर चन्द्रमा की महादशा में ऐसा जातक ब्राह्मण तथा देवताओं का पूजक होता है। यह धन को भोगने वाला व देश–विदेश में भ्रमण करने वाला होता है

चन्द्रमा चतुर्थ भाव में होने पर

मीन लग्न में चन्द्रमा चतुर्थ भाव में होन पर अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित होने से ऐसे जातक को

भूमि–भवन का उत्तम सुख प्राप्त होता है इसके साथ–साथ माता का श्रेष्ठ सुख प्राप्त होता है। तथा ऐसे जातक का रहन सहन भी काफी अच्छा होता है। तथा उच्च स्तर का होता है। चन्द्रमा की सप्तम् दृष्टि से गुरू की धनु राशि वाले दशम् भाव को देखने के कारण इनको मान–सम्मान की भी प्राप्ति होती है। ऐसा जातक अपने बुद्धि और बल से चतुराई पूर्वक अपने व्यवसाय की उन्नति करने में सफल होता है।

दशाफल

मीन लग्न में चन्द्रमा चतुर्थ भाव में होन पर चन्द्रमा की महादशा में ऐसे जातक को धन व खेती के कार्य में भी वृद्धि होती है। ऐसा जातक कलाओं की रचना करने वाला वन और पर्वत में रहने का इच्छुक होता है। तथा गुप्त रोग से ऐसा व्यक्ति पीड़ित होता है।

चन्द्रमा पंचम भाव में होने पर

मीन लग्न में चन्द्रमा पंचम भाव में अपनी ही कर्क राशि पर स्थित होने

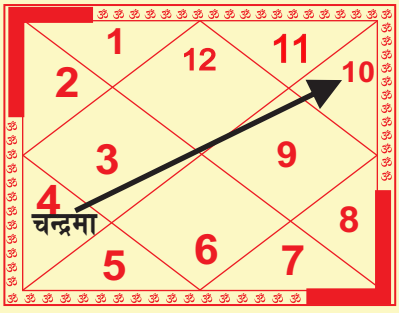

से ऐसे जातक को संतान के क्षेत्र में सफलता मिलती हे। और विद्या के लिए बुद्धि के क्षेत्र में अत्यधिक लाभ मिलता है। अर्थात् चन्द्रमा की सप्तम दृष्टि से शनि की मकर राशि वाले लाभ भाव को देखने से ऐसे व्यक्ति या जातक की आमदनी में अत्यधिक उन्नति और वृद्धि होती है। ऐसे जातक को बुद्धि बल का अत्यधिक लाभ मिलता है। तथा ऐसे जातक अपने जीवन में सारें सुखों की प्राप्ति करतें हुए जीवन बिताता है।

दशाफल

मीन लग्न में चन्द्रमा पंचम भाव में होने पर चन्द्रमा की महादशा में जातक को धन के साथ–साथ उत्तम मान–प्रतिष्ठा की प्राप्ति भी होती है तथा ऐसा व्यक्ति अपने मान–सम्मान के द्वारा ही बहुत ही अच्छा जीवन यापन करता है।

चन्द्रमा षष्ठम भाव में होने पर

मीन लग्न में चन्द्रमा षष्ठम भाव में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित होने से ऐसे जातक के मनोबल में अत्याधिक वृद्धि होती है। तथा इनका बुद्धि–बल दिन प्रतिदिन बढ़ता रहता है। अनको ऐसे में अपने

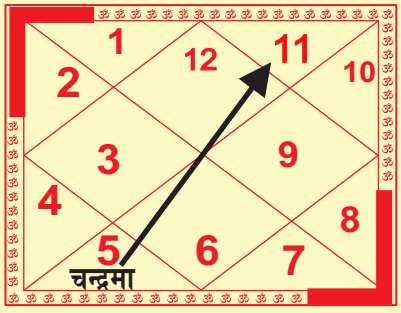

संतान पक्ष से कष्ट मिलने की संभावना रहती है। तथा विद्या अध्ययन के क्षेत्र में भी इन्हें परेशानी आती है। अत: चन्द्रमा की सप्तम् दृष्टि से शनि की कुंभ राशि वालें द्वादश भाव को देखेने के कारण तथा इन्हें खर्च की अधिकता रहनें के कारण ऐसा जातक जातक मानसिक तौर पर हमेशा परेशान रहता है। तथा ऐसे जातकों को बाहरी स्त्रोतों से भी त्रुटिपूर्ण लाभ मिलता हैं।

दशाफल

मीन लग्न में चन्द्रमा षष्ठम भाव में होनें से चन्द्रमा की महादशा में ऐसा जातक विदेश यात्रा करता है, इनको स्त्री की प्राप्ति होती है तथा शिल्प के कार्यों में बुद्धि की प्रवृत्ति भी होती है। व इन्हें अल्प धन की प्राप्ति होने के योग भी बनतें है।

चन्द्रमा सप्तम भाव में होने पर

मीन लग्न में चन्द्रमा सप्तम भाव में मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित होने से ऐसे जातक को अनके व्यवसाय में लाभ मिलता हे। इनका व्यवसाय बढ़ता है। तथा इन सभी में ऐसे जातकों के लिए इनके प्रगति के मार्ग खुल जातें है। विद्या–बुद्धि के

क्षेत्र में ऐसे जातकों की विशेष तरक्की होती है। चन्द्रमा की सप्तम् दृष्टि से गुरू की मीन राशि वाले प्रथम भाव को देखने के कारण ऐसे जातकों के शारीरिक सौन्दर्य में भी वृद्धि होती है। इन जातकों का यश व प्रभाव बढ़ता है तथा मान–सम्मान की प्राप्ति भी होती है।

दशाफल

मीन लग्न में चन्द्रमा सप्तम् भाव में होने पर तथा इस पर चन्द्रमा की महादशा होने पर ऐसे जातकों का मन चंचल होता हे। तथा धन की कमी होने के साथ–ही–साथ इनके उत्साह में भी कमी आती है।

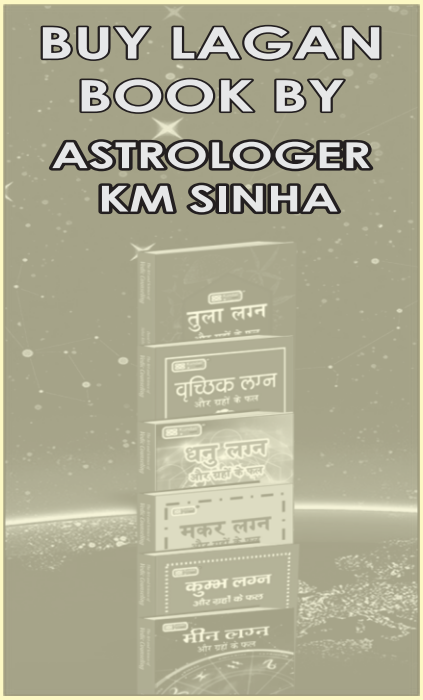

चन्द्रमा अष्टम भाव में होने पर

मीन लग्न में चन्द्रमा अष्टम भाव में मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित

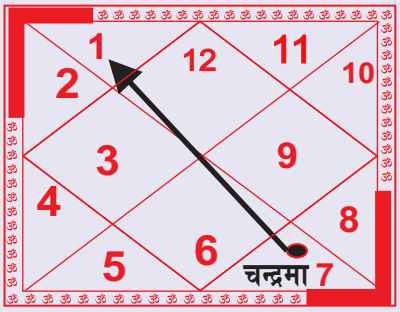

होने से जातकों के विद्या में कमी आती है, तथा किसी भी स्थिति में इन्हें संतान का सुख नहीं मिलता है। चन्द्रमा की सप्तम दृष्टि से मंगल की मेष राशि वाले द्वितीय भाव को देखने के कारण ऐसे जातक को पारिवारिक सुख की प्राप्ति होती है। फलतः अनेकानेक साधनों द्वारा इन जातकों के धन में वृद्धि होती है तथा इनकी प्रतिष्ठा भी अधिक होती है।

दशाफल

मीन लग्न में चन्द्रमा अष्टम भाव में होने पर चन्द्रमा की महादशा में जातक शरीर से रूग्ण होता है। इनके प्रतिष्ठा में कमी आती हे। तथा ऐसे जातकों को मानसिक रूप से चिन्ता लगी रहती हे। यदि ऐसा चन्द्रमा अष्टम भाव में हो तो ऐसा जातक रोगाक्रांत रहता है। यदि ऐसे जातकों की कुण्डली में पाप ग्रह भी हो तो इन्हे हमेशा मृत्यु भय होने के संकेत भी होते हैं।

चन्द्रमा नवम् भाव में होने पर

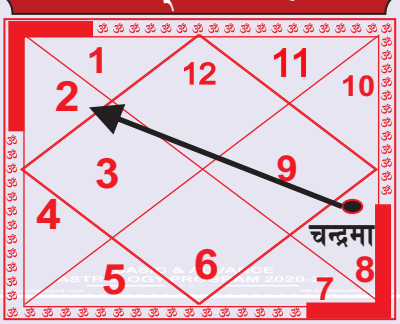

मीन लग्न में चन्द्रमा नवम् भाव में मंगल की वृश्चिक राशि पर नीच का स्थित होनें से ऐसे जातकों के भाग्य की उन्नति में रूकावटें पैदा करता हैं। इनके धर्म के रास्तें में हमेशा बाधायें आती है। जिसके कारण इनसे धर्म का पालन नहीं हो पाता है। चन्द्रमा की सप्तम् उच्च दृष्टि से शुक्र की वृष राशि वाले तृतीय भाव को देखनें के कारण जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है। ऐसा जातक पुरूषार्थ करनें वाला तथा बहुत ही हिम्मतवाला होता है। जिसके कारण इनकों भाई–बहनों का साथ हमेशा मिलती है।

दशाफल

मीन लग्न में चन्द्रमा नवम् भाव में होने पर चन्द्रमा की महादशा में ऐसे जातक को क्रय–विक्रय में हमेशा लाभ होता है, इनकों कार्य की क्षति होती हे। इनकों अपने मित्रों से थोड़े सुख की प्राप्ति होती है। इनको अर्जित किए हुए धन का विनाश और अन्यत्र स्थान में सुख–सौभाग्य की वृद्धि भी होती है।

चन्द्रमा दशम् भाव में होने पर

मीन लग्न में चन्द्रमा दशम् भाव में तथा गुरू की धनु राशि में स्थित होने

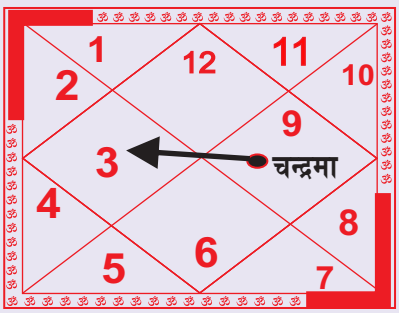

से ऐसे जातक को पिता का सुख हमेशा मिलता हे। ऐसे व्यक्ति कानून का पालन करनें वाले व्यक्ति होतें हे। तथा अत्यधिक विद्वान भी होने है। चन्द्रमा की सप्तम दृष्टि से बुध की मिथुन राशि वालें चतुर्थ भाव को देखने के कारण इनको माता का सुख प्राप्त होता है। भूमि, भवन और मकान के मामले में इनको श्रेष्ठ लाभ मिलता है। ऐसा जातक खूब धनी व भाग्यशाली होता है। तथा इनकों हर प्रकार के सुखों की प्राप्ति होती है।

दशाफल

मीन लग्न में चन्द्रमा दशम् भाव में होने पर चन्द्रमा की महादशा में ऐसे जातक को अपने पुत्रों से अत्यधिक सुख प्राप्त होता है। तथा धन की आपार वृद्धि होती है। ऐसे व्यक्ति का हमेशा बात करें तो यह हमेशा गैस तथा बादी नामक बीमारीयों से इनका शरीर दुर्बल रहता है।

चन्द्रमा एकादश भाव में होने पर

मीन लग्न में चन्द्रमा एकादश भाव में शनि की मकर राशि में स्थित होने से जातक के बुद्धिमान तथा दृढ़ मनोबल

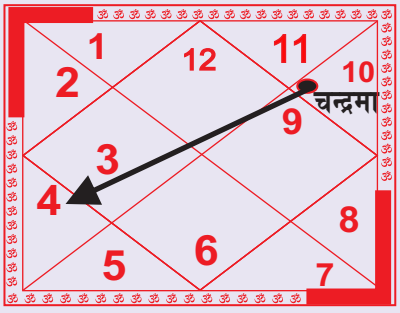

से ऐसे व्यक्ति के आमदनी से जबरदस्त वृद्धि होती है, लेकिन धन की वृद्धि के बाद भी जातक के मन में फिर भी कुछ असंतोष बना रहता है। चन्द्रमा की सप्तम दृष्टि से अपनी ही कर्क राशि के पंचम् भाव को देखने के कारण ऐसा जातक स्वार्थी तथा अपने प्रगति का ख्याल करने वाला होता है, ऐसा जातक विशेष रूप से अपनी विद्या, बुद्धि तथा अपने संतान पक्ष की उन्नति के लिए निरन्तर प्रयत्न करतें रहतें है।

दशाफल

मीन लग्न में चन्द्रमा एकादश भाव में होने पर चन्द्रमा की महादशा में ऐसा जातक अनेक प्रकार से दु:खी होता है तथा ऐसा व्यक्ति कर्जदार तथा दूर देश में यात्रा करने वाला होता हे। यदि ऐसा चन्द्रमा चलित या नवांश वर्गोत्तम हो तो वह अपनें से बड़े लोगों के साथ विरोध स्त्री पुत्र धन और मित्रादि से दूर होने की संभावना रहती है तथा दांत एवं मुख में इनके हमेशा पीड़ा होती है।

चन्द्रमा द्वादश भाव में होने पर

मीन लग्न में चन्द्रमा द्वादश भाव में शनि की कुंभ राशि पर स्थित होने से ऐसे जातक के खर्च में हमेशा अधिकता

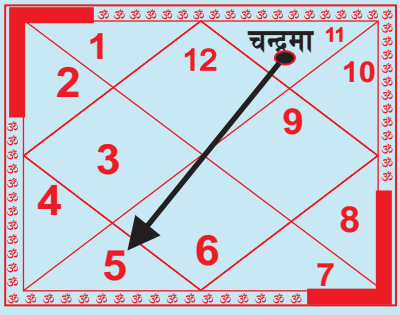

रहती है तथा इनको बाहरी स्थानों व संसाधनों से लाभ प्राप्त होता है। चन्द्रमा की सप्तम् दृष्टि से मित्र सूर्य की सिंह राशि वालें षष्ठम भाव को देखने के कारण इनके शत्रु पक्ष के झगड़े–झंझटों से लाभ मिलता है ऐसा जातक अपनें बुद्धि बल से अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त करता है तथा इनके ऊपर शत्रुओं का विशेष प्रभाव रहता है।

दशाफल

मीन लग्न में चन्द्रमा द्वादश भाव में होने पर चन्द्रमा की महादशा में होने पर ऐसे जातक को जल से उत्पन्न कार्यों से धन का अत्यधिक लाभ होता हे। तथा इनको स्त्री व पुत्र से सुख की प्राप्ति होती है ऐसे जातक शत्रुओं का विनाश करतें और इनके बुद्धि की निरन्तर वृद्धि होती रहती है तथा ऐसा जातक स्वयं ही यशस्वी व बुद्धिमान होता है।

गुरू

लक्ष्पति बनाने वाला प्रमुख दशम् भाव

मीन लग्न में कर्मेश होता है गुरू

दशम भाव धनवान बनाने हेतु सर्वप्रथम कर्म भाव बली होकर सक्रिय होना आवश्यक होता है। मीन लग्न में दशम भाव का अधिपति गुरू होता है और प्रत्येक भाव में गुरू की स्थिति से क्या–क्या फल मिलते हैं। आइए इसकों हम जानतें है।

गुरू लग्न भाव में होने पर

मीन लग्न में गुरू लग्न भाव में होने पर अपनी ही मीन राशि पर स्थित होने से जातक के प्रभाव में हमेशा वृद्धि होती है। व्यक्ति के शारीरिक सौन्दर्य में बढ़ोत्तरी होती है तथा पिता से इनको सदैव मान सम्मान मिलता हे और अत्यधिक सुख की प्राप्ति होती है। गुरू की पंचम उच्च दृष्टि से पंचम भाव को देखने के कारण संतान पक्ष से इनको सुख की प्राप्ति होती है गुरू की सप्तम दृष्टि से सप्तम भाव को देखने के कारण जातक को सुन्दर स्त्री की प्राप्ति होती है। स्त्री का सुख मिलता हे इनके व्यवसाय की भी अत्यधिक वृद्धि होती है। गुरू की नवम् दृष्टि से नवम् भाव को देखने से जातक के भाग्य की उन्नति होती है तथा ऐसे जातको के धार्मिक क्रिया–कलापों में रूचि जाग्रत होती है, इनके धर्म की उन्नति होने के कारण ऐसा जातक अपना सम्पूर्ण जीवन ऐशोआराम से बीताता है।

मीन लग्न में गुरू की दशा

मीन लग्न में गुरू कर्मेश और लग्नेश

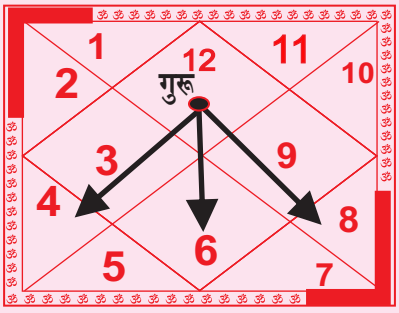

होता है और यह जन्म कुण्डली में किस भाव में स्थित उसका भी विशेष महत्व है। ऐसे में जब भी गुरू की दशा आएगी धन योग का फला मिलेगा लेकिन दशा के अनुसार ही शुभ और अशुभ फल प्राप्त होता है।

दशाफल

मीन लग्न में गुरू लग्न भाव में होने पर गुरू की महादशा होने पर जातक को विशेष धन का लाभ होता है ऐसा व्यक्ति बहुत से लोगों का नायक होता हे। तथा यह स्त्री एवं पुत्र आदि के सुख से हमेशा सम्पन्न होता है।

गुरू द्वितीय भाव में होने पर

मीन लग्न में गुरू द्वितीय भाव में मंगल की मेष राशि पर स्थित होने से ऐसे जातक को परिवार

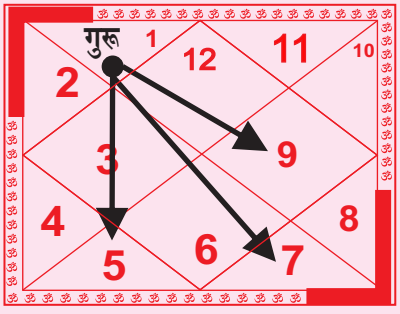

का सुख हर समय मिलता रहता है, गुरू की पंचम दृष्टि से षष्ठम भाव को देखने के कारण ऐसा जातक अपने पैसों के बल पर शत्रु पक्ष पर अपना प्रभाव स्थापित करता है। तथा उनके आपस के झगड़े–झंझटों से लाभ प्राप्त करता है।, गुरू की सप्तम् दृष्टि से अष्टम भाव को देखने से इनको आयु से संबन्धित लाभ प्राप्त होतें है। तथा ऐसे जातकों का रोजमर्रा का जीवनकाल प्रभावपूर्ण बना रहता है। गुरू की नवम् दृष्टि से दशम् भाव को देखने के कारण इनके व्यवसाय में तीव्र गति से लाभ मिलता हे। ऐसे व्यक्ति को राज्य से मान–सम्मान की प्राप्ति होती हे। तथा पिता का भरपूर सहयोग मिलता हे। यह जातक धनी तथा सुखी बनकर अपना सम्पूर्ण जीवन ऐशोआराम से बीताता है।

दशाफल

मीन लग्न में यदि गुरू का द्वितीय भाव में होने पर गुरू की महादशा में ऐसा जातक अत्यंत दुखी, आनन्दरहित, धनहीन, विदेशवासी ओर साहसी भी होता है।

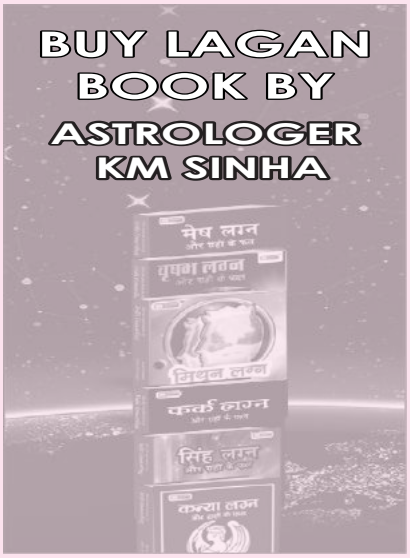

गुरू तृतीय भाव में होने पर

मीन लग्न में गुरू तृतीय भाव में शुक्र की वृषभ राशि में स्थित होने पर ऐसे जातक को थोड़े वैमनस्थ के साथ ही भाई-बहनों का सुख मिलता हे। कुण्डली में गुरू की पंचम दृष्टि से सप्तम भाव को देखने के कारण इनको दैनिक

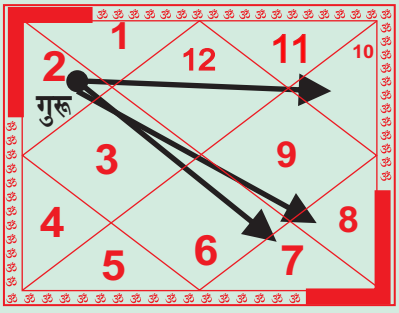

व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है। तथा स्त्री पक्ष से सुख व सहयोग मिलता है। गुरू की सप्तम दृष्टि से नवम् भाव को देखने के कारण इनके भाग्य की उन्नति होने के साथ-साथ इनके धर्म में भी उन्नति होती है। गुरू की नवम् नीच दृष्टि से इसके एकादश भाव को देखने के कारण इनके आमदनी में हमेशा रूकावटें आती है। तथा लाभ की प्राप्ति में कमी आती है। ऐसे जातक के जीवन स्तर की बात करे तो इनका जीवन स्तर पहले की अपेक्षा सामान्य रहता है।

दशाफल

मीन लग्न में गुरू तृतीय भाव में होने पर गुरू की महादशा में ऐसे जातक का ध्यान उनकी शारीरिक पवित्रता की ओर सदैव रहता है। इनको स्त्री से कलह, माता और कुटुंबजनों से विरोध तथा विष आदि से संताप रहता है।

गुरू चतुर्थ भाव में होने पर

मीन लग्न में गुरू चतुरार्थ भाव में बुध की मिथुन राशि में स्थित होने से ऐसे जातक को माता का सुख

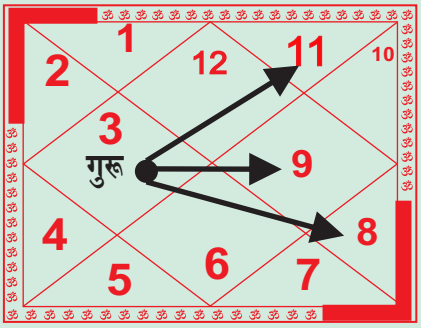

हमेशा प्राप्त होता है तथा इनको भूमि–भवन का श्रेष्ठ सुख मिलता है। अत: गुरू की पंचम दृष्टि से अष्टम भाव को देखने के कारण इनकी पुरानी संपत्ति व जायदाद में अचानक से वृद्धि में इनकों अत्यधिक लाभ मिलता है। गुरू की नवम् दृष्टि से द्वादश भाव को देखने के कारण तथा खर्च की अधिकता के कारण ऐसे जातक के मन में असंतोष रहता है। तथा बाहरी स्थानों व संसाधनों से संपर्क होने पर भी यह संपर्क मन मुताबिक नहीं रहता है।

दशाफल

मीन लग्न में गुरू चतुर्थ भाव में होने पर गुरू की महादशा में कुल पर प्रधानता, नाम की ख्याति और बड़े लोगों से मित्रता होती है व वैभव होता है

गुरू पंचम भाव में होने पर

मीन लग्न में गुरू पंचम भाव में चन्द्रमा की कर्क राशि पर उच्च का स्थित होने से ऐसे जातक को विद्या–बुद्धि का उत्तम लाभ मिलता है। गुरू की पंचम दृष्टि से भाग्य भाव को देखने के कारण इनको धर्म की उन्नति होती हे। तथा जातक बहुत ही भाग्यशाली होता है। गुरू की सप्तम नीच दृष्टि से एकादश भाव को देखने के कारण इनके आमदनी के मार्ग में

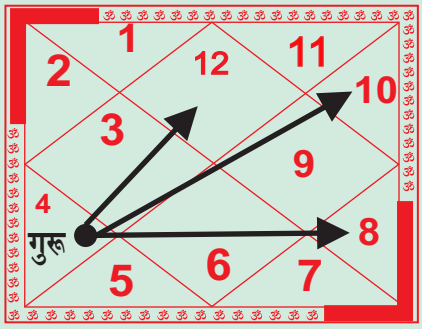

रूकावटें आती है। तथा लाभ की मात्रा भी कम होती है। गुरू की नमव दृष्टि से उसके प्रथम भाव को देखने के कारण जातक के शारीरिक सौन्दर्य में वृद्धि होती है तथा जातक का प्रभाव बढ़ता है साथ ही साथ उनके मान–प्रतिष्ठा में भी बढ़ोत्तरी होती है तथा जातक का जीवन सुखी से बीतता है।

Kundali expert
How to Join
"ASTROLOGY COURSE "

Get Information
Broucher
WEEKEND CLASSES
Only Through Mobile APP
Download KUNDALI EXPERT Mobile APP
Google Play App Store

दशाफल

मीन लग्न में गुरू पंचम् भाव में होने पर गुरू की महादशा में जातक धनवान्, दाता, राज–प्रतिष्ठित और स्त्री पुत्र तथा अपने भाईयों से प्रसन्न रहता है।

गुरू षष्ठम भाव में होने पर

मीन लग्न में गुरू षष्ठम भाव में सूर्य कि सिंह राशि पर स्थित होने से ऐसे जातक के शारीरिक सौंदर्य तथा स्वास्थ्य के क्षेत्र में कमी महसूस होती है अत: गुरू की

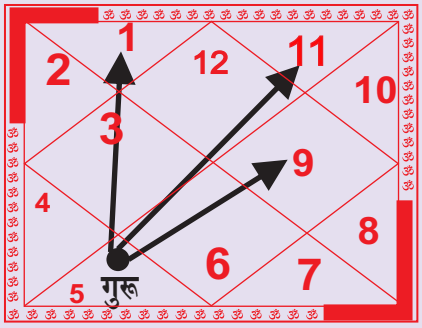

पंचम् दृष्टि से दशम भाव को देखने के कारण इनको पिता का सुख मिलता हे। तथा इनके व्यवसाय में सफलता प्राप्त होती है। गुरू की सप्तम दृष्टि से द्वादश भाव को देखने के कारण बाहरी संपर्को व स्त्रोतों में असमंजस की स्थिति बनी रहती है। कुण्डली में गुरू की नवम् दृष्टि से द्वितीय भाव को देखने के कारण ऐसे जातकों को परिवार का श्रेष्ठ सुख प्राप्त होता है तथा धन की विशेष रूप से वृद्धि होती है।

दशाफल

मीन लग्न में गुरू षष्ठम भाव में होने पर गुरू की महादशा में ऐसा जातक मान प्रतिष्ठा और सरकारी सम्मान पाने वाला व्यक्ति होता है, तथा यह स्त्री और अपने पुत्र आदि से सुखी होता है। तथा निम्न वर्गो से उसका कलह भी होता है।

गुरू सप्तम भाव में होने पर

मीन लग्न में गुरू सप्तम भाव में बुध की कन्या राशि पर स्थित होने

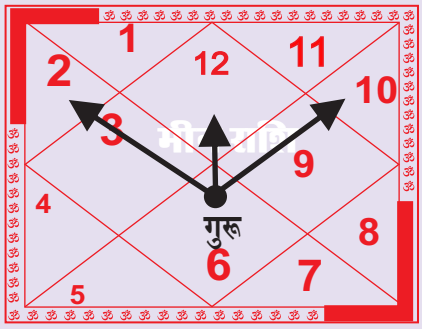

से ऐसे जातक को सुन्दर तथा गुणवती स्त्री मिलती है। गुरू की पंचम नीच दृष्टि से एकादश भाव को देखने क ऐसे जातक के शारीरिक सौन्दर्य में वृद्धि होती है। तथा इनमें लोगों को आकर्षित करने की क्षमता होती है। गुरू की नवम् दृष्टि से उसके तृतीय भाव को देखने से ऐसे जातक के पराक्रम में विशेष वृद्धि होती है तथा इनके भाई–बहनों को श्रेष्ठ शक्ति मिलती है।

दशाफल

मीन लग्न में गुरू सप्तम भाव में होने पर गुरू की महादशा में ऐसा जातक, अविवेकी, उत्साहरहित, स्त्री–पुत्रों से शत्रुता करने वाला और कम मात्रा में भोजन करने वाला होता है।

गुरू की अष्टम भाव में होने पर

मीन लग्न में गुरू अष्टम भाव कें शुक्र की तुला राशि पर स्थित होने से जातक को पुरानी संपत्ति का लाभ मिलता है। तथा इनके आयु में भी वृद्धि होती है। गुरू की पंचम दृष्टि से द्वादश भाव को देखने से बाहरी संसाधनों के मामलें में असमंजस की स्थिति हमेशा बनी रहती हे गुरू की सप्तम दृष्टि से द्वितीय भाव

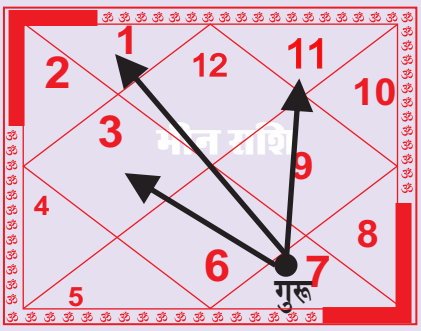

को देखने के कारण इनके पारिवारिक जीवन में हमेशा सुख की वृद्धि होती है। अत: गुरू की नवम् दृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने के कारण ऐसे जातकों को भूमि और भवन का विशेष सुख प्राप्त होता है। साथ ही साथ इनके माता को भी सुख की प्राप्ति होती है।

दशाफल

मीन लग्न में गुरू अष्टम भाव में होने पर गुरू की महादशा में जातक कार्य करने में समर्थ, विद्वान बुद्धिमान, विनीत ओर ऋणरहित होता है। ऐसे जातक को पुत्र का सुख प्राप्त होता है। परन्तु ऐसा जातक अव्यवस्थित चित वाला होता है।

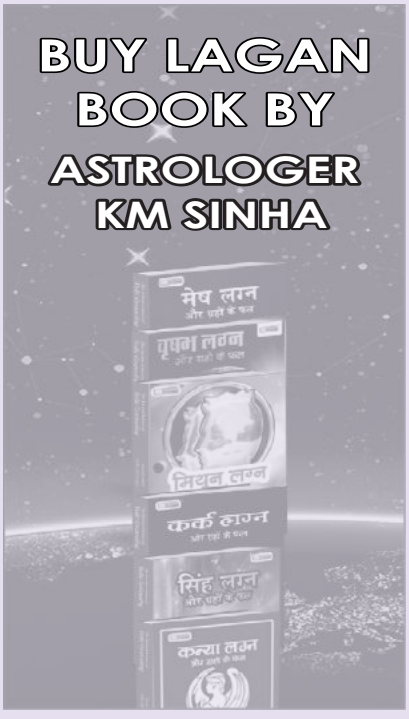

गुरू नवम् भाव में होने पर

मीन लग्न में गुरू नवम भाव में मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित होने से ऐसे जातक के

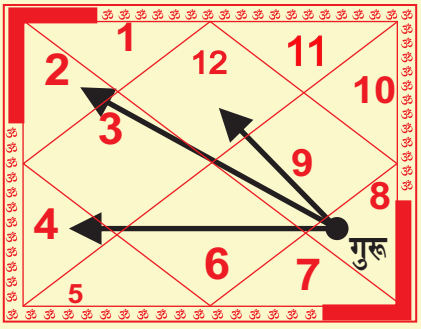

भाग्य की वृद्धि होती है। इसके साथ–साथ इनको धर्म में रूचि भी जाग्रत होती है। गुरू की पंचम दृष्टि से उसके प्रथम भाव को देखने के कारण जातक के सौंदर्य में वृद्धि होती है। तथा व्यक्ति के स्वाभिमान तथा जातक का प्रभाव बढ़ता है। गुरू की सप्तम दृष्टि से तृतीय भाव को देखने के कारण जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है। तथा इनके भाई–बहनों के सुख में पर्याप्त सफलता मिलती है। गुरू की नवम् उच्च दृष्टि से पंचम भाव को देखने के कारण इन्हें संतान से सुख की प्राप्ति होती है। ऐसा जातक वाणी का धनी, सत्य बोलने वाला, तथा प्रभावशाली व्यक्ति होता है। तथा यह कुल के अत्याधिक शौकिन भी होते है।

दशाफल

मीन लग्न में गुरू नवम् भाव में होने पर गुरू की महादशा में जातक राजा, मण्डलाधीश अर्थात जमीदार अथवा राज्य के मंत्री और स्त्री के वचनों का पालन करने वाला होता है। ऐसे जातक को कुण्डली में यदि तेरह अंश से आगे गुरू हो तो ऐसा जातक अपने कृषि कार्य में मन लगाने वाला होता है। चौपायों से उसे हमेशा सुख होता है। ओर यज्ञादि उत्तम कार्यों में ऐसे जातकों की अभिरूचि होती है।

गुरू दशम् भाव में होने पर

मीन लग्न में गुरू दशम् भाव में होने पर अपनी ही धनु राशि पर स्थित होने से ऐसे जातक को व्यवसाय में विशेष लाभ प्राप्त होता है। गुरू की पंचम दृष्टि से

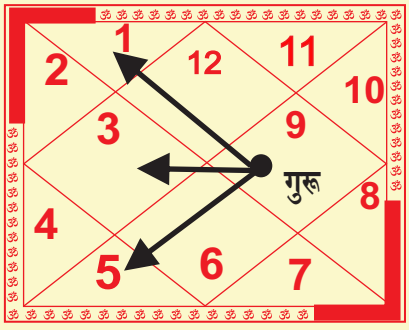

द्वितीय भाव को देखने के कारण उनके परिवार में उन्नति होती है तथा इनके आय में विशेष रूप से वृद्धि होती है। गुरू की सप्तम दृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने के कारण ऐसे जातकों को भूमि ओर भवन का श्रेष्ठ सुख मिलता है। तथा उनके माता को हर परिस्थिति में लाभ प्राप्त होता है। गुरू की नवम् दृष्टि से षष्ठम भाव को देखने के कारण यह हिम्मतवाला तथा बहादुर होता है। जिसके कारण वह सुख संपन्न होकर जीवन बीताता है।

दशाफल

मीन लग्न में गुरू दशम् भाव होने पर गुरू की महादशा में ऐसे जातक को धन की क्षीणता और बंधुजनों से वियोग होता है। और यह अन्य किसी मनुष्य का कार्य करने वाला होता है। तथा ऐसे जातक को पेट या गुप्त स्थान में रोग होता है।

गुरू एकादश भाव में होने पर

मीन लग्न में गुरू एकादश भाव

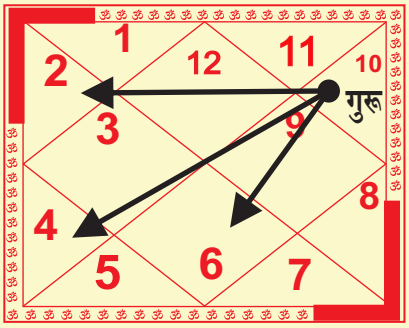

में शनि की मकर राशि पर नीच का स्थित होने से ऐसे जातक की आमदनी में गिरावट आती है। गुरू की पंचम दृष्टि से तृतीय भाव को देखने के कारण जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है। तथा इनके भाई–बहनों के सुख में सामान्य रूप से वृद्धि होती है। गुरू की सप्तम् उच्च दृष्टि से पंचम भाव को देखने के कारण इन्हें भूमि–भवन का सुख प्राप्त होता है। तथा माता का सुख भी पूर्ण रूप से इन्हें मिलता है। गुरू की सप्तम दृष्टि से षष्ठम भाव को देखने के कारण शत्रु पक्ष पर इन्हें सफलता मिलती है गुरू की नवम् दृष्टि से अष्टम भाव को देखने के कारण पुरानी संपत्ति व जायदाद की वृद्धि होती है तथा इन्हें आयु का लाभ हर समय मिलता है।

दशाफल

मीन लग्न में गुरू यदि द्वादश भाव में हो तो गुरू की महादशा में ऐसा जातक पुत्र स्त्री आदि से सुख की प्राप्ति करता है। ऐसा व्यक्ति सरकार से धन प्राप्त करने वाला, बुद्धिमान तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति होता है।

शनि

लक्ष्मीपति बनाने वाला प्रमुख एकादश भाव

मीन लग्न में लाभेश होता है शनि

देखा जाए तो कर्म व भाग्य का परिणाम लाभ है। बिना लाभ सेवा हो सकती हे। व्यक्ति धनी नहीं बनता है। अतः धन किसी मार्ग से आएगा। कौन सी दिशा से आएगा, लाभ देने वाले का स्वरूप क्या होगा, यह कुण्डली का एकादश भाव तय करेगा। तो आइए जानतें है कि मीन लग्न में लाभ भाव का अधिपति शनि प्रत्यके भाव में स्थित होकर क्या–क्या फल देता है, आइए जानतें है–

शनि लग्न भाव में होने पर

मीन लग्न शनि लग्न भाव में अपने शत्रु की मीन राशि पर स्थित होने से ऐसे जातक के शारीरिक सौन्दर्य तथा स्वास्थ्य में कमी आती है। इनको बहुत से अनावश्यक खर्च रहने के कारण खर्च रहने के कारण खर्च की अधिकता इनको अत्यधिक रहती है। शनि की तृतीय मित्र दृष्टि से तृतीय भाव को देखने के कारण जातक के पराक्रम में उतार–चढ़ाव का दौर हमेशा बना रहता है। शनि की सप्तम दृष्टि से सप्तम भाव को देखने के कारण ऐसे जातक को अपने व्यवसाय से लाभ और हानि होने की आशंका रहती है। शनि की दशम् दृष्टि से उसके भाग्य भाव को देखने के कारण व्यवसाय से इनको अत्यधिक संघर्ष का सामना करना पड़ता है। ऐसे जातकों को राज्य से परेशानी रहती है। तथा अपने पिता के उदार स्वभाव होने के कारण असंतोषपूर्ण रवैया बना रहता है।

मीन लग्न में शनि की महादशा

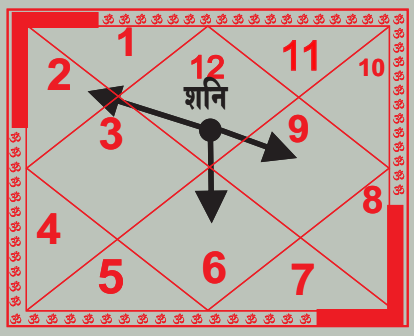

मीन लग्न में यदि ऐसा देखा जाए तो शनि लाभेश और व्ययेश होता है। और जन्म कुण्डली में यदि किसी भाव में स्थित है, उसका भी यहां विशेष महत्व है। अतः जब भी शनि की दशा आयेगी इन्हें धन योग का फल मिलेगा लेकिन दशा के अनुसार ही इन्हें शुभ या अशुभ फल की प्राप्ति होगी।

दशाफल

मीन लग्न में शनि लग्न भाव में होने पर शनि की महादशा में अनेक दुखों से पीड़ा रूधिर प्रकोप अर्थात् चर्मरोग अदि और ऊँचे में गिरने पर ऐसे व्यक्तियों को अत्यधिक पीड़ा होती है।

शनि द्वितीय भाव में होने पर

मीन लग्न में शनि द्वितीय भाव में शत्रु मंगल की मेष राशि पर नीच का स्थित होने से इनको पारिवारिक सुख आशानुरूप नहीं मिलता है। ऐसे जातकों को धन संचय करने में अत्यधिक कठिनाईयां व रूकावटें आती है। शनि की तृतीय मित्र दृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से ऐसे जातक को माता का सुख संतोषपद बना रहता हे। तथा भूमि भवन आदि के सुख में उतार–चढ़ाव लगे रहतें हैं। शनि की सप्तम उच्च मित्र दृष्टि से उसके अष्टम भाव को देखने के कारण पुरानी संपत्ति या जायदाद में इनको लाभ होता है। शनि की दशम् दृष्टि से अपनी ही राशि में एकादश भाव को देखने के कारण ऐसे जातक की आमदनी बहुत अच्छी रहती है, उसके बाद भी इनसे धन का संचय नहीं हो पाया और इनके खर्चे बहुत ज्यादा होते है।

शनि के तृतीय भाव में होने पर

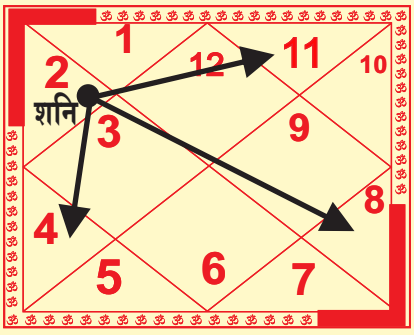

मीन लग्न में शनि तृतीय भाव में अपने मित्र शुक्र की वर्ष पर स्थित होने से ऐसे जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है । शनि की तृतीय दृष्ट से से पंचम् भाव को देखने के कारण जातक को विद्या–बुद्धि के क्षेत्र में कमी रहती है। तथा सन्तान से अत्याधिक मतभेद रहतें है। शनि की सप्तम दृष्टि से भाग्य भाव को देखने के कारण इनके भाग्य की उन्नति में कमी रहती है। तथा धर्म का पालन करनें में इनकों कठिनाई आती है। शनि की दशम् दृष्टि से स्वाराशि वाले द्वादश भाव को देखने के कारण खर्च की अधिकता रहती हे। इनका पैसा अनावश्यक कार्यों में व्यय होता हे। परन्तु बाहरी संपर्को व साधनों से जातक को हमेशा लाभ मिलता है।

दशाफल

मीन लग्न में शनि तृतीय भाव में होने पर शनि की महादशा में ऐसा जातक परोपकारी, हास्य–विलास वाला और चोरी, स्त्रीजन से कलह तथा मुक–दमेबाजी से धन का लाभ करने वाला होता है।

शनि चतुर्थ भाव में होने पर

मीन लग्न में शनि चतुर्थ भाव में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित होने से ऐसे जातको को

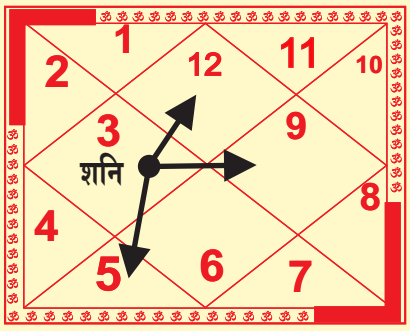

भूमि और भवन का मिश्रित सुख मिलता हे। शनि की तृतीय दृष्टि से षष्ठम भाव को देखनें के कारण शत्रु–पक्ष से इनको परेशानी उठानी पड़ती है। तथा लाभ–हानि का स्थिति बनी रहती है। शनि की सप्तम दृष्टि से दशम् भाव को देखने के कारण इनको अपने व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है तथा इनमें अने बाधाएं आती रहती है।

शनि की दश दृष्टि से प्रथम भाव को देखने के कारण जातक के स्वास्थ्य में कुछ गिरावट होती है। जिससे की इनका शारीरिक सौन्दर्य भी प्रभावित होता है लेकिन जातक को अपने बाहरी संसाधनों से लाभ मिलता है।

दशाफल

मीन लग्न में शनि चतुर्थ भाव में होने पर शनि की महादशा में स्त्री–पुरूष और मित्रादि से मन, चंचल, कान और नेत्र में पीडा होती है। तथा ऐसा व्यक्ति अपने शरीर से अत्यधिक कमजोर भी होता है।।

शनि पंचम भाव में होने पर

मीन लग्न से शनि पंचम भाव में शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित होनें से विद्या–बुद्धि के क्षेत्र में भी कुछ बाधाओं के साथ उनकी वृद्धि व उन्नति होती हे।

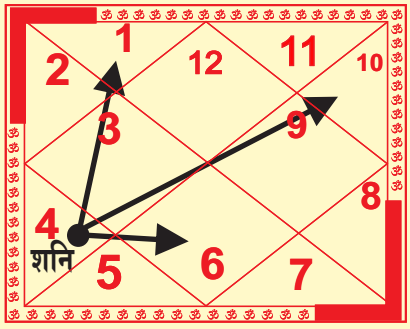

शनि की तीसरी मित्र दृष्टि से सप्तम् भाव को देखने के कारण स्त्री पक्ष से सुख तथा दु:ख की प्राप्ति होती है। शनि की सप्तम् दृष्टि से स्वाराशि वाले एकादश भाव को देखने के कारण बाहरी स्थाने संसाधनों व संबंधों से ऐसे जातक को निरन्तर लाभ होता रहता है। शनि की दशम् नीच दृष्टि से तृतीय भाव को देखने के कारण ऐसे जातक को अपने परिवार से अशांति मिलती तथा है। तथा गृह क्लेश की स्थिति हमेशा बनी रहती है। तथा जातक द्वारा धन संचय की शक्ति में हमेशा वृद्धि होती है तथा इनकों आमदनी अच्छी होती है।

दशाफल

मीन लग्न में शनि पंचम भाव में होने पर शनि की महादशा में होने पर ऐसे जातक को बाधाएं होती है। स्त्री पुत्रादि से हमेशा कलह होने की संभावना बनी रहती है। तथा दास–दासी और पालतू जानवरों को हमेशा कष्ट होता है।

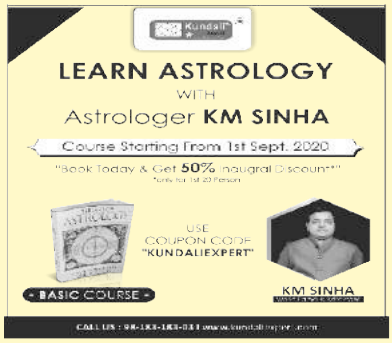

शनि यदि षष्ठम् भाव में होने पर

मीन लग्न में शनि यदि षष्टम भाव में शत्रु सूर्य की सिंह राशि

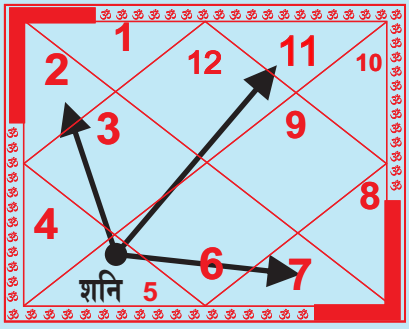

पर स्थित होने से ऐसा जातक प्रभावशाली बनता है। तथा शत्रु पक्ष पर यह अत्याधिक प्रभाव रखता है। इन जातको का पैसा बीमारी आदि से हमेशा खर्च होता है। तथा जातक के स्वास्थ्य में भारी गिरावट महसूस होती है। शनि की तृतीय दृष्टि से अष्टम भाव को देखने के कारण व्यक्ति के पुराने संपत्ति में वृद्धि होती है इनके आयु में अत्याधिक वृद्धि होती है। तथा ऐसा जातक दीर्घ जीवी होता है। अत: शनि की सप्तम् दृष्टि से स्वराशि वाले द्वादश भाव को देखने के कारण जातक को खर्च की अधिकता ज्यादा रहती है। लेकिन उनके बाहरी संपर्को व साधनों से आय प्राप्ति इनको होती रहती है तथा इनकी आमदनी बढ़ती रहती है। शनि की दशम् मित्र दृष्टि से तृतीय भाव को देखने के कारण जातक के पराक्रम में तीव्र वृद्धि होती हे। लेकिन ऐसे जातक को अपने भाई बहन के सुख में हमेशा कुछ ना कुछ कमी मिलती रहती है।

दशाफल

मीन लग्न में शनि षष्ठम् भाव में होने पर शनि की महादशा में यह जल वृक्ष, उन्नत परदेश और अपने कर्म द्वारा व्यक्ति को अत्याधिक धन तथा आनन्द की प्राप्ति होती है।

शनि सप्तम् भाव में होने पर

मीन लग्न में शनि सप्तम् भाव में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित होने से ऐसे जातक को

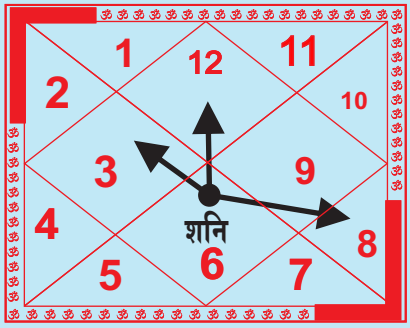

व्यवसाय के क्षेत्र में लाभ–हानि लगी रहती है। तथा स्त्री का भी मिश्रित सुख भी मिलता है ऐसे जातको का पैसा अनावश्यक खर्च होता है। जिसके कारण इनको धन एकत्रित करने में कमी आती है शनि की तृतीय दृष्टि से नवम्भाव को देखने के कारण ऐसे जातक को अपने धर्म का विशेष रूप से पालन करने में कुछ बाधाएं आती है। शनि की सप्तम् दृष्टि से लग्न भाव को देखने के कारण जातक का शरीर अस्वस्थ रहता है तथा इनके स्वास्थ्य में गिरावट होती है। शनि की दशम् दृष्टि से इनके चतुर्थ भाव को देखने के कारण ऐसे जातक को भूमि–भवन के सुख में कुछ बाधायें और रूकावटें आती है तथा माता के सुख में हानि ओर लाभ का दौर ऐसे ही चलता रहता है।

दशाफल

मील लग्न में शनि सप्तम् भाव में होने पर शनि की महादशा में उत्तम लक्ष्मी की प्राप्ति, उच्च स्तर के वाहन, स्वर्ण लाभ एवं चित्त में दया का उदय होता है।

शनि अष्टम् भाव में होने पर

मीन लग्न में शनि अष्टम भाव में

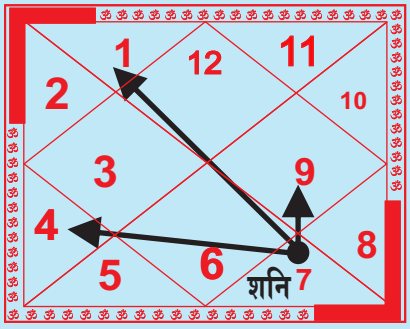

मित्र की तुला राशि में उच्च का स्थित हो तो ऐसा जातक की पुरानी संपत्ति में वृद्धि होती है तथा इनके आयु में भी वृद्धि होती है। तथा ऐसे जातक दीर्घजीवी होते है। शनि की तृतीय दृष्टि से इनके दशम् भाव को देखने के कारण इनके व्यवसाय के क्षेत्र में लाभ होने पर की मात्रा कम रहती है। शनि की सप्तम् नीच दृष्टि से शत्रु की मेष राशि वाले इनके द्वितीय भाव को देखने के कारण ऐसे जातक को परिवार से मिलने वाले सुख में कमी रहती है शनि की दशम् दृष्टि से पंचम् भाव को देखने के कारण इनके संतान के सुख में कमी आती है, इनके विद्या–वृद्धि के क्षेत्र में कमी आती हे। तथा जातक हमेशा सोच विचार करता रहता है। जिसके कारण अत्यधिक चिन्ता का भाव हमेशा बना रहता है।

दशाफल

मीन लग्न में शनि यदि अष्टम भाव में हो तो शनि की महादशा में ऐसा जातक साहस के साथ काम करनेवाला, बेकार भ्रमण

करनेवाला कृपण स्वभाव वाला, झूठ बोलने वाला, नीच संगतिवाला तथा निर्दयी होता है।

शनि नवम् भाव में होनें पर

मीन लग्न में शनि नवम् भाव में शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर

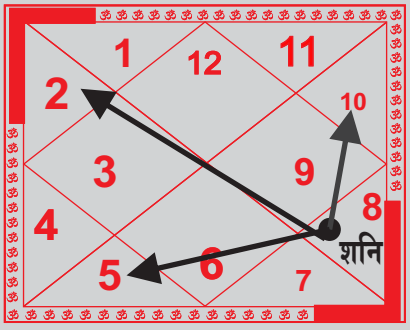

स्थित होने से ऐसे जातक से धर्म का पालन कम होता है। शनि की तृतीय दृष्टि से अपनी ही राशि वाले एकादश भाव को देखने के कारण इन जातकों की आमदनी काफी हद तक अच्छी रहती है शनि की सप्तम् दृष्टि से तृतीय भाव को देखने के कारण जातक के पराक्रम से थोड़ी कमी होती है। साथ ही साथ इनके भाई बहनों के सुख में भी कुछ कमी रहती है शनि की दशम् शत्रु दृष्टि से षष्ठम भाव को देखने के कारण ऐसा जातक प्रभावशाली होता है।

दशाफल

मीन से शनि नवम् भाव में होने पर शनि की महादशा में मंत्री संग्राम में धैर्ययुक्त, तथा स्त्री पुत्र आदि से सुख की प्राप्ति होती है।

शनि दशम् भाव में होने पर

मीन लग्न में शनि दशम् भाव में शत्रु गुरू की धनु राशि पर

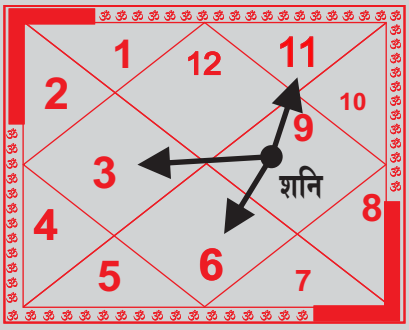

स्थित होने से ऐसे जातक को व्यवसाय के क्षेत्र में बहुत सारी कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। शनि की तृतीय दृष्टि से द्वादश भाव को देखने के कारण भूमि भवन के सुख में थोड़ी कमी आती है। शनि की दशम् दृष्टि से सप्तम् भाव को देखने के कारण इनके व्यवसाय व दैनिक कामकाज के क्षेत्र कभी लाभ और कमी हानि होतें रहतें है। तथा इनके जीवन मे उत्तार–चढ़ाव की स्थिति भी बनी रहती हे। इन्हें स्त्रीयों से काफी परेशानी होती रहती है। और ऐसे जातक के जीवन स्तर में मिश्रित लाभ की स्थिति बनी रहती है।

दशाफल

मीन लग्न में शनि के दशम् भाव में होने पर शनि की महादशा में धन की प्राप्ति बहुत परिश्रम से होती है तथा इनको किसी प्रकार का विश्वासघात मिलने से इन्हे धन का क्षय होता है।

शनि एकादश भाव में होने पर

मीन लग्न में शनि एकादश भाव में अपनी ही मकर राशि पर स्थित होने से ऐसे जातक की आय व आमदनी प्रायः अच्छी रहती है। तथा इन्हें बाहरी संसाधनों से लाभ की प्राप्ति होती है। शनि की तृतीय के लिए कड़ा परिश्रम व कड़ी मेहनत करनी पड़ती हे।

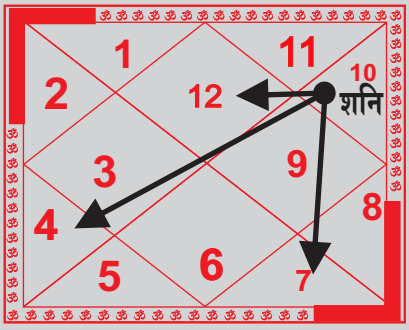

शनि की सप्तम् दृष्टि में इसके पंचम भाव को देखने के कारण विद्या–बुद्धि के क्षेत्र में थोड़ी परेशानी बनी रहती है। संतान का सुख व सहयोग इसमें त्रुटिपूर्ण ही मिलता है।शनि की दशम् दृष्टि से अष्टम् भाव को देखने के कारण जातक की पुरानी संपत्ति में वृद्धि के आसार बनतें है। आयु का पूर्ण लाभ होता है। ऐसा जातक अपना स्वार्थ साधनें वाला तथा अपने स्वभाव में तेज होता है।

दशाफल

मीन लग्न में शनि एकादश भाव में होने पर शनि की महादशा में अनेक सुख और प्रतिष्ठा होती है। इनके कुल में प्रधानता होती है। तथा इन्हें कृषि से लाभ तथा संतान का सुख भी मिलता है।

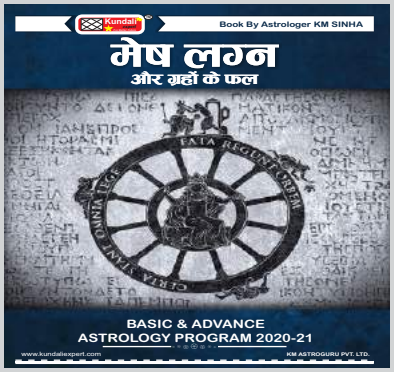

शनि द्वादश भाव में होने पर

मीन लग्न में शनि द्वादश भाव में

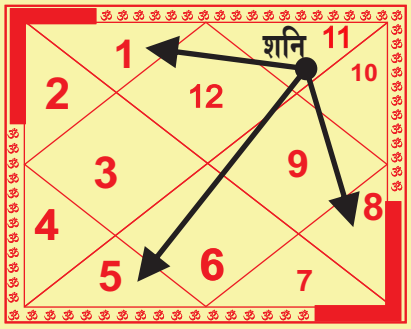

अपनी ही कुंभ राशि पर स्थित होने से ऐसे जातक को बाहरी संबंधों से हमेशा लाभ प्राप्त होता है। तथा खर्च की अधिकता इनको ज्यादा रहती है इनका पैसा कहाँ और किन कामों में खर्च होता है। इसका कुछ अंदाजा इनको नहीं रहता है। शनि की तृतीय नीच दृष्टि से द्वितीय भाव को देखने के कारण परिवार की ओर से अशांति इनके जीवन में बनी रहती है। शनि की सप्तम् शत्रु दृष्टि से षष्ठम भाव को देखने के कारण शत्रु पक्ष पर इनको कुछ कठिनाईयों व बाधाओं में सफलता मिलती है। शनि की दशम् शत्रु दृष्टि से नवम् भाव को देखने के कारण जातक के भाग्य उन्नति में कठिनाइयां आती है। भाग्योन्नति में इनके विलंब होता है। तथा जातको से धर्म का पालन उचित तरीके से नहीं होता है। उसके यश में कमी आती है। तथा इनके मान–सम्मन तथा प्रतिष्ठा में कमी आती है।

दशाफल

मीन लग्न में शनि द्वादश भाव में होने पर शनि की महादशा में

अनेक नगरों का स्वामी तथा स्त्री एवं धन से सुखी होता है परन्तु उत्साहहीन होता है

नवग्रहों का कारकत्व

सूर्य का कारकत्व

सूर्य से विचारणीय विषय

सूर्य आत्मा, शक्ति, तीक्ष्णता, दुर्ग(किला), अच्छा बल, गरमी, प्रभाव, अग्नि, शिव–पूजा, धैर्य, काटेदार वृक्ष, राज्य का आश्रम, कटुता, बुढ़ापा, पशु, दुष्टता, भूमि, पिता, रूचि, ज्ञान, (आत्म साक्षातकार, आकाश की ओर दृष्टि, डरपोक की संतान, नेत्र की बीमारी, शरीर, लकड़ी, मन की पवित्रता, सफल देश पर शासन रोग का अभाव, सिर के रोगी, मोती, आकाश का स्वामी, कद में छोटा, पूर्व दिशा का स्वामित्व, ताँबा,रक्त, राज्य, लाल, कपड़ा, पत्थर , दिखालाकर काम करना नदी का किनारा, दीर्घ समय तक का क्रोध, सात्विक, लाल–चन्दन, शत्रुता, मोटा शरीर। अर्थात यह सब सूर्य के कारक तत्व है। जो भी सूक्ष्म, पवित्र,मौलिक आधारभूत, महान, मूल्यवान तत्व है वह सूर्य के द्वारा ही किसी के भी कुण्डली में प्रतिनिधित्व प्राप्त करतें है। जब हम यह कहतें हे। कि सूर्य 'आत्मा' है तो हमारा तात्पर्य यहाँ यह होता है।

कि सूर्य आत्मा की भाँति ही हमारें जीवन में सूक्ष्तम मर्मिक पदार्थो का सूचक है। वहाँ इसका अर्थ 'स्वयं' अर्थात् अपने आप भी होता है। तो सूर्य का भाग लेना स्वेच्छाकृत या जानबूझकर समझना चाहिए।

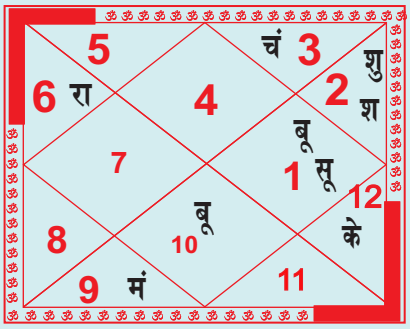

यदि कोई जातक अपने पिता के संबंध में या स्वास्थान के संबंध में जानना चाहता है। तो उसे जन्मकुण्डली में सूर्य ग्रह किस भाव तथा किस राशि में बैठें हुए है। इसकों देखकर यह बताया जा सकता है। जैसे–यदि आपकी कुण्डली में सूर्य नीच का होकर रंध्र भाव में बैठा है या फिर सूर्य पर किसी अशुभ ग्रह की दृष्टि पड़ रहीं है तो निश्चित ही जन्म के समय आपके पिता कोई न कोई परेशानी में होगें । इस तरह से हम सूर्य के कारक तत्वों के बारें में समझतें है। उदाहरण के लिए हम कमाण्डर नानावती की जन्म–कुण्डली जो बम्बई कि 'ब्लिटस, साप्ताहिक पत्रिका में प्रकाशित हुई थी। असल बात यह थी की इस आफिसर की विदेशी स्त्री किसी जवान व्यापारी पर आकृष्ट हो गई थी ओर कमांडर नानावती ने उस व्यापारी की हत्या कर दी थी।

इस जन्मकुण्डली में अगर हम देखे तों यहाँ पर हत्या का योग सूर्य और चन्द्रमा बना रहें है। क्योंकि दोनों स्वयं अथवा निज के प्रतिनिधि है। यह इसमें ध्यान देनें वाली बात यह है। कि चन्द्रपक्ष बल में हीन बली है और लग्नेश है अतः क्रूर स्वयं (self) का प्रतिनिधि हुआ। इसनें सूर्य अर्थात् निज के एक दूसरें प्रतिनिधि से मिलकर शुक्र को पाप मध्यत्व द्वारा पीड़ित किया। जिससे शुक्र की नानवती के द्वारा मृत्यु हुई अत इस कुण्डली में देखेन यह है। कि शुक्र किस बात का प्रतिनिधित्व करता है। चूँकि शुक्र सप्तम भाव का प्रेमी है। या फिर हम यह भी कह सकतें है। कि यह वह व्यक्ति है जिस पर कमाण्डर कि स्त्री आसवत थी। आपको बता दें की कुण्डली का प्रथम् भाव प्रेमी का ही माना गया है। इस प्रकार हम देखतें हे। कि सूर्य या चन्द्र अर्थात निज ने पत्नी के प्रेमी का अन्त किया।

चन्द्रमा का कारकत्व

चन्द्रमा निम्नदिष्ट वस्तुओं का कारक है।

बुद्धि, फूल, सुगन्ध , दुर्ग की ओर जाना, रोग, ब्रह्मण, आलस्य, कफ, मिरगी का रोग, प्लीहा का बढ़ जाना, मानसिक भाव, हृदय, स्त्री, पुण्य–पाप, खटाई, नींद, सुख, जलीय पदार्थ, चाँदी, स्थूल गन्ना, सरदी ,बुखार , यात्रा, कुआं, तालाब, माता, समृष्टि, मध्याहन्न, मोती क्षय रोग, श्वेत रंग, नमक, छोटा कद, मन, शक्ति, बावली हीरा, शरद ऋतु, मुहूर्त, श्वेत वर्ण, उदुर, गौरी की भक्ति, मधु, कृपा, हसी मजाक, मानसिक, शीध्र गति, दही की चाह, रात्रि में बलि, खारी चीजे, काम, धंधे की प्राप्ति पश्चिम दिशा से प्रेम, मध्य आयु जीवन, खाना–पीना, दूर देश गमन, तथा शक्ति, सांप, सिल्क का , कपड़ा चमकीली वस्तु, स्फटिक नरम कपड़ा। अर्थात् चन्द्रमा सब प्रकार की मानसिक भावनाओं, शंकाओं भयवह, वेदनाओं, प्रसन्नताओं, उदासीनताओं आदि का विचार हम चन्द्रमा की जन्मकालीन स्थिति से करेगें।

Kundali expert
How to Join
"ASTROLOGY COURSE "

Get Information
Broucher
WEEKEND CLASSES
Only Through Mobile APP
Download KUNDALI EXPERT Mobile APP
GET IT ON Google Play
Available on the App Store

चन्द्रमा के जन्मकालीन स्थिति के बारें में हम अध्ययन करतें है तो हमें यह बात पता चलती है कि ग्रहों में सबसे तीब्र गति वाला ग्रह चन्द्रमा ही है। जिस दूरी को शनि 21/2 वर्ष चलता है। उस दूरी को चन्द्रमा केवल 21/2 दिन में चलता है। अर्थात् चन्द्रमा का संबंध हमारी भावना से है। कहा यहा भी गया है। चन्द्रमा मनसों जात। ग्रहों में सबसें तेंज गति से चलने वाला ग्रहा चन्द्रमा ही है। और यह आपकों पता होगों की चन्द्रमा मन का कारक होता है। क्योंकि हमारा मन चन्द्रमा की ही भाँति सबसे तेज चलता है। अत: ज्योतिषशास्त्र के अनुसार किसी जातक की कुण्डली में तेजी से किसी चिजों का परिवर्तन होना चन्द्रमा ही माना जाता है। अत: मन के प्रत्येक प्रकार कि स्थिति, प्रसन्नता, खेद, भय–प्रेम द्वेष आदि के बारे में जानना हो तो इसके लिए हम कुण्डली के चन्द्र स्थिति को ही देखतें है। जिस व्यक्तियों के चतुर्थ भाव तथा चन्द्र पर शनि की दृष्टि आदि का प्रभाव रहता है। ऐसे व्यक्ति उदासीन वृत्ति के होतें हे। जिस जातक की जन्म कुण्डली में चतुर्थ भाव तथा चन्द्रमा पर राहु का प्रबल प्रभाव होता है। उनके मन में अत्यधिक भय रहता है। जिन व्यक्तियों का चन्द्रमा क्षीण होकर अष्टम भाव में हो और चतुर्थ भाव तथा चन्द्र पर राहु का प्रभाव हो, और अन्य प्रभाव अशुभ पड़ रहें हों तो ऐसे जातक मिरगी रोग का शिकार होते हे। जिन लोगों का चन्द्र छठे–आठवें आदि भावों में राहु दुष्ट न हो, वैसे पाप दृष्ट हों शुभ दृष्ट न हो तो उनकों रक्त–चाप आदि बिमारियाँ रहती है। जब चन्द्रमा ग्रह दूसरें जलीय तत्वों जैसे शुक्र चतुर्थेश पर प्रभाव डालता है। तो डूबोने आदि से जलीय मृत्यु को दर्शाता है, इन्ही गतिशीलता तथा अपने कलाओं के बार–बार परिवर्तन के कारण ज्योतिषशास्त्र के अनुसार चन्द्रमा को एक चंचल अस्थिर ग्रह माना जाता है। चूँकि चन्द्र एक शीघ्रतम ग्रह है यह ग्रह व्यक्ति के जीवन में शीघ्र आने वाली आयु अर्थात् शिश अवस्था या प्रथम अवस्था का घोतक होता है। यदि कारण है। कि यदि चन्द्रमा किसी जातक की जन्म कुण्डली में अतीव निर्बल तथा पाप दृष्ट हो और उसका लग्न भी निर्बल हो तो 'बालरिष्ट' अर्थात् शिशु अवस्था में ही इनमें मृत्यु का भय होता हे। चन्द्रमा आकाश में प्रत्यक्ष रूप से दिखाई देने वाला शुभ वर्ण है। अत: श्वेत रंग के पदार्थ, कपड़े, चाँदी, मोती, सीपी आदि से चन्द्र का विशेष संबन्ध है। चन्द्रमा क्योंकि मन है। अर्थात जब कोई जातक किसी योग्य ज्योतिषी से अपने मन से सम्बन्धित प्रश्न पूछता है तो ज्योतिषाचार्य उस समय उसकी कुण्डली में चन्द्रमा की स्थिति का अध्ययन करता है।, चन्द्रमा की स्थिति तथा चन्द्रमा पर पड़नें वालें प्रभाव सेव वृच्छक के मन का भाव जान जाता है। और जातक के बिना बताए उसे प्रश्नों की तथा उत्तर को भी बता देता है। यदि चन्द्रमा बलवान् होकर चतुर्थ भाव तथा उसके स्वामी के साथ संबंध स्थापित करे तो ऐसा मनुष्य सर्वसाधारण जनता में प्रिय होता है। यदि किसी जातक को फेफड़ों से संबन्धित रोग है तो इनमें भी चन्द्रमा का ही विचार करना आवश्यक होता है। जब चतुर्थ भाव, उसके स्वामी और चन्द्रमा इन तीनों पर यदि शनि और राहु की युति हो अथवा दृष्टि का प्रभाव हो और से ग्रह किसी शुभ प्रभाव से रहित हो तो टी० बी० का रोग (क्षय) कहना चाहिए। उदाहरण के लिए हम एक उदाहरण ले तो एक लड़के की कन्या लग्न की कुण्डली है और उसमें चन्द्रमा और राहु चतुर्थ भाव में, बुध लग्न में, गुरू तृतीय स्थान में शनि, छठे, केतु दशम् मंगल एकादश तथा सूर्य और शुक्र द्वादश स्थान में स्थित था तो इस लड़के को 16 वर्ष की आयु में ही टी० बी० का रोग हो गया। इस तरह से यहाँ आप देख रहें होगें की कुण्डली में चतुर्थ भाव का स्वामी गुरू तीसरें भाव में शनि की पूर्ण दशम् दृष्टि में है। इस प्रकार चतुर्थ, चतुर्थेश, और चन्द्रमा के राहु तथा शनि द्वारा पीड़ित होने के कारण फेफड़ों का यह भयानक रोग हुआ।

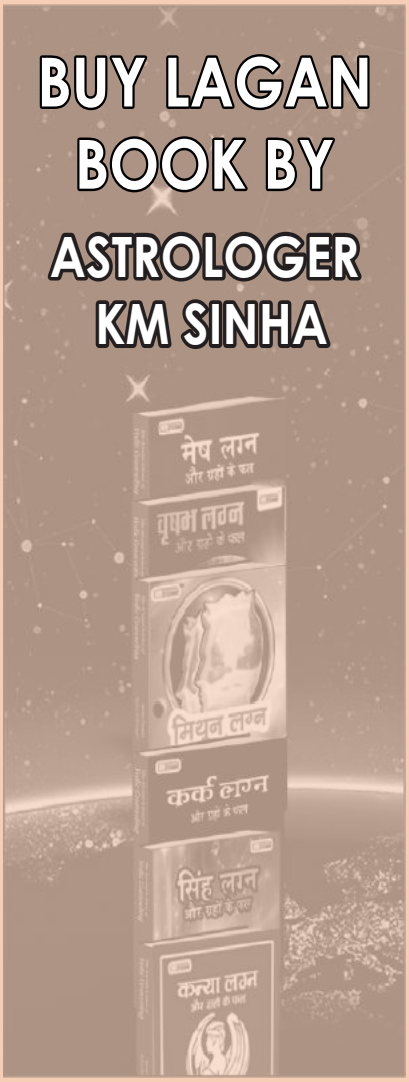

करण और उसके प्रकार

करण के बारें में बात करें तो यह पंचांग का पांचवा अंग है। अत: तिथि के आधे भाग को करण कहतें है। तिथि के पहले आधें भाग को प्रथम करण तथा तिथि के आधें भाग को दूसरा करण कहतें है। इसलिए हम कहतें है। कि एक तिथि में दो करण होते है। करण को हम ऐसे जानतें है। जब सूर्य और चन्द्रमा के मध्य 6 अंश का अन्तर होता है। तो एक करण होता है चन्द्र मास में 30 तिथि और 60 करण होते है। करण कुल 11 है इनमें से सात और चार स्थिर है।

चर करण

1 बव
2 बालव
3 कौलव
4 तैतिल
5 गर
6 वणिज
7 विष्टि (भद्रा)

स्थिर करण

1 शकुनि
2 चतुष्पद
3 नाग
4 किंस्तुघ्न

करण का नाम, स्वामी, कार्य आदि की जानकारी के लिए करण, नाम, स्वामी और कार्य चक्रम् का अध्ययन करना चाहिए।,

करण चक्रम्

तिथि	पूर्वार्ध	उत्तरार्ध	तिथि	पूर्वार्ध	उत्तरार्ध
1	किंस्तुघ्न	बव	1	बालव	कौलव
2	बालव	कौलव	2	तैतिल	गर
3	तैतिल	गर	3	वाणिव	विष्टि
4	वाणिव	विष्टि	4	बव	बालव
5	बव	बालव	5	कौलव	तैतिल
6	कौलव	तैतिल	6	गर	वाणिव
7	गर	वाणिव	7	विष्टि	बव
8	विष्टि	बव	8	बालव	कौलव
9	बालव	कौलव	9	तैतिल	गर
10	तैतिल	गर	10	वाणिव	विष्टि
11	वणिज	विष्टि	11	बव	बालव
12	बव	बालव	12	कौलव	तैतिल
13	कौलव	तैतिल	13	गर	वाणिव
14	गर	वणिज	14	विष्टि	शकुनि
15	विष्टि	बव	15	चतुष्पद	नाग

भद्रा विचार

समस्त करणें में भद्रा का विशेष महत्व कहा गया है। शुक्ल पक्ष 8,15 तिथि के पूर्वाद्ध, 4,11 तिथि के उत्तरार्द्ध में तथा कृष्ण पक्ष 3,10 तिथि के उत्तरार्द्ध और उत्तरार्द्ध में रात्रि भद्रा होती है। पूर्वार्द्ध की भद्रा दिन में और उत्तरार्द्ध की भद्रा रात्रि में त्याज्य है। इसके विपरीत पूर्वाद्ध की भद्रा रात्रि में और उत्तरार्द्ध की भद्रा दिन में समस्त कार्यो में प्रशस्त होती हे। भद्रा का मख्य भाग्य ही त्याज्य करना चाहिए। जबकि पुच्छ भाग सब कार्यो में शुभ फलप्रद है। भद्रा के मुख भाग की पाँच घाटियों (2 घटे) त्याज्य है और पुच्छ की तीन घांटियों (1,2 घंटा अर्थात् 1 घंटा 12 मिनट) शुभ है।

करण नाम स्वामी और कार्य चक्रम्

करण	स्वामी	कार्य
किंस्तुघ्न	वायु	समस्त शुभ कार्य करे।
बव	इन्द्र	व्रतोत्सव, देवालय स्थापना व अर्चनादि शुभकार्य
बालव	ब्रह्म	ब्राह्मण सत्कार एंव परहित ।
कौलव	पितृ	उन्नाद और मित्रता करें।
तैतिल	सूर्य	मांगलिक कार्य ।
गर	भूमि	बीजारोपड़, हल चलाना ।
वणिज	लक्ष्मी	देव प्रतिष्ठा, गृह निमार्ण, दुकान, व्यापार आदि ।
विष्टी	यम	समस्त शुभकार्य वर्जित है, क्रूर कर्म वर्जित नहीं है।
शकुनि	कलि	मित्रोपदेश, औषधि निमार्ण व सेवन और गृह पूजा आदि।
चतुष्पद	वृषभ	पशु सेवा, राज्य पितृ सम्बन्धी कार्य।
नाग	सर्प	सौम्य कर्म, विधाभ्यास, युद्ध में जाना आदि ।

कृष्ण पक्ष की भद्रा को वृश्चिक और शुक्ल पक्ष की भद्रा को सर्पिणी कहतें है। आवश्यक कार्यों में भद्रा का मुख त्याज्य देना चाहिए क्योंकि सर्प के मुख में विष होता है। अत: सर्पित भद्रा का मुख छोड़ देना चाहिए। वृश्चिक के पुछ में विष होता है। इसलिए वृश्चिक भद्रा की पूछा त्याज्य देनी चाहिए।

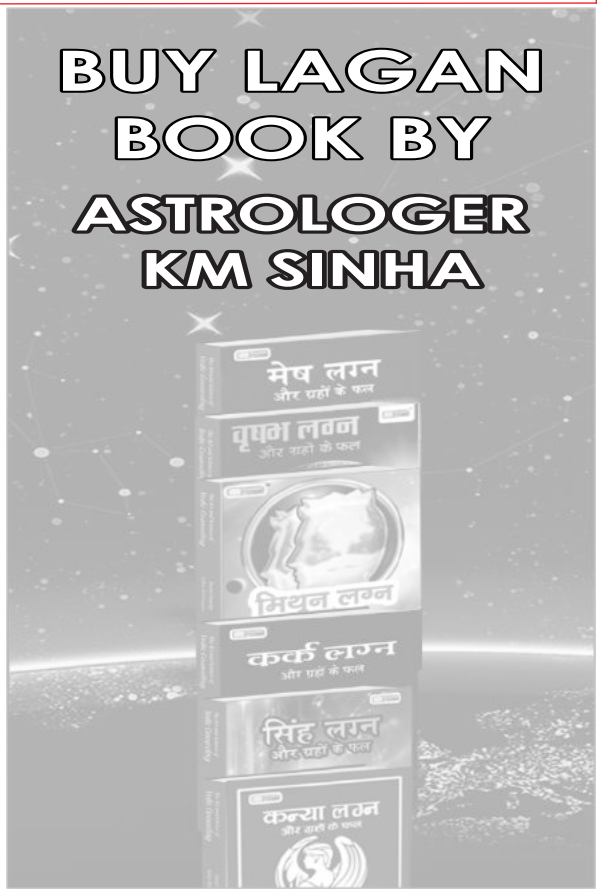

सब्सक्राइब कीजिए भारत की सबसे लोकप्रिय ज्योतिष पत्रिका

ज्योतिष विज्ञान

सफलतम् 1 ला वर्ष — हर अंक में विशेष

केवल ज्योतिष से सम्बन्धित मासिक पत्रिका
ज्येतिष सीखने के लिए अनेक लेख
वर्तमान में राशि परिवर्तन और उसका प्रभाव
महीने के व्रत त्यौहार इत्यादि
राजनीतिक विश्लेषण
अनेक विद्वानों द्वारा ज्योतिषीय विषय पर शोध

सदस्य शुल्क (प्रिंट एडिशन) (TAX सहित)

(साधारण डाक से)

वार्षिक 708
द्विवार्षिक 1298
त्रिवार्षिक 2360
आजीवन 12980

(कोरियर से)

वार्षिक 826
द्विवार्षिक 1416
त्रिवार्षिक 2478

(पंजीकृत डाक से)

वार्षिक 885
द्विवार्षिक 1475
त्रिवार्षिक 2537

सदस्यता शुल्क (डिजिटल एडिशन)

एक प्रति 35
वार्षिक 300

BANK DETAILS :
Name : KM ASTROGURU PVT. LTD.
A/C No. : 628605015394
IFSCE Code : ICICI0006286
Branch Add : R-1/88 RDC Raj Nagar Ghaziabad UP 201002
Type : CURRENT ACCOUNT

सोमवार और शुक्रवार की भद्रा को कल्याणी, शनिवार की भद्रा को वृश्चिकी गुरूवार की भद्राक को पुण्यवती और रविवार, बुधवार व मंगलवार की भद्रा को भद्रिका कहतें है इसमें केवल शनिवार की भद्रा अशुभ मानी जाती है।

भद्रा अंग घटी चक्रम्

भद्रा	मुख	गला	छाती	नाभि	कमर	पुच्छ
घटी	5	1	11	4	6	3
घंटा–मिनट	2–0	0–24	4–24	1–12	2–24	1–12
फल	कार्यहानि	मरण	धनहानि	बुद्धिमान	कलह	विजय

तिभि के अनुसार भद्रा की दिशा भद्रा दिशा चक्रम् के अनुरूप ही समझनी चाहिए। यात्रा में पृष्ठस्थ भद्रा शुभ और सम्मुख दिशा अशुभ होती है। अर्थात् जिस दिशा में भद्रा हो दिशा की ओर यात्रा नहीं करनी चाहिए।

भद्रा दिशा चक्रम्

तिथि	14	8	7	15	4	10	11	3
दिशा	पूर्व	आग्नेय	दक्षिण	नैर्ऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान

भद्रा का निवास चन्द्र राशि से ज्ञात करना चाहिए। भद्रा का निवास चन्द्र राशि के अनुसार ज्ञात करने के निवास चक्रम।

भद्रा निवास चक्रम्

लोक	स्वर्ग	पाताल	मृत्यु लोक
चन्द्र राशि	1, 2, 3, 8	6, 7, 9, 10	4, 5, 11, 12
फल	धन–धान्य लाभ	सुख व धन प्राप्ति	कार्य में असिद्धि

जिस लोक में भद्रा हो उसी लोक में उसका शुभाशुभ फल होता है। अगर यह भद्रा मृत्युलोक में हो तो मृत्यु लोक वासियों के लिए बहुत ही अशुभ होती है। और इसमें काय में असिद्धि होती है। देखा जाए पाताल में भद्रा शुभ हो तो यह व्यक्ति को धन–धान्य का लाभ करानें वाली होती है। यदि अपना भला चाहतें हे। तो कोई भी कार्य भद्रा में नहीं करना चाहिए। युद्ध में, राज दर्शन, बैध बुलाने में , जल में तैरने में शत्रुओं के उच्चाटन में, स्त्री सेवा में, यद्य करनें में और गाड़ी की सवारी में भद्रा का विचार करकें नहीं करना चाहिए। मीन संक्रांति में भद्रा में दोष नहीं लगता है।

अर्थात यह पूर्ण रूप स्पष्ट है कि चन्द्रमा प्रशस्त हो तो तिथि नक्षत्र, कारण, वर और योगों का दोष नाश हो तो समस्त दोषों का नाश हो जाता है और ऐसे लोगों की कार्य–सिद्धि भी हो जाती है।

गृह मुहूर्त विचार

भूमि पर जितने भी मानव प्रजाति है। उनकों घर की महत्ता ज्ञात है। अतः यह बात सबकों

पता है कि घर के बिना किसी कार्य की सिद्धि नहीं होती है। इसलिए सबसे पहलें गृह निर्माण से लेकर गृह प्रवेश तक के सभी मुहूर्त की चर्चा इस शीर्षक के अन्तर्गत करेगें।

भूमि विचार जब कभी भी हमें भवन निर्माण करने का निर्णय लेतें है। तो सबसे पहले हमें भूमि की आवश्यकता होती है। और भूमि चार प्रकार की होती है। आइए इसको हम देखतें है।

ब्राह्मणी भूमि ब्राह्मणी भूमि की बात करें तो श्वेत वर्ण की मिट्टी (भूमि) को ब्राह्मणी कहतें है अर्थात् जिस भूमि में कुश उत्पन्न होता हो तो वह ब्राह्मणी भूमि होती है। इस भूमि में भवन निर्माण करने तथा इसमें रहनें वाले लोग सभी प्रकार से सुखी रहतें हे। विशेष रूप से ब्राह्मणों के लिए यह भूमि शुभ होती है।

क्षत्रिया भूमि रक्त वर्ण की मिट्टि (भूमि) को क्षत्रियों कहतें है। जिस भूमि में सरपत उत्पत्र हो तो वह क्षत्रिय भूमि होती है। इस भूमि में वास करने से राज्यलाभ होता है। और क्षत्रियों के लिए यह भूमि विशेषकर शुभ होती है।

वैश्य भूमि वैश्य मिट्टी की बात करें तो हरित वर्ण की मिट्टी (भूमि) को वैश्य कहतें है जिस भूमि में कुशलता व सरपत आदि सभी धान्य उत्पन्न होते हो वह वैश्य भूमि होती है। अतः इस भूमि में पास करने से धन व धान्य का लाभ होता है। विषयों के लिए यह भूमि विशेषकर शुभ होती है।

शुद्रा भूमि शुद्रा भूमि की बात करें तो श्याम वर्ण की मिट्टी (भूमि) को शूद्र कहतें है जिस भूमि में अनेक प्रकार के तृण उत्पन्न होतें है तो वह शुद्रों के लिए विशेषरूप से यह भूमि शुभ रहती है।

निम्नोन्नता भूमि विचार–ईशान कोण निम्नोंत्रता भूमि विचार और ईशान कोण की ओर झुकी हुई भूमि सुख–सम्पत्ति का कारक होती है, अतः पूर्व दिशा में झुकी हुई भूमि उन्नति का कारक होती है। अग्निकोण की ओर झुकी हुई भूमि अग्नि के भय का कारक होती है, नैऋत्य कोण में झुकी हुई भूमि गृह नाश का कारक होती है, पश्चिम दिशा की ओर उन्नत अपयश का कारक होती है, वायु कोण को ओर उन्नत भूमि उद्वेग कारक और दक्षिण दिशा की ओर उन्नत भूमि मृत्यु–शोक का कारक होती है।

गजपृष्ठ भूमि जो भूमि दक्षिण, पश्चिम, नैऋत्य और वायु कोण होती है। तो उसे गजपृष्ठा भूमि कहतें है । यदि कोई भी जातक इस भूमि पर वास करतें है तो उनमें हमेशा धन–धान्य की वृद्धि होती है और ऐसे भूमि में निवास करने वालें व्यक्ति दीर्घायु अर्थात् लम्बी आयु वाले होते है।

कर्मपृष्ठा भूमि जो भूमि मध्य में उच्च और चारों ओर से नीची हो तो उसे कूर्मपृष्ठ भूमि कहतें है। इस भूमि पर वास करने से अति उत्साह की प्राप्ति होती है, और धन–धान्य और यश में वृद्धि होती है।

दैत्यपृष्ठा भूमि जो भूमि पहले से ली गई है, अग्नि व ईशान कोण और पश्चिम दिशा की ओर नीची हो तो उसे दैत्यपृष्ठा भूमि कहतें है। इस भूमि पर रहने वालें लोगों को कलह होता है और उन्हें दुःख और धन की हानि होती है।

नागपृष्ठ भूमि

जब कोई भूमि पूर्व–पश्चिम दिशा में लम्बी हो और उत्तर–दक्षिण दिशा में उन्नत हो तो उसे नाग पृष्ठा भूमि कहतें है इस भूमि पर रहनें वालें लोगों को सुखों की हानि होती है।

शुभाशुभ भूमि विचार

जब कभी भी हमें अपनी भूमि जिस भी जगह हम बनवाना चाहतें हे। उसका निमार्ण करतें हे। तो उस भूमि पर सूर्यास्त के समय दो फुट चौड़ा और दो फुट गहरा एक चौकोर गड्ढा खोदकर उसमें जल भर दें और जब सुबह जगकर उसी गड्ढे में देखे यदि गड्ढे में जल रहें तो वह शुभ माना जाता है। और अगर जल ना रहे तो अशुभ माना जाता है और यदि गड्ढा फट जाए तो तब भी उसे अशुभ ही समझना चाहिए। इनमें ऊपजाऊ भूमि जीवित और ऊपर भूमि मृत मानी गयी है।

भूमि के क्रय विक्रय का मुहूर्त

तिथि – 2, 5, 6, 10, 11, 15, (दोनो)
वार – गुरूवार, शुक्रवार
नक्षत्र – मृगशिरा, पुनर्वसु, अश्लेषा, मघा, विशाखा, अनुराधा, मूला, रेवती।
लग्न – 2, 5, 8, (केन्द्र एवं त्रिकोण में शुभग्रह एवं 3, 6, 11, वे पापग्रह होना शुभ होना है।

गृह–निर्माणारम्भ मुहूर्त

घर के निर्माण का कार्य शुरू करने से पहले घर की नीव डालने से पहले भूमि–खनन किस दिशा से प्रारम्भ किया जाए यह ज्ञात करना अति आवश्यक होता है। इसको जानने के लिए विशेष रूप से भूखण्ड पर राहु के मुख, उदर एवं पुच्छ का स्थिति ज्ञात करनी होती है अतः इसकी स्थिति सूर्य की राशि के अनुसार परिवर्तित होती रहती है। ज्योतिषशास्त्र में अगर हम वास्तुशास्त्र के अनुसार बात करें तो भूमि खनन करते समय राहु के किसी भी अंग पर गलती से भी प्रहार नहीं होना चाहिए वरना हर स्थिति में भूमि का अनिष्ट होने संभव होता है। हमारे ज्योतिषाचार्य इसलिए आवश्यक रूप से नीवं खोदने के लिए दिशा का विचार सर्वप्रथम बतातें है और यह गृह निर्माण, मंदिर निर्माण तथा कुएं के लिए अलग होता है। अतः यह बता के की राहुमुख से पृष्ठवर्ती दिशा से गृह की नीव खोदनी प्रारम्भ करनी चाहिए।

ईशान दिशा पूर्व और उत्तर के मध्य का कोना होती है।
आग्नेय दिशा पूर्व और दक्षिण के मध्य का कोना होती है।
वायव्य दिशा उत्तर और पश्चिम के मध्य का कोना होती है।
नैऋत्य दिशा पश्चिम और दक्षिण के मध्य का कोना होती है।

देवालय के लिए नीवं की दिशा विचार

सूर्य राशि	राहु मुख
मीन मेष वृष	ईशान कोण
मिथुन, कर्क, सिंह	वायत्य कोण
कन्या, तुला	नैर्ऋत्य कोण
धनु, मकर, कुम्भ	आग्नेय कोण

गृह के लिए नीवं की दशा विचार

सूर्य राशि	राहु मुख दिशा
मेष, कुम्भ, मीन	ईशान कोण
मेष, वृष, मिथुन	वायत्य कोण
कर्क, सिंह, कन्या	नैर्ऋत्य कोण
तुला, वृश्चिक, धनु	आग्येय कोण

सूर्य जिस नक्षत्र में हो उससे सात 5, 7, 9, 12, 19, और 26वें नक्षत्र में भूमि शयन करती हे। भू–शयन वाले नक्षत्रों में गृह की नींव तड़ाग, वापी और कूपदि का खनन नहीं करना चाहिए और गृह निर्माण में निम्नलिखित तथ्यों का विशेष ध्यान रखना चाहिए।

मास

वैशाख, श्रावण, कार्तिक, मार्गशीर्ष, माघ तथा फाल्गुन मास ही शिलान्यास हेतु शुभ मानें जातें है। द्वार दिशा से भी मास चयन करना चाहिए। यदि पूर्व और पश्चिम में द्वार मुख रखना हो तो श्रावण, भाद्रपद, माघ और फाल्गुन मास चुनना चाहिए। यदि आपको अपने घर का द्वार मुख उत्तर या दक्षिण में रखना हो तो वैशाख, ज्येष्ठ कार्तिक, मार्गशीर्ष मास चयन करना चाहिए।

राहु चक्रम्

वास्तु	देवालय	गृह	कुआँ	वास्तु
ईशान	मीन, मेष, वृष	सिंह, कन्या, तुला	मकर, कुम्भ, मीन	आग्नेय
वायत्य	मिथुन, कर्क, सिंह	वृश्चिक, धनु, मकर	मेष, वृष, मिथुन	ईशान
नैर्ऋत्य	कन्या, तुला, वृश्चिक	कुम्भ, मीन, मेष	कर्क, सिंह, कन्या	वायत्य
आग्नेय	धनु, मकर, कुंभ	वृष, मिथुन, कर्क	तुला, वृश्चिक, धनु	नैर्ऋत्य
राहु मुख दिशा	सूर्य राशि	सूर्य राशि	सूर्य राशि	पृष्ठवर्ती दिश

तिथि – 2, 5, 6, 10, 11, 15 (दोनो पक्ष)

वार – चन्द्रवार, बुधवार,गुरूवार, शुक्रवार, शनिवार।

नक्षत्र – रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, उफा, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, उषा, रेवती नक्षत्र। अत: नक्षत्र पर विचार करतें समय भी दिशा के अनुसार नक्षत्र चयन करना भी अधिक शुभ रहता है। पूर्व द्वार (कृतिका, रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा) दक्षिण द्वार (मघा, पूफा, उफा, हस्त, चित्रा, स्वाति, विशाखा), पश्चिम द्वार (अनुराधा, ज्येष्ठा, मूला, पूषा, उषा, अभिजीत्) एवं उत्तर द्वार (धनिष्ठा, शतभिषा, पूभा, उभा, रेतवी, अश्विनी, भरणी) जिस दिशा में जातक को अपना द्वार बनाना हो उस दिशा के कोष्ठक में अंकित दिशा में चन्द्र नहीं होना चाहिए और इनके अतिरिक्त अन्य नक्षत्रों में चन्द्र होने पर अपने घर का शिलान्यास कर सकतें हे।

लग्न

स्थिर लग्न (2, 5, 8, 11) में गृहाराम्भ करना शुभ माना जाता हे। चर नवांश भी नहीं होना चाहिए। केन्द्र एवं त्रिकोण में शुभग्रह एवं 3, 6, 11,वें भाव में पाप ग्रह होना शुभ होता है। लग्न में सौम्य ग्रह स्थित हों या उनको शुभग्रह देख रहें हों। चर लग्न नहीं होना चाहिए। । छठां, आठवां तथा, बारहवां भाव रिक्त होना चाहिए। और दशम भाव भी बलवान होना चाहिए।

गृहारम्भ विचार

जब भी हम घर बनानें के लिए विचार करें तो यह ध्यान जरूर रखें कि सूर्य जिस नक्षत्र में हो तो उससे सात नक्षत्र अशुभ, उसके बाद के ग्यारह नक्षत्र शुभ, उससे अगले नौ नक्षत्र अशुभ होतें है। अतः शुभ नक्षत्र में गृहारम्भ करना चाहिए। इस विचार में अभिजित् नक्षत्र भी सम्मिलित है।

गृहारम्भ चक्रम्

सूर्य नक्षत्र से	प्रथम सात नक्षत्र	अगले ग्यारह नक्षत्र	अगले दस नक्षत्र
फल	अशुभ	शुभ	शुभ

गृहारम्भ में वृष–वास्तु विचार

घर का निर्माण आरम्भ करतें समय शुभ या अशुभ विचार करने के लिए बैल के आकार की परिकल्पना करके उसके प्रत्येक अंग पर सूर्य नक्षत्र से गिनकर नक्षत्र स्थापित करके विचार करें कि गृहारम्भ किस नक्षत्र में बनना शुभ रहेगा। अतः यह ध्यान रखें कि सूर्य स्थित नक्षत्र से प्रथम तीन नक्षत्र सिर पर, इससे अगले चार नक्षत्र पिछले पैरों (पृष्ठ पाद) पर, इससे अगले तीन नक्षत्र पीठ (पृष्ठ) पर, इससे अगले चार नक्षत्र बायीं कृक्षि पर और इससे अगले तीन नक्षत्र मुख पर स्थापित करनें चाहिए। प्रत्येक अंग स्थित नक्षत्रों में गृहारम्भ करनें का फल निम्न रूप से समझें।

- सिर स्थित नक्षत्रों में गृहारम्भ करनें से घर में आग लग जाती है।
- अग्रपाद स्थित नक्षत्रों में गृहारम्भ करनें से घर में शून्यता रहती है।
- पृष्ठपाद स्थित नक्षत्रों में गृहारम्भ करनें से घर में स्थिरता आती है।
- पीठ स्थित नक्षत्रों में गृहारम्भ करनें से घर में धन की वृद्धि होती है।
- दाहिनी कृक्षि स्थित नक्षत्रों में गृहारम्भ करनें से अत्यधिक लाभ होता है।
- पुच्छ स्थित नक्षत्रों में गृहारम्भ करनें से स्वामी का नाश होता है। बायीं कुक्षि स्थित नक्षत्रों में गृहारम्भ करनें से सदैव दरिद्रता रहती है।
- मुख स्थित नक्षत्रों में गृहारम्भ करने से सदैव गृह में रोग, पीड़ा और भय व्याप्त रहता है।

आइए हम वृष–वास्तु का चक्र बनाकर समझतें है।– गृहारम्भ के समय सूर्य नक्षत्र से लेकर सात नक्षत्र अशुभ, आठवें नक्षत्र से अठारहवें नक्षत्र तक शुभ और उसके बाद उन्नीसवें नक्षत्र से अठ्ठाइसवें नक्षत्र तक अशुभ होते है। यहां गणना करते समय अभिजित् नक्षत्र को भी गिनतें है।

Kundali expert
How to Join
"ASTROLOGY COURSE "

Get Information
Broucher
WEEKEND CLASSES
Only Through Mobile APP
Download KUNDALI EXPERT Mobile APP
Google Play App Store

वृषभ के अंग	नक्षत्र	फल
सिर	प्रथम तीन	दाह
अग्रपाद	अगले चार	शून्यता
पृष्ठपाद	अगले चार	स्थिरता
पृष्ठ	अगले तीन	लक्ष्मी प्राप्ति
दक्षिण कुक्षि	अगले चार	लाभ
पुच्छ	अगले तीन	स्वामी का नाश
वाम कुक्षि	अगले चार	दरिद्रता
मुख	अगले तीन	रोग पीड़ा व भय

गृहारम्भ काल में यदि सूर्य किसी कारणवश निर्बल, अस्त या अशुभ भाव में हो तो गृह स्वामी की मृत्यु हो जाती है। यदि किसी कारणवश चन्द्रमा निर्बल, अस्त या अशुभ भाव में हो तो उसकी पत्नी की मृत्यु होती है, गुरू निर्बल, अस्त या अशुभ भाव में हो तो उसके सुख का नाश होता है। और शुक्र निर्बल, अस्त या अशुभ भाव हो तो धन का हमेशा नाश होता है

अत: घर का निर्माण करते समय चन्द्र नक्षत्र (जिस नक्षत्र में चन्द्र हों) या वास्तु नक्षत्र घर के आगे पड़ता हो तो गृहस्वामी घर में नहीं रह पाता और यदि घर के पीछे पड़ता हो तो उस घर में निश्चित रूप से चोरी हो जाती है।

गृह बनवाते समय गुरू लग्न में, सूर्य छठे भाव में, बुध सावतें भाव में, शुक्र चौथे भाव में और शनि तीसरे भाव में स्थित होगा तो उस घर की आयु 100 वर्ष होती है।

यदि शुक्र लग्न में, सूर्य तीसरें भाव में, मंगल छठे भाव में और गुरू पाँचवें भाव में, स्थित हो तो उस घर की आयु 200 वर्ष होती है। यदि गृहारम्भ करतें समय शुक्र लग्न में, बुध दसवें भाव में, सूर्य ग्यारहवें भाव में और गुरू ग्रह केन्द्र में हो तो उस घर की आयु 125 वर्ष होती है।

यदि कोई जातक शुभ ग्रहों के योग होने पर घर का निर्माण हुआ हो तो घर की आयु सौ वर्ष से अधिक होती है और अशुभ ग्रहों के योग से घर की आयु 1–2 वर्ष से अधिक नहीं होती है। जिसके कारण कई ऐसे जातकों को अपना घर बेचना पड़ जाता है।

ग्रह द्वार विचार

घर बनातें समय यह विचार अवश्य करना चाहिए की हमारे गृह–द्वार की दिशा कौन–सी हो? तो यह बात जान ले की सदैव 2, 3, 5, 6, 7, 10, 11, एवं 12 तिथि में बनाए गए द्वार शुभ होतें है। द्वार का निर्माण शुक्लपक्ष में ही करना चाहिए। क्योंकि कृष्णपक्ष में करने से अनिष्ट होता है और सदैव चोरी होने की आशंका बनी रहती है।

गृह–द्वार की दिशा अगर पूर्व में रखनी हो तो पूर्णिमा से लेकर कृष्णाष्ठमी तक, पश्चिम में रखनी हो तो अमावस्या से लेकर शुक्लाष्टमी तक, उत्तर में अगर घर का मुख्य द्वार रखना हो तो कृष्णपक्ष की नवमीं से लेकर चतुर्दर्शी तक की तिथियाँ त्याज्य देनी चाहिए। और दक्षिण में रखनी हो तो शुक्लपक्ष की नवमी से लेकर शुक्ल चतुदर्शी तक की तिथियाँ त्याज्य देनी चाहिए।

सूर्य नक्षत्र से प्रथम चार नक्षत्र सिर पर, अगले आठ नक्षत्र बाजुओं में, अगले तीन नक्षत्र देहली (चौखट) में एवं अगले चार नक्षत्र मध्य में रहतें है। यदि सिर पर नक्षत्र हो तो लक्ष्मी वास करती है, कोनों पर नक्षत्र हो तो घर में उजाड़ हो, बाजुओं में नक्षत्र हो तो सुख होता हे।, देहली में नक्षत्र हो तो स्वामी का मरण होता है। एवं मध्य में नक्षत्र हो तो सुख सम्पत्ति का कारक होता है।

शिलान्यास विचार

घर बनवाना या घर का निर्माण शुरू करतें समय शुभमुहर्त में शिलान्यास करना चाहिए। और भूमि पर सबसे पहले खोदी गयी नींव में आग्नेय कोण में प्रथम शिलान्यास करना चाहिए। वराह के अनुसार प्रथम शिलान्यास के बाद प्रदक्षिण क्रम से दक्षिण , नैऋत्य, पश्चिम, वायत्य, उत्तर, ईशान एवं पूर्व दिशा में शिलाओं का न्यास करना चाहिए। इसी क्रम से स्तम्भ भी गाड़नें चाहिए। यह स्मरणीय है कि शिलान्यास से पूर्व वास्तु पूजा आवश्यक है।

नक्षत्र द्वार चक्रम्

वास्तु पुरूष के अंग	सूर्य नक्षत्र	फल
सिर	प्रथम चार	लक्ष्मी वास
कोण	अगले आठ	उजाड़
बाजू	अगले आठ	सुख
देहली(चौखट)	अगले तीन	स्वामी मरण
मध्य	अगले चार	सुख–सम्पत्ति कारक

चौखट चढ़ाने का मुहूर्त

शुभ तिथि, वार एवं नक्षत्र में ही चौखट चढ़ानी चाहिए।

शुभ तिथि– 5, 7, 8, एवं 9। शुभ वार – सोम, बुध, गुरू एवं शुक्र।

शुभ नक्षत्र– अश्विन, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, तीनों उत्तरा, हस्त, स्वाति, श्रवण एवं रेवती।

नूतन गृह प्रवेश का मुहूर्त

घर बन जानें के बाद उत्तरायण में शुभ मुहूर्त में नूतन गृह में प्रवेश करना चाहिए।

शुभ मास – वैशाख, ज्येष्ठ, माघ और फाल्गुन।

शुभ वार – चन्द्र, बुध, गुरू, शुक्र, और शनि ।

शुभ तिथि – 2, 3, 5, 6, 7, 10, 11व 13, (शुक्ल पक्ष) पूर्वद्वार में गृह प्रवेश में पूर्णा, दक्षिणद्वार में गृहप्रवेश में नन्दा, पश्चिमद्वार में गृहप्रवेश में भद्रा एवं उत्तरद्वार में गृहप्रवेश में जया तिथि शुभ मानी गई है।

शुभ नक्षत्र – रोहिणी, मृगशिरा, उफा, चित्रा, अनुराधी, उषा, उभा और रेवती ।

शुभ लग्न – 2, 5, 8 व 11वीं राशि का लग्न उत्तम है जबकि 3, 6, 9, 12वीं राशि का लग्न मध्यम है।

लग्नशुद्धि अवश्य करें। जन्म राशि या लग्न से 1, 2, 3, 4, 5, 7, 9, 10, एवं 11वें भाव में शुभग्रह 3, 6, 11, वें भाव में पापग्रह हो एवं 4 व 8 भाव ग्रह रहित हों।

गृहप्रवेश के समय सूर्य वाम भाग में हो तो शुभ माना गया है। लग्न ने 8, 9, 10, 11, 12, वें भाव में यदि सूर्य हो तो पूर्वमुख के द्वार वाले घर में, 5, 6, 7, 8, 9, वें भाव में सूर्य हो तो पश्चिममुख के द्वार वाले घर में सूर्य वाम भाग में होता है।

यदि गृहारम्भ करते समय वास्तु–पुरूष का पूजन जातक नें नहीं किया हो तो सविधि गृहप्रवेश करतें समय वास्तु की शान्ति के लिए यज्ञादि करना चाहिए एवं ब्राह्मणों, मित्र व परिजनों को भोजनादि देना चाहिए।

गृहप्रवेश के समय भद्रा सम्मुख या वामस्थ नहीं होनी चाहिए।

जीर्ण गृह प्रवेश का मुहूर्त

यदि किसी कारणवश भयंकर आँधी तूफान आ जाने के कारण घर टूट जानें पर उसी स्थान पर उस घर की मरम्मत कराई हो या दूसरा घर बनाया हो तो उस घर में दोबारा प्रवेश करने के लिए शुभ नक्षत्र, वार, तिथि एवं महीना देख लेना चाहिए।

शुभ मास – वैशाख, ज्येष्ठ, माघ और फाल्गुन। इससे कर्तिक श्रवण, और मार्गशीर्ष मास भी ग्राह्य है।

शुभ वार – चन्द्र, बुध, गुरू, शुक्र और शनि।

शुभ तिथि – 2, 3, 5, 6, 7, 10, 11व 13 (शुक्ल पक्ष)

शुभ नक्षत्र – यदि रोहिणी, मृगशिरा, उफा, चित्रा, अनुराधा, उषा, उभा, और रेवती । ये सारें नक्षत्र न मिलें तो विशेष परिस्थिति में पुष्य, स्वति, धनिष्ठा और शतभिषा नक्षत्र भी प्रवेश के लिए शुभ मानें गए है। यहाँ कलशचक्र शुद्धि की उपेक्षा कर सकतें हे। परन्तु पंचांग चन्द्र एवं लग्न शुद्धि उवश्य करें।

वास्तु–शान्ति मुहूर्त– गृह निर्माण करनें से पूर्ण या गृह प्रवेश करने से पूर्व वास्तु शान्ति अवश्य करवानी चाहिए। इसके लिए शुभ नक्षत्र, वार, एवं तिथि निम्न प्रकार से सारी जानकारी जान लेनी चाहिए।

शुभ वार – चन्द्र, बुध, गुरू व शुक्र ।

शुभ तिथि – 2, 3, 5, 7, 10, 11, 12, व 13 (दोनो पक्ष)।

शुभ नक्षत्र – अश्विनी, पुर्नवसु, पुष्य, हस्त, तीनों उत्तरा, रोहिणी, रेवती, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, स्वाति, अनुराधा एवं मघा।

टिप्पणी – चन्द्र बल, लग्न शुद्धि एवं भद्रा का विचार कर लेना चाहिए।

वृश्चिक राशि

वृश्चिक राशि ज्योतिषशास्त्र के राशि चक्र की आठवीं राशि है। इस राशि का स्वामी मंगल है तथा इसकों पहचानने के लिए इसका स्वरूप बिच्छू जैसा है। इसके नाम अक्षर तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू है इस राशि के लोग बहादुर, भावुक होने के साथ–साथ कामुक भी होते है। इस राशि वाले लोग ज्यादातर दूसरों के विचारों का विरोध करने में लगें रहतें है। कभी–कभी ये आदतें इनके, लड़ाई झगड़े तथा विरोध का कारण भी बन सकती है। वृश्चिक राशि का स्वामी मंगल होता है। जिसके कारण इनका व्यक्तित्व दबंग और क्रोधयुक्त होता है इस राशि जातक स्वभाव से गंभीर, निडर,

और जिद्दी भी होतें है। इनमें बदले की भावना बहुत ही भयंकर घर कर लेती है और अपने विरोधी को अनचाह यह जबरदस्त चोट पहुँचानें का इरादा भी रखतें हे। रोमांटिक रूप में देखा जाए तो ये बेहतर प्रेमी साबित हो सकतें हे। यह सामने वाले की जज्बात को बहुत ही जल्दी पहचान लेते है। इन्हें समझना अत्यन्त ही मुश्किल होता है। तथा जितने भी यह गुस्से स्वभाव के होते है उतना ही यह प्यार लुटाने वाले भी व्यक्ति होते है। जिससे इनके सब गुनाह माफ हो जाते है।

नक्षत्र विशाखा नक्षत्र का चौथा चरण, अनुराधा नक्षत्र के चार चरण एवं ज्येष्ठा नक्षत्र के चार चरण से मिलकर वृश्चिक राशि बनती है।

चन्द्र के अंश	नक्षत्र	चरण	नामाक्षर	राशि नक्षत्र	नक्षत्र स्वामी	योनी	नाड़ी	गण
अंश कला से अंश								
00:00 से 20:00	विशाखा	4	तो	मंगल	गुरू	व्याघ्र	अंत्य	राक्षस
03:20 से 16:40	अनुराधा	1 से 4	ना, नी, नू, ने	मंगल	शनि	मृग	मध्य	देव
16:40 से 30:00	ज्येष्ठा	1 से 4	नो, या, यी, यू	मंगल	बुध	मृग	आघ	राक्षस

इस राशि की आकृत्ति बिच्छु जैसी है। यह राशि प्रेम और आशाक्ति का प्रतीक है। पृथ्वी की विषुववृत रेखा से 12 से 20 अंशों तक इस राशि की व्यक्ति मानी गयी है।

वृश्चिक राशि आलि, अष्टम, कौर्णि, कीट और अंग्रेजी में इस राशि को (स्कारपियों) कहतें है।

विशाखा नक्षत्र के जातक के लक्षण

विशाखा नक्षत्र में जन्म लेने वाली महिलाएं धार्मिक कार्यो में अग्रसर होतें है। यह स्वभाव से नम्र, सत्याभाषी, धनी विद्वान लेखन एवं भाषण कला में विज्ञ, आकर्षण तथा व्यक्ति त्व की धनी रहती है। नीच त्यसनी, लंपट एवं धोखेबाज तथा यह मित्र की संगति से चरित्र तथा इनके ऊपर कलंक लगाने का भय रहता है।

विशाखा नक्षत्र की व्याधियाँ एवं उनमें मुक्ति पानें के उपाय

विशाखा नक्षत्र में जन्म लेने वालें स्त्री–पुरूष आमतौर पर कुक्षिशूल तथा विभिन्न बीमारियों जैसे सरदर्द एवं सर्वपीड़ा के शिकार होते है। तथा इनके जीवन में स्थिरता प्राप्त करने के लिए इनको काफी संघर्ष करना पड़ता है। इनके जीवन में आ रही सब अनिष्टताओं को दूर करने के लिए नीचे मंत्र दिये गये है। निम्न मंत्र का दस हजार बार जाप स्वयं विधिपूर्वक करें या किसी योग्य ब्राह्मण से करवा ले। तथा इस जाप के बाद एक दशांश हवन भी करना अपरिहार्य है।

विशाखा नक्षत्र के चरणों का फलित

प्रथम चरण विशाखा नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म लेने वाले जातक सफल व्यवसायी, फलित ज्योतिष में विशेषज्ञ एवं भोले मन के होते है।

द्वितीय चरण विशाखा नक्षत्र के द्वितीय चरण में जन्म लेने वालें जातक बड़बोले, अपनी ही डींग मारने वालें, जादूगरी करने वाले, हाथ की सफाई में माहिर काम में आतुर रहने वालें, सत्यवादी किन्तु कलहकारी तथा विपरीत गुणों से युक्त रहतें है।

तृतीय चरण विशाखा नक्षत्र के तृतीय चरण में जन्म लेने वाले जातक शरीर से हष्ट–पुष्ट, छोटे कद का वार्तालाप करने वाला, अत्याधिक चतुर परन्तु चरित्रहीन होता है।

चतुर्थ चरण विशाखा नक्षत्र के चौथे चरण में जन्म लेने वाले जातक ऐश्वर्य सम्पन्न होतें है।, बुद्धिमान होते है, वार्तालाप करने वाले एवं चतुर व्यवहार एवं कुशल स्वभाव के होते है।

अनुराधा नक्षत्र के जातक के लक्षण

अनुराधा नक्षत्र में जन्म लेने वाले जातक को प्रवास व पर्यटन का बहुत ज्यादा शौक होता है। यह परोपकारी, सतत् कार्यरत, उदार एवं दयालू होते है तथा ऐसे लोगों को अपने जन्म स्थान से दूर रहना पड़ता है। अत: इनमें बदला लेने की भावना निहित होती है। ऐसे व्यक्तियों को भूख सहन नहीं होती हे। तथा मदिरापान एवं अभक्ष वस्तु का भक्षण करना इनके लिए सहज होता है। ऐसे व्यक्तियों में शत्रुओ को परास्त करने की गजब शक्ति पायी जाती है यह शत्रुओं से कभी घबरातें नहीं है। ऐसे व्यक्ति फौजदारी, वकील सर्जन, ज्योतिषी अभिनेता तेल के व्यापारी, छापारवाना, चालक, फिटर, वेल्डर की हैसियत से अच्छा धन व नाम कमा लेते है।

अनुराधा नक्षत्र की महिलाओं के लक्षण

अनुराधा नक्षत्र में जन्म लेने वाली महिलाएँ स्वार्थी, कपटी, लोभी एवं पेटू स्वभाव की होती है। अत: मांसाहार के प्रिय एवं दूसरों पर अवलंबित रहने वालों को अपने प्रेम जाल में अटकाकर अपना स्वार्थ साधनें में माहिर होती है। ऐसे नक्षत्र की महिलाएं अत्यन्त ही कामातुर होती है तथा इनके अनेकों शारिरीक संबंध होते है और स्वयं की अपनी इनकी चाह होती है।

अनुराधा नक्षत्र की व्याधियाँ एवं उनसे मुक्ति पानें के उपाय

अनुराधा नक्षत्र के स्त्री–पुरूष मधुमेह, ज्वराभास, शिरोव्यथा, अपचन के विकार आदि व्यधियों से घिरे रहतें है। अतिविचार के कारण रक्तचाप का विकार भी इन्हें सताता है इनका जीवन हमेशा संघर्षपूर्ण बना रहता है। तथा इनके जीवन में अनेक प्रकार के उतार–चढ़ाव देखने को मिलते है। इन सभी व्यधियों से मुक्त होनें के लिए नीचे दिये गये मंत्र का दस हजार बार जप स्वयं करके विधिपूर्वक हवन करें, यदि इस मंत्र का दस हजार बार जाप कर सकतें है। तो किसी योग्य ब्राह्मण के द्वारा करवाकर उसे उचित दक्षिणा दें।

"ॐ नमों मित्रस्थ वरूणस्य चक्षसे महादेवाय तदृतगं समर्थत दूरदृतशें देव जाताय केतवे दिवस पुत्राय सूर्यायश गूं सत् ॐ मित्राय नम:।।"

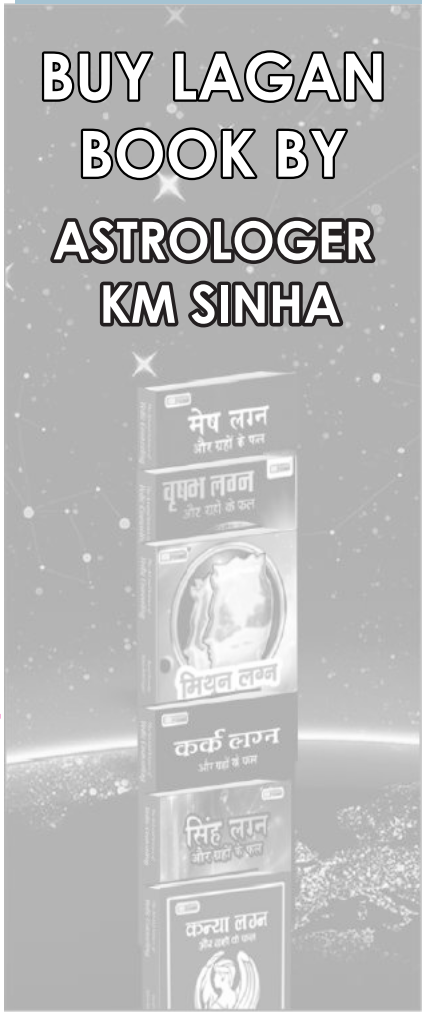

ज्येष्ठा नक्षत्र के जातक के लक्षण

ज्येष्ठा नक्षत्र में जन्म लेने वाले जातक सुन्दर, यशस्वी तथा पारमार्थिक होते है। गरीब परिवार में जन्म होने पर भी ऐसे व्यक्ति पूरूषार्थ एवं परिश्रम से धनवान बनतें है। इस नक्षत्र के जातकों में प्रभावी वकृत्व एवं नेतापन के गुणों के कारण यह समाज के, सोसाइटी के तथा यूनियन के नेता बनतें हे। ऐसे व्यक्ति रात–दिन कार्य में मग्न रहतें है। अत: दो नम्बर के व्यवसायी भी इसी नक्षत्र में जन्में होतें है। इस नक्षत्र में व्यक्ति कैमिकल इंजिनियर टाइपिंग, शार्टहैण्ड का व्यवसाय करनें वालें तथा दो नम्बर के व्यवसायी भी इसी नक्षत्र में जन्में होते है।

ज्येष्ठा नक्षत्र की महिलाओं के लक्षण

ज्येष्ठा नक्षत्र में जन्म लेने वाली महिलाएं झगड़ालू, गुस्सैल, मारामारी करने में हमेशा तत्पर रहती है। पति के बड़ें भाई यानि जेठ के लिए अनिष्ट होती है इनको धार्मिक व्रतों में रूचि रहती है। यह कामातुर रहती है। तथा यह अच्छी शिक्षा प्राप्त करती है।

ज्येष्ठा नक्षत्र की व्याधियां एवं उनसे मुक्ति पाने के उपाय

ज्येष्ठा नक्षत्र में जन्म लेने वालें जातकों को स्त्री–पुरूषों की पित्तरोग कंपन, व्याकुलता एवं मानसिक रोगों से परेशानी रहती है। इन्हें आर्थिक तंगी रहती है। इन अनिष्टताओं के निवारण के लिए इन्द्र की सुवर्ण प्रतिमा तैयार करवा लें। तथा तैयार करवानें के बाद सफेद, चंदन चंपा के पुष्प, कपूर ,धूप, शुद्ध घी का दीया आदि सामग्री से इन्द्र की प्रतिमा का पूजन करें। अत: पूजन जिस दिन ज्येष्ठ नक्षत्र हो उस दिन करना प्रशस्त होता है। और पूजा करने के तुरन्त बाद युवा ब्राह्मणों को तिल, नीले वस्त्र एवं यथा शक्ति दक्षिणा दें। अत: नीचे दिये गये निम्न मंत्र का पाँच हजार बार स्वयं जाप करें या किसी योग्य ब्राह्मण से करवा लें। एक दशांश हवन करें । हवन के लिए अपमार्ग की लकड़ियों का समीधा के रूप में काम में लें।

"ॐ त्रातारमिन्द्र वितारमिन्द्र गूहवें हवे सुहव गूं शूरमिदद्रम।

हवयामि शंक्रपुरहूतामिन्द्र गूं स्वास्तिनों मर्घवाधात्मिद: ॐ शक्राय नम:।।

वृश्चिक राशि के जातकों का भविष्य

वृश्चिक राशि के स्त्री–पुरूष में, सरकारी यंत्रणा से क्लेश, कष्ट प्राप्त होतें है। यह कोर्ट–कचहरी एवं मुकदमे में फंस जातें है ऐसे में इन्हें जुआ, सट्टा लॉटरी में लाभ न होकर हानि होती है। इस तरह की हानि से बचने के लिए इन्हें अनेक प्रकार के व्यवसाय होते है। सच्चे एवं अच्छे मित्र इनके नहीं बनतें हे। अत: कलह–उपद्व यह वृश्चिक जातकों के स्थायी भाव है। वृश्चिक राशि वालें जातकों के स्वास्थ्य की बात करें तों यह बचपन में अपने बहुत बीमार रहुतें है। इनकी छाती एवं इनकी आँखें प्राय: बड़ी रहती है।

इनकों पिता एवं गुरू से पूर्ण सुख प्राप्त नहीं होता है। तथा वृश्चिक राशि वाले व्यक्ति वाद–विवाद में हमेशा अग्रणी रहतें है। वृश्चिक राशि के जातकों के 5, 8, 18, 23, 42, 51, 56, इस उम्र में ऊचाई से नीचे गिरने से क्लेश होता है। तथा इनकी शारीरिक अवस्था भी ठीक नहीं रहती है। और जल से इनको हमेशा भय रहता है। ऐसे व्यक्ति सामाजिक, गीत, नृत्यादि एवं संगति में रूचि एवं शौक रखने वालें मित्रों एवं परिचितों की संख्या बड़ी रहती है। वृश्चिक राशि की अधिकतर महिलाएं सुनयनी एवं आकर्षक मुखड़े की तथा ऊँचे पद की होती हैं। बात करें इनके शिक्षा की तो इनकी शिक्षा आधी–अधूरी रहती है। यह खर्चीले स्वभाव वाली होती है। तथा धर्म में बहुत ही कम श्रद्ध रखने वाली होती है। इनका पति के प्रति सुख मध्यम रहता है। तथा सामाजिक कार्यो में इनकी रूचि ज्यादा होती है।

वृश्चिक राशि के जातकों का अनुभव सिद्ध भविष्य

वृश्चिक राशि वाले जातक अपने परिवार में लड़ाई झगड़े–विग्रह–पैतृक संपत्ति का भोग न मिलना, माता–पिता के सुख से वंचित होना तथा माता पिता के लिए मन में गलत तरह के विचार होना, इस तरह की बाते वृश्चिक राशि के स्त्री पुरूषों में देखने को मिलती है। वृश्चिक राशि वालें जातक में शिक्षा का अभाव इन्हें नहीं खटकता। इनके अन्दर भोग–विलास की प्रबल शक्ति के कारण इनका विपरीत व्यक्तियों से संबंध होते है। यह ऐसे व्यक्ति होते है। जो मृत्युंजय, शत्रंजय, एकांतप्रिय, खर्चिक, जैसे अनेक स्त्रियों से संबंध रखतें है। वृश्चिक राशि के व्यक्ति लेखक, प्रकाशक, वक्ता, ज्योतिषी, डॉक्टर, छापखाने के संचालक, शराब की दुकान रेडियों के दुकानदार, कीर्तनकार, हार्डवेयर एवं पेट्रोलपंप, विमाव्यवसाय, अध्यापन आदि क्षेत्रों में वृश्चिक राशि के जातक हमेशा सफल होते पाये जाते है।

प्रतिकूल

किसी भी साल का मई महीना ।

किसी भी महीने की 1, 5, 15, 25, ये तारीखें। शुक्रवार।

नीला रंग, नीले रंग के कपड़े एवं नीले रंग की अन्य चीजे।

मिथुन, तुला एवं कुंभ राशि के व्यक्ति ।

वृश्चिक राशि के व्यक्तियों के जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं का क्रम

वृश्चिक राशि वालें जातकों का उनके जन्म समय से जीवन के 15 वर्ष की आयु तक अनेक शारीरिक कष्ट सहने होते है।

16 से 22 या 26 से 32 वर्ष की आयु तक के समय में वृश्चिक राशि के जातकों का विवाह होने के योग बनतें है। ओर इस समय के काल में 2/3 स्त्रियों से संबंध होना संभावनीय हे। तथा इस राशि वाले के संपति की संख्या 3 या 4 होती है।

28 से 44 वर्ष के उम्र में ये कालखंड जीवन की कई महत्वपूर्ण घटनाओं का रहेगा।

45 से 61 वर्ष की आयु में इस राशि के जातकों के साथ भली बुरी घटनाएं घटेंगी, इनका कार्य सिद्ध होगा, तथा इनकी आमदनी अच्छी होने के बावजूद भी यह किसी अन्य कारणों से दुखी रहेंगी।

इनका 62 से 71 वर्ष का समय शस्त्र क्रिया एवं शारीरिक कष्टों का होगा।

74 साल की उम्र में एक गंडातर आएगा। जो कि बहुत ही ज्यादा खतरनाक साबित होने वाला है अत: यह टल जाए तो इस राशि के जातकों का जीवनक्रम 90 वर्ष तक चलेगा।

वृश्चिक राशि के व्यक्तियों के लिए विशेष उपासना

भ्रम ज्वर, प्रलाप एवं अन्य व्याधियों से ग्रसित होने के कारण वृश्चिक राशि के व्यक्ति हमेशा अस्वास्थ एवं व्यग्र रहतें है। तथा इनकों अपने जीवन निर्वाह के लिए काफी संघर्ष करनें पड़तें है। अत: श्री गणेश जी एवं देवी उपासना के साथ नीचे दिये गये निम्न मंत्र का जाप प्रतिदिन 108 बार करे।

"ॐ नारायण सुरसिंहासनाय नम:।"

Kundali expert
How to Join
"ASTROLOGY COURSE "

Get Information
Broucher
WEEKEND CLASSES
Only Through Mobile APP
Download KUNDALI EXPERT Mobile APP
GET IT ON Google Play
Available on the App Store

कैसा होगा 2021 का भारत

जैसा कि आपको पता होगा की 2020 में भारत हमनें देखा उसमें पूरें भारत के लोगों अत्यधिक परेशानियों का सामना करना पड़ा तथा हमारे भारत में बहुत सारे लोगों की जान भी चली गयी । महीने के शुरूआत में ही एक बहुत बड़ी महामारी ने पूरे भारत को तहस–नहस करके रख दिया है, ऐसे में अत: लोगों के मन में एक बहुत बड़ा सवाल यह उठकर आ रहा है की 2021 में आने वाला हमारा भारत कैसा होने वाला है, इस पुस्तक के द्वारा हमारे ज्योतिषाचार्य के० एम० सिन्हा जी ने आने वाले भारत के बारें में कुछ बातें बताई हे। आइए हम इसको विस्तापूर्वक जानतें है।

वर्ष 2021 हमारे भारत देश के लिए तथा पूरे विश्व के लिए कैसा बीतेगा? ज्योतिषाचार्य के० एम० सिन्हा जी का कहना है। कि कोरोना से लेकर, शेयर मार्केट, भूकंप की घटनायें, सोने–चाँदी के दाम, रेल दुर्घटना, क्रुड ऑयल के दाम, व्यापारिक समझौते, भारत के पड़ोसी देश से कैसे सम्बन्ध बनेंगे, आने वाले नये साल यानि कि 2021 में राजनीतिक उथल–पुथल कैसी होगी रियल स्टेट, ट्रांसपोर्टेशन इन सभी के बारे में बताया है। हमारे ज्योतिषाचार्य ने मेदिनी ज्योषिय का विस्तार से अध्ययन करके इन सभी चीजों के बारे में बताया है। मेदिनी ज्योतिष की बात करे तो यह जनरल ज्योतिषशास्त्र से थोड़ा अलग होता है। लेकिन थोड़ी बहुत चीजे वैसी ही होती है यहाँ सूर्य को राजा माना जाता है और चन्द्रमा प्रजा के तरीके से काम करती है। और बात करतें है जब हम कृषि क्षेत्र की तो इस क्षेत्र को देखने के लिए शनिदेव को माना जाता है।

तो एक–एक करके हम सारी बातों को समझतें है।

कोरोना महामारी

बात करे कोरोना की जिसने पूरे भारत को उलट–पुलट करके रख दिया है। जिसके नाम से भारत को क्या पूरे विश्व में ही इसकी लहर ने तहस–नहस कर रखा है। जैसा कि बताया गया था, केतु का जैसे ही राशि परिवर्तन होगा तो कोरोना की वैक्सीन आ जायेगी, तो वैक्सीन की मान्यता मिलने के साथ–साथ ही आपको पता होगा की कई देशों में भी इस वैक्सीन की टिका लगने की प्रक्रिया शुरू भी हो चुकी है। और यह प्रक्रिया कुछ दिनों में या कुछ महीनों तक जारी रहने की संभावना रहेगी। लेकिन आने वाला साल हमारे लिए यूँ कहिए तो थोड़ा बहुत अच्छा नहीं रहने वाला है, इस आने वाले साल कि मई या जून के महीने तक इसी से मिलता जुलता एक और महामारी लोगों को परेशान कर सकता है और कोरोना के जो प्रभावी मामले है वह 2021 में कुछ ज्यादा देखने को मिल सकते है। और वर्ष का शुरूआत होगा 1 जनवरी की जो तारीख है यह निश्चित रूप से कई प्रकार के राजयोग को लेकर आ रहा है, एक तरफ यह शश योग जो शनि के द्वारा बना हुआ है। तो दूसरा गजकेशरी योग जिसके कारण चन्द्रमा और वृहस्पति एक दूसरे से केन्द्र रहेगें, रूचक नामक पंच महापुरूष योग ऐसे बहुत सारे योगों को नया वर्ष लेकर आने वाला है। तथा वृहस्पति नीचभंग राजयोग भी यहां बना रहा है। तो इतने सारे राजयोगों के साथ साल की अगर शुरूआत होती है तो यह शुरूआत निश्चित रूप से आरामदायाक देने वाली होगी। यह साल मान कर चलिए कि फरवरी 10 तारिख तक आपको किसी भी परेशानी का सामना नही करना पड़ेगा। और 10 फरवरी 2021 से 26 मई 2021 तक का जो समय है जो रेड अॅलर्ट यानि खतारा वाला रहने वाला हो सकता है।

शेयर मार्केट

ज्योतिषाचार्य के० एम० सिन्हा के अनुसार बारे करे अगर शेयर मार्केट की तो शेयर माकेट इस वर्ष पुनः रिकार्ड लाइफटाइम के लिए ऊंचाई पर जाने वाला है और सार्वजनिक रूप से 15,000 निफ्टी लोगों को जरूर पहुँचेगा। इस साल निफ्टी 15,000 को छुकर रहेगा। और सेंसेक्स 50 हजारी लाइफटाइम हाई पर रहेगा। नीचे के तरफ अगर देखा जाए तो निफ्टी 10,000 के एक लोवर रेंज को भी एक बार टेस्ट करेगा और इसके साथ–साथ सेंसेक्स जो होगा 35,000 तक होगा जिसमें लोगो को इनवेस्टमेंट करना चाहिए, जब इसके नीचे गिरने की प्रक्रिया चले तो बेझीझक आपको इवेस्ट करना चाहिए।

भूकम्प

बात करते है भूकंप की

ज्योतिषाचार्य के० एम० सिन्हा के अनुसार आने वाले इस नये साल में भूकम्प की तीन घटनाएं देखने को मिल सकती है। हमारे विद्वान ज्योतिषाचार्य ने अपनी गणनाओं के अनुसार बताया है। कि फरवरी माह में बहुत तीव्र भूकम्प आने की संभावना हो सकती है। जो कि भारत के पश्चिमी छोर पर आयेंगी या फिर भारत से पश्चिम में कोई राज्य या शहर हो सकते है। बात करते है आने वाले इस नये साल मे दूसरे भूकम्प की मई महीने के आस–पास आने वाला है यह भूकम्प अत्यन्त तीव्र रहने वाला है। लगभग यह 6 के रेंज में या 6 से अधिक भूकम्प आ सकता है तथा इस भूकम्प के आने से अमेरिका जैसे देशों को अत्यधिक नुकसान का सामना करना पड़ सकता है। और इस माह इन देशों में चक्रवाती तुफान जैसे अन्य तुफानों का सामना भी करना पड़ सकता है इन दोनो ही कारणों से अमेरिका जैसे देशों को बहुत ही ज्यादा हानि हो सकती है। जिससे की कई लोगों की जान भी जा सकती है। "बात करते है तीसरे भूकम्प की तो सितम्बर के माह में तीव्र भूकम्प आने की सम्भावना बन रही है और यह भूकम्प भारत के उत्तर–पूरब के क्षत्र में आने की संभावना है।

रेल दुर्घटना

बात करे रेल दुर्घटना की तो इस आने वाले नये वर्ष में 1 रेल दुर्घटना देखने की संभावना हो सकती है और यह दुर्घटना जम्मू–कश्मीर वाले रूट से लेकर कोलकात्ता वाले रूट हो सकते है। आने वाले इस नये साल में यह रूट ज्यादा प्रभावित हो सकता है। तथा यह दुर्घटना आने वाले मई के महीने में देखने को मिल सकती है ऐसे में इस महीने ज्यादा सतर्क होकर रहना लोगों के लिए अच्छा साबित हो सकता है हम यु कह सकते है की आने वाले साल में मई का महीना ज्यादा खतरनाक साबित हो सकता है। पूरे देश के लिए भारत के लिए भी लेकिन बहुत घबरानें की जरूरत नहीं है। क्योंकि कुछ चीजों के लिए यह साल अच्छा भी रहने वाला है।

सोना–चाँदी

ज्योतिषाचार्य के० एम० सिन्हा के अनुसार बात करें अगर सोना और चाँदी की तो सोना कि जो कीमत लाइफटाइम बनी हुई है इस साल यह कीमत पीछले रिकार्ड के अनुसार आगे नहीं जायेगी। अतः सोने की कीमत इस साल ऊपर की ओर बढ़ते हुए 60,000 तथा नीचे की ओर 40,000 तक ही सिमटकर रह जायेगा। सोने के दाम में इस वर्ष सबसे ज्यादा जो बढ़ोत्तरी देखने को मिलेगी वह अप्रैल के महीने में होगी। अप्रैल के महीने में सोने के दामों में अचानक बढ़त देखने को मिल सकती है। और 6 अप्रैल के आस–पास जब गुरू वक्री होंगे तो उसमें भी समस्या देखने को मिल सकती है अर्थात सोने के दाम बढ़ सकतें है।

क्रूड ऑयल

ज्योतिषाचार्य के० एम० सिन्हा के अनुसार बात करे इस नये साल में क्रूड ऑयल की स्थिति के बारे में तो इस साल सबसे ज्यादा अस्थिरता ऑयल और मार्केटिंग के कम्पनियों में देखने को मिल सकती है। क्रूड ऑयल की केवल बात करें तो यह नीचे की ओर 20 डॉलर तक जायेगा तथा ऊपर की ओर यह 60 डॉलर तक जायेगा। अगर क्रूड ऑयल 60 डॉलर को तोडकर आगे जायेगा तो यह निश्चित ही 100 डॉलर को पार कर जायेगा और तीव्र गति से यह फिर बढ़ता ही जायेगा। भारत की अर्थिक स्थिति की बात करें तो इस वर्ष भारत दूर संचार वाली चीजों से सम्बन्धित, टेक्नोलॉजी से सम्बन्धित बहुत सारे कार्य होते देखने को मिलेगे, यूँ कहें तो भार दूर संचार के क्षेत्र बहुत ही तरक्की और ऊँचाईयों पर रहेगा, उच्च का राहु इनके लग्न में विराजमान रहेगा। इस वर्ष उच्च राहु होने के कारण यह पूरे भारत देश की प्रतिष्ठा को बढ़ायेगा।

ज्योतिषाचार्य के० एम० सिन्हा के अनुसार बात करे अगर हम देश के व्यापारिक समझौते की तो भारत के व्यापारिक समझौते भी इस वर्ष काफी बढ़ेगे, भारत के व्यापारिक समझौते इस वर्ष पश्चिम के क्षेत्र में काफी बढ़ने की संभावना है, या उत्तर पूर्व के क्षेत्र में भी भारत के व्यापारिक समझौते बढ़ने के योग इस वर्ष बन रहे है। लेकिन चीन और पाकिस्तान के साथ भारत की विवाद की स्थिति बननें की संभावना काफी हद तक सही हो सकती है और कुछ भारत के विवाद की स्थिति बांग्लादेश के साथ भी बन सकती है। इसके अलावा युद्ध की जो स्थिति है जो कि मेदिनी ज्योतिषी की कुण्डली से सप्तम स्थान से युद्ध की स्थिति देखी जाती है। और यह स्थिति जो कि मंगल से भी देखी जाती है जिससे की इस वर्ष युद्ध की स्थिति के योग बन सकतें है। यह स्थिति देखा जाए तो मार्च से लेकर 26 मई 2021 तक के महीने में युद्ध की स्थिति बन सकती है। और बाद में सितंबर, अक्टूबर और नवम्बर का जो महीना रहेगा। यह भी अच्छा न होने की संभावना यहाँ बन रही है।

राजनीतिक

ज्योतिषीचार्य के० एम० सिन्हा के अनुसार इस वर्ष राजनीतिक ऊठा–पटक बहुत ही ज्यादा देखने को मिल सकती है। और आपको यह बात पता होगी कि इस वर्ष पश्चिम बंगाल में भी चुनाव होने वाले है, और अन्य जगहों पर भी चुनाव होने वाले है तो यहाँ पर पूरी तरह से सरकार बदलती हुई आपको दिखाई देगी तथा मेदिनी ज्योतिषी के अनुसार कहें तो पूरी तरह से सत्ता यहाँ परिवर्तित होती हुई दिखाई दे रही है। जिसके कारण से कई जगह सरकार बदलती हुई भी दिखाई देगी।

ज्योतिषाचार्य के० एम० सिन्हा के अनुसार बात करे रियल स्टेट की तो इनके लिए यह साल बुरा रहने वाला है अगर आप यह सोच रहे है कि कंस्ट्रक्शन के मामले में कमा ले पैसे तो जिनकी कुण्डलीयाँ अच्छी है वह लोग तो अच्छा कमा सकते है इस वर्ष लेकिन बाकी लोगों की बात करें तो यह वर्ष ज्यादातर रियल स्टेट के मामले में बुरा ही रहने वाला है।

मेडिकल

ज्योतिषाचार्य के० एम० सिन्हा के अनुसार मेडिकल के क्षेत्र में बहुत ही जबरदस्त क्रांति आने वाली है और दवाईयों से सम्बन्धित जितने भी शेयर होगें वह इस वर्ष रिकार्ड से ज्यादा हाई पर जायेगें अथात् फार्मा के जितने भी शेयर होंगे वह हाई पर जायेगे।

कृषि

ज्योतिषाचार्य के० एम० सिन्हा के अनुसार बात करे अगर कृषि से संबन्धित क्षेत्र की तो कृषि के लिए मेदिनी ज्योतिषी के अनुसार देखे तो इसके लिए शनि ग्रह जिम्मेदार होते है और हमारी कुण्डली का जो चौथा ग्रह होता है। वह भी कुछ मायनों में ज्यादा जिम्मेदार होता है। तो इनका जो प्रभाव रहेगा यह मध्य भाग में वर्षा होगी वह निर्धारित समय से विलम्ब होगी और इस कारण से फसलों को नुकसान भी ज्यादा पहुँचेगा और इस साल फल में भी बहुत ज्यादा स्थिरता और अस्थिरता देखने को मिल सकती है इस वर्ष कृषि के क्षेत्र में जून–जूलाई के बाद ही चीजे यहाँ सही होती दिखाई देगी।

फेमस पर्सनेलिटी

ज्योतिषाचार्य **के० एम० सिन्हा** के अनुसार बात करें । फिल्म जगत के या फिर फेमस पर्सन की जिसको मेदिनी ज्योतिष के प्रथम भाव से देखा जाता है। तो इसमें अभी भी दिलीप कुमार पर यह वर्ष भारी पड़ सकता है, मुलायम सिंह यादव पर यह वर्ष भारी पड़ सकता है। , लता मंगेशकर पर भी यह वर्ष भारी पड़ सकता है तथा, सबसे बड़ा परिवर्तन इस वर्ष यहाँ पर शरद पवार के लिए होने वाला है, शरद पवार शुरूआत में भले ही ये U.P.A. के अध्यक्ष बन जाये लेकिन इनके जीवन में अकस्मात कुछ नकारात्मक चीज होने वाला है जिससे इनके मानसिक पीड़ा अचानक से हो सकती है। अत: देखा जाए तो शरद पवार की कुण्डली इस वर्ष बहुत ही खराब दिखाई दे रही है। बात अगर मानसून की करे तो सामान्य रू‍प से इस बार वर्षा कम होगी, चक्रवती तुफान भी आ सकतें है। और यह फरवरी का महीना होगी जिसमें तुफान आने की सम्भावना होगी तथा इसके रिकार्ड हाई पर रहेगें तथा अत्यधिक तीव्र होंगे। अत: अब आप समझ ही गयें होंगे की हमारा आने वाला नया साल का भारत कैसा होगा इन सारी चीजों को देखते हुए अपने कुण्डली में आये हुए बुरे दोषों को दूर करें तथा किसी योग्य ज्योतिषी से अपनी कुण्डली का विश्लेषण करवाकर उसके उपाय भी करें ज्योतिषाचार्य के० एम० सिन्हा के अनुसार आप सभी का आने वाला नया साल मंगलमय हो यही कामना करते है ।

ॐ नम: शिवाय।

जनवरी महीने में त्यौहार/व्रत

रवि SUN	31 गणेश चतुर्थी व्रत	पौष कृष्ण 4/5 3	पौष कृष्ण 12 10 प्रदोष व्रत	पौष शुक्ल 4 17	पौष शुक्ल 11 24 एकादशी व्रत
सोम MON	**मूल–विचार** ता. 1 श्लेषा रात 8:19 से ता. 3 मघा रात 7:42 तक । ता. 10 ज्येष्ठा दिन 9:41 से ता. 12 मूल प्रातः 7:8 तक । ता. 19 रेवती दिन 10:43 से ता. 21 अश्विनी सायं 3:31 तक	पौष कृष्ण 6 4	पौष कृष्ण 13 11	पौष शुक्ल 5 18	पौष शुक्ल 12 25
मंगल TUE		पौष कृष्ण 7 5	पौष कृष्ण 14 12 अमावास्या	पौष शुक्ल 6 19	पौष शुक्ल 13 26 गणतन्त्र दिवस
बुध WED	**पंचक–विचार** ता. समय 15 रात्रि 6:4 से ता 20 को दिन 12:59 तक ।	पौष कृष्ण 8 6	पौष कृष्ण अमावास्या 13 अमावास्या	पौष शुक्ल 7 20	पौष शुक्ल 14 27
गुरू THU	**विवाह–मुहुर्त** खरमास एवं गुरू अस्त होने से मुहूर्त का अभाव है	पौष कृष्ण 9 7	पौष शुक्ल 1 14 मकर संक्रान्ति खिचड़ी पर्व चन्द्रदर्शन	पौष शुक्ल 8 21	पौष शुक्ल पुर्णिमा 28
शुक्र FRI	पौष कृष्ण 2 1	मार्गशीर्ष कृष्ण 10 8	पौष शुक्ल 2 15	पौष शुक्ल 9 22	माघ कृष्ण 1 29
शनि SAT	पौष कृष्ण 3 2 गणेश चतुर्थी व्रत	पौष कृष्ण 11 9 एकादशी व्रत	पौष शुक्ल 3 16	पौष शुक्ल 10 23 सुभाष जयंती	माघ कृष्ण 2 30

Kundali expert
For Better Future

KM ASTROGURU PVT. LTD.

Regd Off.: B-1, 101, Block-E, Classic Residency Apartment Raj Nagar Extenion, Ghazabad

S.No.

ADMISSION OPEN

For Astrology Course

AFFIX YOUR PHOTO

Course Name : 1 Year Basic Astrology Course ☐
2 Year Advanced Astrology Course ☐

1. Name of student: (IN BLOCK LETTERS)

2. Father's Name/ Guardian's Name: (IN BLOCK LETTERS)

3. Date of Birth : ____________________ 4. Religion: ____________________

5. Mobile/Telephone: ____________________ 6. Nationality : ____________________

7- Qualification: ____________________ 8. Email :____________________

9- Gender: ☐ Male ☐ Female 10. Parental's Alerts: ☐ Email ☐ SMS

11. Postal Address: ____

____

12. Class/Course to be joined: ______________ Timings:________to:__________

13. Aadhar Card Number ☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐

14. Blood Group : ____________________

Signatue of the Applicant

Signatue of the Parents

-: FOR OFFICE USE ONLY :-

Receipt No.:

Dated :

Admin Signature ____________________

Kundali expert
For Better Future

KM SINHA

World Famous

-: ASTROLOGER :-

VISITING CENTER INDIA

Mumbai, Delhi, Kolkata, Chennai, Ahmedabad
Bhubneshwar, Chandigarh, Lucknow,
Jaipur, Gorakhpur, Ghaziabad, Bangalore, Hyderabad

VISITING CENTER ABROAD

Indonesia, Australia
Philippines, USA, UK

KUNDALI EXPERT

B1- 101, Block E, Raj Nagar Extension, Ghaziabad 201017

Contact us : 98-183-183-03

Follow us: